सीखो सबक पवारों

वल्लभ डोंगरे

प्रकाशन सहयोग

गीता डोंगरे

विभांशु डोंगरे

सतपुड़ा संस्कृति संस्थान

एच आईजी–6, सुखसागर विला,

फेज–1, भेल, भोपाल–462021

फोन–0755–2552362 मोबा. 09425392656

ई मेल–vallabhdongre6@gmail.com

प्रकाशन वर्ष–2013

पृष्ठ संख्या–200, मूल्य–111/–

रचनाक्रम

खंड–1

खंड–2

खंड–3

खंड–4

खंड–5

खंड–1

लेखकीय

सीखो सबक पवारों

इतिहास ऐतिहासिक कामों का ब्यौरा होता है। जिस समाज के लोग महान कार्य करते हैं इतिहास उन्हीं का लिखा जाता है। भाट और कवि उन्हीं का यशोगान करते हैं। इतिहास सीखने के लिए होता है। हमारे पूर्वजों की अच्छाइयों को अपनाने व उनके द्वारा की गई गलतियों से सबक सीखने के लिए होता है। अरब में मुर्दों को सुरक्षित रखे जाने का रिवाज है, जिन्हें समय–समय पर उखाड़कर भी देखा जाता है। इसीलिए इस पर एक कहावत चल निकली–गड़े मुर्दे उखाड़ना। परन्तु हमारी संस्कृति में गड़े मुर्दे उखाड़ने का प्रश्न ही नहीं उठता क्योंकि इसमें मृत्यु के बाद दाह संस्कार का प्रावधान है। यहॉ तक कि भस्म को भी किसी नदी या तालाब में प्रवाहित कर दिया जाता है, उसे पकड़कर नहीं रखा जाता, अतः हमारे द्वारा गड़े मुर्दे उखाड़ने जैसी कहावत का प्रयोग करना हमारी संस्कृति के विरूद्ध है। यह सच है कि कुछ चीजें पकड़कर नहीं रखी जाती परन्तु यह भी सच है कि कुछ चीजों को पकड़ने के लिए ही इतिहास लिखा जाता है। हमारे पूर्वजों द्वारा की गई गलतियों को न दोहराते हुए हम आगे बढ़ सकें, उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्यो को हम आगे बढ़ा सकें और उनके द्वारा डाली गई अच्छी परम्पराओं का अनुसरण करके हम स्वहित व लोकहित दोनों कर सकें इतिहास इसलिए लिखा जाता है। प्रस्तुत किताब में पवारों की उत्पत्ति से लेकर पूरे संसार में पवार व भोयर होने की बात पहली बार सामने लाई गई है। भारत में उनकी उत्पत्ति व विभिन्न राज्यों में उनकी बसाहट पर भी नजर डाली गई है। पवार यदि अभी भी एकजुट होने का संकल्प ले सकें तो अगला प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति हमारा हो सकता है। इस तरह हम एकजुट होकर पुनः राजा भोज और विक्रम के कार्यकाल को पुनर्स्थापित कर अपना वर्चस्व कायम कर सकते हैं। डूबते को तिनके का सहारा या समझदार को इशारा काफी की तर्ज पर इस पुस्तक में पवारों को अपनी कमजोरियों को दूर करने के कुछ संकेत भर किए गए हैं जिन्हें आत्मसात कर पवारजन अपनी गौरवमयी परम्परा को पुनर्जीवित करने का पुनः प्रयास कर सकते हैं। आशा है, पाठकों को सतपुड़ा संस्कृति संस्थान, भोपाल का यह प्रयास रूचिकर लगेगा।

वल्लभ डोंगरे

लोकहित सर्वोपरि

स्वहित और लोकहित दोनों कभी भी साथ–साथ नहीं साधे जा सकते। स्वहित को परे रखकर ही लोकहित किया जा सकता है। भगवान शंकर सन्यासी है, ब्रह्मचारी हैं, यह जानते हुए ही तारकासुर द्वारा उनसे यह वरदान माँगा जाता है कि उसकी मृत्यु भगवान शंकर के पुत्र के हाथों ही हो। तारकासुर के बढ़ते अत्याचार से संसार को तारने के लिए लोकहित को सर्वोपरि मानते हुए भगवान शंकर द्वारा माँ पार्वती से विवाह रचाया जाता है। लोकहित के लिए ही कार्तिकेय कृतिकाओं को सौंपा जाता है और माँ होते हुए भी पार्वती द्वारा लोकहित के लिए स्वहित की उपेक्षा की जाती है। कार्तिकेय का देवताओं का राजा न बनकर आम लोगों की असुरों से रक्षा करने के दायित्व का निर्वहन करना लोकहित को सर्वोपरि सिद्ध करता है। समुद्र मंथन से जब हलाहल विष निकलता है तो भगवान शिव द्वारा उसका पान करने व उसे कंठ में ही रोक लेने के कारण वे नील कंठ कहलाते हैं। इस तरह वे संसार को बचाने के लिए स्वहित की अपेक्षा लोकहित को प्राथमिकता देते हैं। समुद्र मंथन के समय ही जब असुरों की उपेक्षा कर देवताओं द्वारा अमृत पान कर लिया जाता है तो भगवान शंकर द्वारा ही असुरों के गुरु शुक्राचार्य को मृत संजीवनी विद्या प्रदान कर सुर–असुर दोनों में शक्ति संतुलन स्थापित किया जाता है। विनायक से गणेश बनने की प्रक्रिया भी लोकहित का ही परिचायक है। लोकहित में ही भगवान शंकर को अपने पुत्र विनायक के वध की पीड़ा से गुजरना पड़ता है। लोकहित को सर्वोपरि मानने के कारण ही गॉधीजी को अपने परिवार की उपेक्षा सहन करनी पडत़ी है। इन सबके बावजूद यह निर्विवाद सत्य है कि लोकहित करने पर ही व्यक्ति का व्यक्तित्व विराट आकार ग्रहण करता है।

तुलसीदास जी कृत रामचरित मानस में एक जगह उल्लेख आता है–परहित सरिस धरम नहीं भाई, परपीड़ा सम नहीं अधमाई। भारतीय संस्कृति में परहित, लोकहित को ही सर्वोपरि माना गया है। स्वयं की

मुक्ति से भी बड़ा है दूसरों की मुक्ति की भावना का होना। स्वयं की उन्नति से भी ज्यादा बड़ा पुरुषार्थ है दूसरों की उन्नति के प्रति प्रतिबद्ध होना। इसीलिए जब कोई हिन्दू धर्मावलम्बी किसी तीर्थ, धार्मिक यात्रा पर जाता है तो वह अपने परिजनों के साथ–साथ अपने परिचितों अपने गॉव वालों के लिए भी प्रसाद लेकर आता है ताकि उसके साथ–साथ उन्हें भी युक्ति और मुक्ति मिल सके।

देश के आजाद होने पर नेहरुजी पहली बार प्रधानमंत्री बने तो उन्होंने गॉधीजी से कहा–गॉधीजी, मैं अपना दायित्व भलीभांति निभा सकूँ इसके लिए आप मुझे कोई मंत्र दे दीजिए। गॉधीजी बोले–जीवन में यदि किसी गरीब व्यक्ति से मिले हो तो उसके बारे में सोचो या इस देश के सबसे निचले तबके के व्यक्ति को देखो और उसकी जरूरतों को पूरा करने का प्रयास करो तथा उसके विकास के लिए प्रतिबद्ध हो जाओ।

लोकहित कोई ऐसी चीज नहीं है जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति को पृथक से कोई प्रयास करना पड़े। हम जहॉ हैं जैसे हैं वहीं रहते हुए भी हम लोकहित कर सकते हैं। जटायु वृद्ध था। पर जब उसने देखा कि एक असहाय नारी का अपहरण करके बलशाली रावण उसे ले जा रहा है तो जटायु की रगों में मानों रक्त का नवसंचार हो जाता है और वह रावण पर टूट पड़ता है जिसके प्रतिफल स्वरूप भगवान के हाथों उसका अंतिम संस्कार होता है। मैं एक बार कार्यालय जा रहा था। मैंने देखा एक महिला गोबर से भरी ढुल्ली के पास खड़ी है और किसी आने–जाने वाले की राह ताक रही है ताकि उसे ढुल्ली उठाने में वह मदद कर सके। मैं गया और उसे ढुल्ली उठाने में सहयोग कर दिया। इस अनपेक्षित सहयोग से वह महिला इतनी खुश हुई कि उसका खुशी भरा चेहरा मुझे पूरे दिन खुशी देता रहा।

सुबह–सुबह का समय था। जीटी से जाने के लिए मैं टिकिट काउंटर से टिकिट निकाल रहा था। एक मुस्लिम भाई के पास चिल्लर

(एक रुपये का सिक्का) न होने से काउंटर से उसे टिकिट नहीं दिया जा रहा था। उसकी गाड़ी प्लेटफार्म पर आ चुकी थी। बड़ी कातर दृष्टि से देखते हुए वह मुझसे बोला—यदि छुट्टे हो तो मुझे दे दीजिए। मैंने अविलम्ब उसे एक सिक्का दे दिया। वह खुशी से उछल पड़ा। बदले में वह मुझे टॉफी देने लगा। मैंने कहा—टॉफी आपके काम आएगी,इसे आप ही रखिए और तत्काल टिकिट लेकर प्लेटफार्म पहुँचिए। वह मुझे दुआएं देते चला गया। उस दिन किसी अजनबी की सहायता करने की खुशी मैं पूरे दिन महसूस करता रहा।

एक बस स्टाप जहॉ से कालेज के बच्चे नियमित अपनी बस में चढ़ते थे वहॉ एक सफाईकर्मी सफाई कर रहा था। मैंने देखा वहॉ एक अंकसूची पड़ी थी जिसे वह झाड़कर आग के हवाले करने ही वाला था। मैंने झट अंकसूची उठाकर उसे आग से बचा लिया। वह हाई स्कूल की मूल अंकसूची थी। उसमें लगी सील व स्कूल के नाम के आधार पर प्राचार्य को एक जवाबी पत्र भेजकर शाला रिकार्ड से उस नाम के बच्चे का पता भेजने हेतु अनुरोध किया। जवाब मिला, जिसके आधार पर उस पते पर पुनः पत्र भेजकर सूचना दी गई कि उसकी अंकसूची सुरक्षित रखी हुई है वह आकर ले जाएं। उस पते से भी संबंधित परिवार स्थानांतरित होकर अन्यत्र चला गया था। किसी नेक दिल इंसान ने संबंधित परिवार तक मेरा पत्र पहुँचा दिया। लगभग तीन माह बाद एक बालक का घर पर फोन आता है क्या मेरी अंकसूची अभी भी सुरक्षित रखी हुई है। मेरे बेटे को यह काम सौंपा हुआ था कि फोन आने और अपना नाम तथा विषयों की सही जानकारी देने पर संबंधित को अंकसूची दे देना। मेरे बेटे द्वारा हॉ कहने पर उसने घर तक आने की जानकारी ली और वह तत्काल घर पहुँच गया। अपनी अंकसूची पाकर वह अत्यधिक खुश हुआ। उसे खुश देखकर मेरा बेटा भी खुश हुआ और वह यह जान सका कि अपने द्वारा किया गया राई सा सहयोग किसी को पहाड़ सी बड़ी खुशी दे जाता है।

लोकहित में काम करने के संस्कार मुझे अपने घर से मिले। यह

1970 के दशक की बात है जब छुआछूत का बोलबाला था। ऐसे समय में पिताजी द्वारा मृतक लोहार और ढीमर का किया गया अंतिम संस्कार उनकी मानवीयता की पराकाष्ठा था। पिताजी द्वारा गर्मी के तीन माह पूरे गॉव भर के जानवरों को अपने खेत में पानी पिलाने की व्यवस्था करना लोकहित की भावना का ही परिचायक है। उन दिनों यात्रियों के लिए गॉव में रात्रि विश्राम हेतु ठहरने रूकने के लिए कोई भवन नहीं होता था, जहॉ रात भर वे विश्राम कर सके और अपनी थकान मिटा सके। ऐसी स्थिति में हमारा घर सदैव सराय बना रहता। मॉ अपनी व्यस्तम जिंदगी में से भी समय निकालकर रात्रि विश्राम हेतु रूके यात्रियों की सेवा में तत्पर रहती। मॉ की सेवा सुश्रुषा से खुश होकर अनजान यात्री, वैद्य खरीदार, व्यापारी, जब भी कभी इस रास्ते से गुजरते तो घर पर ही रात्रि विश्राम करते। मॉ दिन भर खेत पर काम करके थकी हारी घर लौटती पर इन अनजान मेहमानों के लिए बड़े मनोयोग से भोजन बनाती और उन्हें परोसने का हमें सौभाग्य प्रदान करती। सुबह भी मॉ जल्दी उठकर गोबर पानी करती, सबको हाथ मुँह धोने के लिए गरम पानी देती, सबके लिए चाय बनाती और गरम—गरम चाय पीने को देती। खेत पर जाने के पहले अनजान मेहमानों को भोजन कराती। इस तरह यह सिलसिला कई सालों तक चलता रहा।

अपने माता—पिता से प्राप्त संस्कार और शिक्षा के सहारे ही सतपुड़ा संस्कृति संस्थान द्वारा वर्ष 1999 में प्रकाशित संपर्क से पूरे भारत भर में रह रहे समाज सदस्यों को परस्पर एक दूसरे से संपर्क करने में हुई सुविधा और प्राप्त सफलता अपेक्षा से कहीं अधिक थी। कोई व्यक्ति अजनबी शहर जाता तो साथ में सम्पर्क लेकर जाता ताकि आवश्यकता पड़ने पर समाज सदस्यों से संपर्क किया जा सके। विवाह के निमंत्रण पत्र उसमें अंकित पते के आधार पर भेजे जाने लगे। पहली बार लगा कि समाज केवल गॉवों तक ही सीमित न रहकर पूरे भारत भर में फैल चुका है। इसी कड़ी में वर्ष 2000 में प्रकाशित जीवनसाथी विवाहयोग्य सदस्यों के लिए वरदान साबित हुई। दो माह की अवधि में ही लगभग

250 जोड़े विवाह बंधन में बंध चुके थे। जीवनसाथी में जिस गॉव या शहर में निवासरत विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी प्रकाशित हुई थी उनके घर विवाह हेतु प्रस्ताव आ रहे थे। जिन विवाहयोग्य सदस्यों की जानकारी जीवनसाथी में प्रकाशित नहीं हो पाई थी वे पछता रहे थे कि काश हम भी अपने घर के सदस्यों की जानकारी प्रकाशनार्थ दे देते तो उचित होता। इस तरह पहली बार समाज सदस्यों को आभास हुआ कि पुरातनपंथी बने रहने से बेहतर है समय के साथ कदम से कदम मिलाकर चला जाए। अगली कड़ी में हॅलो पापा नामक पॉकेट फोन नं. डायरेक्ट्री का प्रकाशन कर गॉव व शहर के बीच की दूरी को कम करने का प्रयास किया गया और इसे जबर्दस्त सफलता मिली। लोग इसे अपने पॉकेट में रखने में गर्व का अनुभव करते थे। अभी तक प्रकाशित मॉ, पिता, बेटी, पत्नी, संदर्भ–संपर्क, पवार पंथ, पवारी लोकोक्ति और मुहावरें, पवारी शब्दकोश, पवारी परम्परा और प्रथाएं, सतपुड़ा की संस्कृति, शिव से शिक्षा, विवाह, अवसान का अनुष्ठान, संधान, मानस गंगोत्री, आदरांजलि, मुलताई के महापुरुष, सुखवाड़ा, बालाजीपुरम, बैतूल के बालाजी, हर हर महादेव, पवारों का इतिहास, हॅलो दादाजी, नदी और संस्कृति, धर्म और संस्कृति,धार के कर्णधार, समाज संहिता,बनन चल्या तुम लाड़ा,ताप्ती संस्कृति आदि कई पठनीय और संग्रहणीय किताबें हैं। तब से अब तक सतपुड़ा संस्कृति संस्थान द्वारा लगभग 35 समाजोपयोगी किताबें प्रकाशित कर लोकहित सर्वोपरि की भावना को ही आगे बढ़ाने और प्रबल करने का प्रयास किया गया है। यह कार्य इतना सहज और सरल भी नहीं है, परन्तु किसी न किसी को आगे आना ही होता है, किसी न किसी को शंकर की तरह विषपान करना ही पड़ता है, इसलिए किसी से अपेक्षा करने की अपेक्षा स्वयं को इस कार्य में लगाने में ही समझदारी थी और यही एकमात्र बेहतर विकल्प भी था। सतपुड़ा संस्कृति संस्थान द्वारा लोकहित में जारी अब तक की मुहिम काफी संतोषप्रद और सराहनीय रही है, जिसकी सफलता का श्रेय आप सब सुधीजनों को जाता है।

–वल्लभ डोंगरे,

पवारों की प्रशस्ति

- गोत्र लेकर चलने वालों में क्षत्रिय श्रेष्ठ है–भगवान बुद्ध
- क्षत्रियों का उद्‌देश्य उदारता और दया है–चीनी यात्री ह्वेनसांग, 630 ई
- क्षत्रिय शक्तिशाली और बहादुर होते हैं और वे परम्परागत रीति रिवाजों का पालन करते हैं।
- राजपूत देशभक्त और कुलीन होते हैं–टॉड
- राजपूत महान सैनिक होते थे–कार्ल मार्क्स
- राजपूत भारतीय रक्षा पंक्ति की रीढ़ है– पं. जवाहरलाल नेहरु
- राजपूत जोखिम उठाने वाले और साहसी होते हैं–डॉ राधाकृष्णन्
- राजपूत हिन्दू समाज के रक्षक थे–डॉ मीनाक्षी जैन
- राम और कृष्ण के बाद दिलों पर राज करने वाले दो ही राजा हुए–राजा भोज और विक्रमादित्य जिनकी लोक गाथाएं राम और कृष्ण की लोकगाथाओं की तरह घर–घर में गाई व कही जाती है–महेश श्रीवास्तव
- शूरवीरता, तेज, धैर्य, चपलता, युद्धभूमि से नहीं भागने का स्वभाव और पुत्रतुल्य प्रजा की रक्षा का भाव क्षत्रियों का स्वाभाविक कर्म है। गीता, श्लोक, 43, अध्याय 18

प्रेरणा

मुझे हार के जीवन से युद्धभूमि में मर जाना अधिक सम्मानजनक लगता है। –बोधिसत्व,महात्मा बुद्ध

युद्ध में हार उतना महत्व नहीं रखती जितना कि स्वतंत्रता के लिए किया जाने वाला संघर्ष, मनोबल और आत्मविश्वास–परमार राजा धारावर्ष, आबू

पवारों के वंश

अग्निवंश——क्षत्रियों के कुलों में से एक कुल। अग्नि वेद में उल्लिखित तीन प्रधान देवताओं (अग्नि,वायु,सूर्य) में से एक है। अग्नि को शांडिल्य का प्रपौत्र और अंगिरस का पुत्र माना जाता है। ऋग्वेद अग्नि संबंधी ऋचाओं से प्रारंभ होता है। अग्नि का निवास घर–घर और लोक–जीवन में माना जाता है। यह दक्षिण–पूर्व कोण के दिक्पाल भी माने जाते हैं। ऐसी मान्यता है कि अधिक घी पी लेने के कारण इन्हें अजीर्ण हो गया था। कृष्ण और अर्जुन ने खांडव वन में आग लगवाकर इनका रोग दूर किया जिससे प्रसन्न होकर इन्होंने कृष्ण को कौमोदकी गदा और अर्जुन को गांडीव धनुष प्रदान किया था। अग्नि के पुत्र स्वारोचिष दूसरे मनु थे। अग्नि की पत्नी का नाम स्वाहा है जिससे पावक, पवमान और शुचि तीन पुत्र हुए। अग्नि की सात जिह्वा मानी जाती हैं–कराली, धुमिनी, श्वेता, लोहिता, नील लोहिता, सुवर्णा और पद्मरागा। अग्नि पुराण– 18 पुराणों में अग्नि पुराण भी एक है। अग्नि द्वारा इसे वशिष्ठ को सुनाने के कारण वक्ता के नाम पर इसका नाम अग्नि पुराण पड़ा।

सूर्यवंश–क्षत्रियों के दो प्रधान कुलों में से एक सूर्यवंश, जिसका आरंभ इक्ष्वाकु राजा से माना जाता है। सूर्यपुत्र–शनि, यम, वरूण, अश्विनीकुमार, सुग्रीव, कर्ण। सूर्यपुत्री–ताप्ती,यमुना।

चन्द्रवंश–क्षत्रियों के कुलों में से एक कुल जो पुरूरवा से प्रारंभ हुआ था। पुरूरवा ऋग्वेद में उल्लिखित इला का पुत्र जो उर्वशी का पति था। पौराणिक ग्रंथों में चन्द्रमा को तपस्वी अत्रि और अनुसूइया की संतान बताया गया है जिसका नाम सोम है। दक्ष प्रजापति की 27 पुत्रियॉं थीं जिन्हें चन्द्रमा को ब्याही गई थीं, जिनके नाम पर 27 नक्षत्रों के नाम पड़े हैं। चन्द्रमा का इनमें से रोहिणी के प्रति विशेष अनुराग था। चन्द्रमा के इस व्यवहार से अन्य पत्नियॉं दुखी हुईं तो दक्ष ने उसे शाप दिया कि वह क्षयग्रस्त हो जाए, जिसकी वजहसे धरती की वनस्पतियॉं

भी क्षीण हो गई। भगवान विष्णु के बीच में पड़ने पर समुद्रमंथन से चन्द्रमा का उद्धार हुआऔर क्षय की अवधि पाक्षिक हो गई। एक अन्य कथा के अनुसार चन्द्रमा ने वृहस्पति की पत्नी तारा का अपहरण किया था जिससे एसे बुध नाम पुत्र उत्पन्न हुआ। यही बाद में क्षत्रियों के चन्द्रवंश का प्रवर्तक हुआ। इस वंश के राजा खुद को चन्द्रवंशी कहते थे। इसी तरह चन्द्र से जुड़ा एक नाम सोमवंशी भी है। चन्द्रवंश के प्रथम राजा का नाम भी सोम माना जाता है जिसका प्रयाग पर शासन था। ब्राहमणों में एक उपनाम होता है आत्रेय अर्थात अत्रि से संबंधित या अत्रि की संतान। चूँकि चन्द्र अत्रि ऋषि की संतान थे इसलिए आत्रेय भी चन्द्रवंशी हुए। चन्द्रवंशियों का एक उपनाम अत्रिज भी होता है जिसका अर्थ हुआ अत्रि से जन्मा यानि चन्द्र। एक अन्य गोत्र होता है चांद्रांत अर्थात चन्द्र से संबंधित। अत्रि को ब्रहमा के नेत्र से उत्पन्न बताया गया है इसीलिए उसे अत्रिनेत्रज भी कहा जाता है। चन्द्रमा का एक और नाम है सुधाकर या सुधांशु। इस नाम से भी जल तत्व की उपस्थिति का आभास होता है जो चन्द्रमा की पहचान है। सुधा का अर्थ भी अमृत या तरल होता है। इसका अर्थ जल भी है। धरती पर अमृत जल ही तो है। सोम का दूसरा नाम भी अमृत और जल ही है। सुधांशु का अर्थ हुआ जिसकी किरणें अमृत समान है। सुधा का एक अर्थ श्वेत–धवल–उज्ज्वल भी होता है। चॉंदनी ऐसी ही होती है। सुधा चूने की सफेदी को भी कहते हैं।जल शीतलता का भंडार होने के कारण सुधानिधि कहलाता है। रात्रि को प्रकाशित करने के कारण चन्द्रमा का एक नाम निशापति भी है।

ऋषिवंश–क्षत्रियों के कुलों में से एक कुल। ऋषियों द्वारा प्रारंभ कुल। 1.श्रुतर्षि–जिसने पवित्र कथा सुनी हो, 2.काण्डर्षि–जो वेद का कोई मुख्य काण्ड सिखलाता हो, 3.परमर्षि–जैसे मुनि भेल, 4.महर्षि–जैसे व्यास, 5.राजर्षि–जैसे विश्वामित्र, 6. ब्रह्मर्षि–जैसे वशिष्ठ, 7.देवर्षि–जैसे नारद।

सप्तर्षि–मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु और वशिष्ठ।

ऋष्व–अग्नि का नाम

पवारी गोत्र

बैतूल जिले के पवारों के गोत्र- पड़ीयार, पढ़ाड़िया, बारंगा, चौधरी, गिरहारिया, माटिया, ढोंडी, गाडरी, कसाई, सरोदिया, लाडकिया, बरगांड़िया, फरकाड़िया, बोगाा, रोलकिया, किरंजकार, गागरिया, रबड़िया, बोबाट, दुःखी, बारबुहारा, खपरिया, मुनी, बरखेड़िया, बागवान, देवासिया, धारफोड़िया, नाड़ीतोड़, भादिया, कड़वा, कामडी, गोरिया, रमधम, रावत, करदातिया, हजारिया, गाड़किया, गकड़िया, खौसी, खरगोशिया, पाठा, मानमोड़िया, देशमुख, हिंगवा, चोपड़िया, बोबड़ा, गोहितिया, बड़नगरिया, पिंजारा, बुहाड़िया, कालूभूत, सवाई, शेरकिया, लोखड़िया, डालू, डोंगरदिया, लबाड़, लावरी, गोनदिया, टोपरिया, टावरी, ठुस्सी, ढोबरिया, ढुंढारिया, ढोटा, उकड़लिया, उकार, डिगरसिया, ढोलिया, चिकनिया। **छिंदवाड़ा जिले के पवारों के अतिरिक्त गोत्र -** खसारे, खुसखुसे, गादड़े, टोपले, ठवरे, डंढारे, तागड़ी, कोल्ह्या, खरफसे, डोबले, उघड़े, बैंगने, भुसारी, राखड़े, रोड़ल्या, लबाड़, लाड़के, लोखण्डे, वाघमारे, हरने, दुखी, आगरे, सेंड्या, मुने, गाडरे, भोंगाड़े, बरागड़े, नागरे, दुर्वे, छेरके, शेरके, डाले।

गोत्र के गुण

गोत्र व्यक्ति विशेष के गुणों को देखकर रखे गए प्रतीत होता है। पूर्व में हम राजकुल से संबंधित होने वं बाद में राजवंश की रक्षा का भार हमारे कंधों पर होने के कारण समान गुण धर्म वाले व्यक्तियों को गोत्र विशेष से पहचाना जाने लगा। आगे चलकर यही गोत्र विवाह आदि अवसरों के समय ध्यान में रखे जाने लगे। समान गुण धर्म वाले गोत्र से विवाह संबंध जोड़ने में संबंधों में स्थायित्व व प्रगाढ़ता होने के कारण आज भी इनका पूरा ध्यान रखा जाता है। यहां कुछ गोत्रों की व्याख्या करने या उनके गुण धर्म पर प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

पाठा- जवान, हष्ट-पुष्ट, पट्ठा

डोंगरे- पहाड़ सा विशाल

कड़वा - कटु

उकार- उखाड़ फेंकने वाला

कसाई - निर्दयी

ढोले- हंसमुख, प्रिय

बुआड़े - बुरी तरह से मार गिराए

ढोबारे- लूट खसोट व माल ढोने में माहिर

खपरिया- खप-खप खोपड़ी उतारने वाले

परिहार- त्यागना, छोड़ना (शत्रु जिनसे लड़ने से डरे)

चिकाने - सुंदर, सजीला

हजारे- हजार सैनिकों का सरदार

देशमुख - देश का अगुआ (रक्षक)

चौधरी - प्रधान, मुखिया, अगुआ

धारपुरे- धार से भरे-पुरे

किरणकार- तेजस्वी

राऊत - राजकुल से उत्पन्न

मानमोड़िया- मान-मर्दन करने वाले

गिरहारे- गठीला

किंकर - सेवक

पिंजारा- रूई की तरह धुनने वाले

चोपड़ा - उत्साही, अभिलाषी

डहारे- भस्म करना, जलाना

कालभूत- दुश्मन के लिए काल

गाड़के- तोप गाड़ी वाला

लाड़किया- अत्यंत प्रिय

सेरकिया- संतुष्ट

रबड़े- परिश्रमी

घागरे- चालाक

मुन्नी- मासूम

गोंदिया- दो पक्षों में लड़ाई लगाना।

गोत्र, कुलदेवी-देवता एवं वंश

गोत्र- परिहार, कुल देवता- विष्णु, कुलदेवी- चामुंडा, वंश-अग्नि

गोत्र- चिकाने, देवासे, धारपुरे, राउत, हजारे, पठारे, गाड़के, फरकाड़े, गिरहारे, लावड़े, डालू (डहारे), सवाई, ढोले, ऊंकार, टोपले, लावरी, माटे, कुल देवता- शंकर, कुलदेवी-दुर्गा, वंश-अग्नि

गोत्र- बारंगा, किरंजकार, दुखी, खपरिया, डोंगरदिए, डिगरसे, कुल देवता- शंकरजी, कुलदेवी- चंडी, वंश-चन्द्र से अग्नि

गोत्र- अरोलकिया, गकड़िया, पाठा, चौधरी, मानमोड़िया, देशमुख, हिंगवा, गोहिते, गोंदिया, धोटा, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-चंडिका, वंश-सूर्य

गोत्र-ढोडी, कामड़ी, मुन्नी, गोड़लिया, कालभूत, उकड़लिया, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-कच्छपवाहिनी, वंश-सूर्य

गोत्र-गाकरिया (घाघरिया), रबड़िया, पिंजारा, किंकर, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-विंध्यवासिनी, वंश-सूर्य

गोत्र-गोरिया, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-विंध्यवासिनी, वंश-सूर्य

गोत्र-गाडरी, कसाई, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-महाकाली, वंश-चन्द्र

गोत्र-सरोदिया, बोबड़ा, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-महाकाली, वंश-चन्द्र

गोत्र-बरगाड़िया, बोगाना, बागवान, बुहाड़िया, बरखेड़िया, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-महालक्ष्मी, वंश-चन्द्र

गोत्र- बोबाट, खौसी, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-काली, वंश, चन्द्र

गोत्र-नाड़ीतोड़, खरगोसिया, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-काली, वंश चंद्र

गोत्र- डुढारिया, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-काली, वंश-चंद्र

गोत्र-बारबुहारा, भादिया, कड़वा, रमधम, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-काली, वंश-चंद्र

गोत्र- करदातिया, चोपड़ा, रमधम, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-काली, वंश-चन्द्र

गोत्र- करदातिया, चोपड़ा, लाड़किया, लोखड़िया, सेरकिया, बड़नगरिया, ठावरी, ठुस्सी, ढोबारिया, कुल देवता-शंकरजी, कुलदेवी-दधिमाता, वंश-ऋषि।

गोत्र : बदलता स्वरूप

एक गोत्र या समान गोत्र में विवाह संबंध नहीं होते। समाज जहां भाई-बहन समझकर इसे नकारता है वहीं विज्ञान इसे समान खून व जीन्स में दूरी रखने की हिदायत देता है। भाई-बहन के बीच शारीरिक संबंध स्थापित होने से संतान की उत्पत्ति नहीं होती, संयोगवश हो भी जाये तो वह स्वस्थ नहीं होती। अपने वंश को चलाने व समाज तथा देश के अस्तित्व को बचाये रखने के लिये अलग-अलग गोत्र में विवाह करने का प्रावधान है। परन्तु वर्तमान में गोत्र के बदलते स्वरूप से इस तरह की संभावना ज्यादा बढ़ गई है। यहाँ गोत्र के कुछ बदले नाम सुविधा के लिये दिये जा रहे हैं-

डोंगरदिया- डोंगरदिए, डोंगरदे, डोंगरकर, डोंगरदेव, डोंगरया, डोंगरे खौसे- खवसे, खौसी, खवासे, कौशिक परिहार- पड्याड़, पराड़कर, पड़िहाड़, पड़ीमार, प्रतिहार, हजारे- हजारया, हजारिया कसाई- कसलीकर, केसलीकर, केसाई काल-भूत- कालभोर, कालभूत्या ढोलिया- ढोल्या, ढोले पाठा- पाठे, पाठेकर, पथे पठाड़िया- पठाड्या, पठाड़े माटिया- माट्या, माटे गोरिया- गोरया, गोरे गिरहा-रिया- गिरहारया, गिरहारे बारंगा- बारंगे, बारंग्या, बारंगिया गाडरी- गाडरे, गाडरया सरोदिया- सरोदया, सरोदे फड़काड़िया- फड़काड़े, फरकाड़े बोबाट- भोभाट दु:खी- दुर्वे बारबुहारा- बारबुहारया, बारबुहारे खपरिया- खपरिए, खपरया देवासिया- देवास्या, देवासे भादिया- भाद्या, भादे मानमोड़िया-मानमोड्या, मानमोड़े, मानमुड़े चोप-ड़िया- चोपड्या, चोपड़े कोड़िलिया- कोड़ल्या, कोड़ले, कोरडे शेरकिया- शेरके, छेरके, शेरक्या चिकानिया- चिकान्या, चिकाने डिगरसिया- डिगरस्या, डिगरसे, डिगर्से कड़वा- कड़वे, कडू, कडूकर गोनदिया- गोंदिया, गोंदया उकार- ओंकार, ओम्कार गोहितिया- गोहिते, गोहिता, गोहाटे, गोहित्या उकड़लिया- उकड़ल्या, उकड़ते, उकर्ले ढोटा- ढोट्या, ढोटे, धोटे बुहाड़िया- बोवाड़े, बुवाड़े, बोआड़े पिंजारा-पिंजारया, पिंजारे बड़नगरिया- बड़नंगरे, बड़नंगरया बोबड़ा- बोबड्या, बोबड़े, बोबाड़े डोबारे- डोबारया, डोबाले, डोबाले, डोबले।

खंड–2

क्षत्रियों के चार वंश

क्षत्रिय सनातन सामाजिक व्यवस्था के आधार स्तंभों में से हैं। उनकी वीरता, धीरता और उदारता भारतीय संस्कृति व इतिहास के सुनहरे अध्याय रहे हैं। उन्हें धर्म का रक्षक और प्रजापालक माना जाता है। ऋग्वेद में क्षत्रियों के कर्म, गुण और स्वभाव की व्याख्या करते हुए कहा गया है कि क्षत्रिय नियमों का पालक, यज्ञ करने वाला, शत्रुओं का संहारक, युद्ध में सधैर्य और युद्ध क्रियाओं का ज्ञाता होता है। क्षत्रियों के चार वंश इस प्रकार है-

सूर्यवंश- आर्यों में वर्ण व्यवस्था होने के बाद ऋषियों ने मिलकर सूर्य नामक आर्य क्षत्रिय की स्त्री सरण्यू से उत्पन्न मनु को पहला राजा बनाया। वायु नामक ऋषि ने मनु का राज्यभिषेक किया। मनु ने ही अयोध्या नगरी बसाई और उसे अपनी राजधानी बनाई। मनु के जितने पुत्र हुए, वे सब सूर्यवंशी कहलाए। उस युग में सूर्यवंशियों के अयोध्या, विदेह और वैशाली आदि राज्य थे। मनु के लगभग 9-10 पुत्र हुए। अयोध्या का राज्य मनु के बाद उसके बड़े पुत्र इक्ष्वाकु को मिला, उसके वंशज इक्ष्वाकु कहलाए, यह देश कौशल (अयोध्या) था। राजा मनु का एक पुत्र नाभानेदिस्त था, जिसे उत्तर बिहार का राज्य मिला, यह भू-भाग आजकल तिरहुत का इलाका कहलाता है। इस वंश में एक राजा विशाल हुआ, जिसने वैशाली नगरी बसाकर उसे अपनी राजधानी बनाई। यह नगरी आगे चलकर काफी प्रसिद्ध हुई। मनु के एक पुत्र करुष के वंशज करुष कहलाए। ये बड़े लड़ाकू थे। इनका राज्य आधुनिक बघेलखंड में था, इसलिये उस युग में वह प्रदेश करुष कहलाने लगा। शर्याति नामक मनु के पुत्र का राज्य गुजरात में था। इसका पुत्र आनर्त था, जिससे वह प्रदेश आनर्त कहलाया। आनर्त के रोचवान, रेव और रैवत तीन पुत्र थे। रैवत के नाम पर वर्तमान गिरनार रैवत पर्वत कहलाया। आनर्त देश की राजधानी कुशस्थली वर्तमान द्वारिका थी। इस राज्यको पुण्य जन राक्षसों ने समाप्त कर दिया। मनु के एक पुत्र का राज्य यमुना के पश्चिमी तट पर था तथा एक पुत्र धृष्ट का राज्य पंजाब में था, जिसके वंशज धार्ष्ट क्षत्रिय कहलाए।

इस वंश की आगे चलकर अनेक शाखा उपशाखा हुई और वे सब सूर्यवंशी

कहलाए। इस वंश के महत्वपूर्ण नरेशों के नाम पर अनेक वंशों के नाम हुए, जैसे- इक्ष्वाकु, काकुत्स्थ से काकुत्स्थ वंश कहलाया। रघु के वंशज रघुवंशी कहलाए।

नागवंश- आर्यों में एक क्षत्रिय राजा शेषनाग था। उसका जो वंश चला, वह नागवंश कहलाया। प्रारंभ में इनका राज्य काश्मीर में था। वाल्मीकीय रामायण में शेषनाग और वासुकि नामक नाग राजाओं का वर्णन मिलता है। महाभारत काल में ये दिल्ली के पास खांडव वन में रहते थे, जिन्हें वहाँ अर्जुन ने परास्त किया था। इनके इतिहास का वर्णन राजतरंगिणी में भी मिलता है।

चंद्रवंश- प्रारंभिक युग में चन्द्र क्षत्रिय का पुत्र बुद्ध था, जो सोम भी कहालाता था। बुद्ध का विवाह मनु की पुत्री इला से हुआ। उनसे उत्पन्न हुए पुत्र का नाम पुरुरवा था। इसकी राजधानी प्रयाग के पास प्रतिष्ठान (पौहन गाँव) थी। पुरुरवा के वंशज चंद्रवंशी क्षत्रिय कहलाए। पुरुरवा के दो पुत्र आयु और अमावसु थे। आयु ज्येष्ठ पुत्र होने के नाते राज्य का स्वामी बना तथा अमावसु को कान्यकुब्ज का राज्य मिला। आयु के नहुष नामक पुत्र हुआ। नहुष के दो पुत्र हुए ययाति और क्षत्रबुद्ध। ययाति इस वंश में सर्वप्रथम चक्रवर्ती सम्राट बना और उसके भाई क्षत्रबुद्ध को काशी प्रदेश का राज्य मिला। उसकी छठी पीढ़ी में काश नामक राजा हुआ, जिसने काशी नगरी बसाई थी। इसने काशी को अपनी राजधानी बनाई।

सम्राट ययाति के युदु, द्रुह्य, तुर्वसु, अनु और पुरु पाँच पुत्र हुए। सम्राट ययाति ने अपने सबसे छोटे पुत्र पुरु को प्रतिष्ठानपुर का राज्य दिया, जिसके वंशज पौरव कहलाए। यदु को पश्चिमी क्षेत्र केन, बेतवा और चम्बल नदियों के काठों का राज्य मिला। तुर्वसु को प्रतिष्ठानपुर का दक्षिणी पूर्वी प्रदेश मिला, जहाँ पर तुर्वसु ने विजय हासिल कर अधिकार जमा लिया। वहाँ पहले सूर्यवंशियों का राज्य था। दुह्य को चम्बल के उत्तर और यमुना के पश्चिम का प्रदेश मिला और अनु को गंगा-यमुना के पूर्व का दोआब का उत्तर भाग, यानि अयोध्या राज्य के पश्चिम का प्रदेश मिला। ये यादव आगे चलकर बड़े प्रसिद्ध हुए। इनसे निकली हैहयवंशी शाखा काफी बलशाली हई। हैहयवंशजों ने आगे बढ़कर दक्षिण में अपना राज्य कायम कर लिया था। यादव वंश में अन्धक और वृष्णि बड़े प्रसिद्ध राजा हुए हैं।

अग्निवंश - भारत के राजकुलों में चार कुल चौहान, सोलंकी, परमार तथा प्रतिहार थे, जो अपने को अग्निवंशी मानते हैं। आधुनिक भारतीय व विदेशी विद्वान

इस धारणा को मिथ्या मानते हैं, किन्तु इनमें से दो-तीन विद्वानों को छोड़कर सभी अग्निकुल की धारणा को अप्रत्यक्ष रूप से स्वीकार भी करते हैं, इसलिये यहाँ अग्निकुल की उत्पत्ति के प्रश्न पर विचार करना आवश्यक है। इन कुलों की मान्यता है कि अग्निकुंड से इन कुलों के आदि पुरुष, मुनि वशिष्ठ द्वारा आबू पर्वत पर उत्पन्न किए गए थे। डॉ. दशरथ शर्मा लिखते हैं कि असुरों का संहार करने के लिए वशिष्ठ ने चालुक्य, चौहान, परमार और प्रतिहार चार क्षत्रिय कुल उत्पन्न किये।

पवारों की उत्पत्ति

राजस्थान में स्थित आबू पर्वत पर वशिष्ठ आश्रम के बिल्कुल पास 'अग्निकुण्ड' है जिसमें राजपूतों की उत्पत्ति हुई थी, ऐसा कहा जाता है। इस संबंध में ऐसी दन्त-कथा प्रचलित है कि जब परशुराम ने सारे क्षत्रियों को मार डाला तब सब लोगों ने ऐसा विचारा कि रक्षा करने वाले क्षत्रियों की अनुपस्थिति में कोई कैसे जीवित रहे। इसलिये आबू पूर्वत पर रहने वाले तपस्वियों ने इस पर्वत पर सब देवताओं को इकट्ठा किया और अग्नि कुण्ड में एक महान यज्ञ करके राजपूतों के चार वंशों की उत्पत्ति की। इन्द्र ने परमार, विष्णु ने चौहान, ब्रह्मा ने सोलंकी और शंकर ने परिहार वंश को पैदा किया।
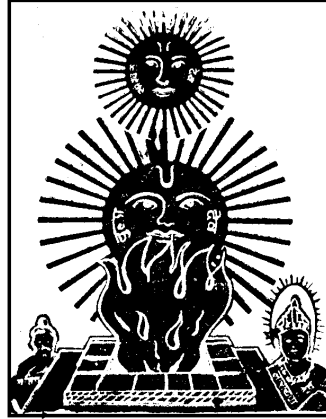
पवार राजाओं का राज्यकाल

13वीं शताब्दी से पूर्व आबू की अपनी पृथक सत्ता थी। इसकी ओर अनेक राज्य ललचाई दृष्टि से देखते थे किन्तु इस पर कोई विजय न पा सका। यह दीर्घकाल तक शाही परमारों के अधीन सुख, शान्ति और गौरव का स्थान बना रहा। परमारों का राज्य दक्षिण में नर्मदा नदी तक और पश्चिम में सिन्ध के अमरकोट तक था और किसी समय में तो उनकी राज्य-सीमा इतनी अधिक विस्तृत थी कि 'दुनिया ही परमारों की है' - ऐसी जनवाणी प्रचिलत हो गई थी। इसमें सबसे वीर सम्राट धारावर्ष (संवत् 1220 से 1276 तक) था। आबू के वंश के अठारह राज्यासन थे। धारावर्ष के पश्चात् इस वंश का शनैः-शनैः पतन होता गया और अन्त में देवड़ा

चौहानों ने इसको अधिकार-च्युत कर दिया। उन्होंने परमारों को चन्द्रावती नगरी से सन् 1302-1311 ई. में निकाल भगाया। परमारों ने आबू पर्वत पर शरण ली और यहाँ अनेक दुर्गों का निर्माण किया। आबू पर्वत पर देवड़ाओं के लिये सफलता पाना दुर्लभ था। अतः उन्होंने परमारों के सम्मुख एक प्रस्ताव रखा कि वे अपनी 12 पुत्रियों को ले जाकर चौहान कुल में ब्याह दें और इस प्रकार मैत्री संबंध स्थापित कर लें। प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया और लगभग सभी परमार 12 लड़कियों को पहुंचाने के लिये पहाड़ के नीचे गये। फिर क्या था, देवड़े उन पर टूट पड़े, अधिकांश परमारों को मौत के घाट उतार दिया और जीवित बचे परमारों के साथ आबू पहुंच कर पर्वत पर अपना अधिकार जमाया।

कृष्णराज उर्फ उपेन्द्र - (सन् 800 से 825 तक) मालवा राज्य की नींव 9वीं शताब्दि के प्रारंभ में आबू पर्वत के निकट कृष्णराज ने डाली थी तथा वे इस परमार वंशज थे। ये बहुत बड़े योद्धा थे। अतएवं इन्हें उपेन्द्र भी कहते थे। इनकी धर्मपत्नी का नाम लक्ष्मीदेवी था। इनसे दो पुत्र थे, अजीतराज तथा शिवराज। अजीतराज बड़े थे। शिवराज को बैरीसिंह की उपाधि थी क्योंकि वे शौर्य में अद्वितीय थे।

बैरीसिंह उर्फ शिवराज - ये कृष्णराज के पुत्र थे तथा बड़े योद्धा होने से बैरीसिंह कहाये। धारा नगरी का पुनरुत्थान तथा जीर्णोद्धार करने का इन्हीं को श्रेय है।

वाक्पति प्रथम - (सन् 875 से 914 तक) इन्हें वाक् पति की उपाधि इस कारण से थी कि ये वक्तृत्व कला में अद्वितीय थे। इन्हें अजयराज कहा जाता था क्योंकि इन्हें किसी भी युद्ध में हार नहीं मिली।

वैरीसिंह द्वितीय - इनके राज्यकाल का समय अनिश्चित है। भाट वर्णन करते हैं कि ये गया गये थे तथा इनकी मृत्यु उज्जैन में हुई थी तथा उस समय ये 71 वर्ष के थे। इन्हें वजरत भी कहा जाता था।

सीयाक द्वितीय - इनका राज्यकाल अनिश्चित है परंतु इनके राज्यकाल की तिथि सन् 950 से 972 तक की मानी गई है। यह परमारों का छटवाँ शासक था तथा ये हर्ष के नाम से अधिक प्रसिद्ध थे। इनकी धर्मपत्नी का नाम रत्नावली था।

इन्होंने दूसरे देश से आये हुए हूणों को जो मुसलमान थे पराजित किया था। इन्होंने रूद्रपति तथा राष्ट्रकुटों को भी युद्ध में पराजित किया था तथा यथार्थ यश प्राप्त किया था।

मुंजदेव या वाक्पति द्वितीय (सन् 974 से 997 तक) - मुंज का उल्लेख वाक्पति, उत्पलराज, अमोघवर्ष, पृथ्वीवल्लभ आदि विभिन्न नामों से किया गया है। ये कवियों को प्रोत्साहन देते थे तथा वे स्वयं उच्च कोटि के विद्वान व कवियों के आश्रयदाता थे। मुंज ने बहुत से ताल बनवाये जिनमें से आज भी मांडू व धार के समीप मुंज तालाब प्रसिद्ध है। उन्होंने मंदिर भी बनवाये थे। उज्जैन, मान्धाता, कुब्जा, संगम, धरमपुरी तथा महेश्वर में उन्होंने घाट बनवाये।

सिंधुलराज, कुमारनारायण या नवशशांक (सन् 997 से 1010 तक)

ये मुंज के भाई थे। चूंकि मुंज बड़े ही महत्वाकांक्षी थे इसलिये उन्होंने अपने पुत्र अरण्यराज को आबू में राज्य करने भेज दिया था तथा दूसरे पुत्र चंदन को जालौर में राज्य करने भेज दिया था। इसलिये डॉ. मजुमदार ने परमारों की वंशावली में सिंधुलराज को आठवां शासक बतलाया है।

भोज प्रथम (सन 1010 से 1055)

भोज का जन्म उत्तराषाड़ नक्षत्र के दूसरे चरण में हुआ था। कुछ लेखकों का अनुमान है कि भोज का जन्म उस समय हुआ था जब उनके पिता सिंधुलराज को मुंज ने बंदी कर लिया था।

जब भोज सन् 1010 के लगभग सिंहासनारूढ़ हुए तब मालवा राज्य के पूर्व में चेदि के हैहय वंशियों का उत्तर में चित्तौड़ के गुहिलितों का, पश्चिम में अनहिलवाड़ तथा दक्षिण में कल्याण के चालुक्यों का राज्य था। इनमें से मेवाड़ के गुहिलोत राजाओं को छोड़कर अन्य नरेशों के और भोज के बीच बहुधा युद्ध होता रहता था। भोज ने अपने चाचा मुंज की मृत्यु का बदला लेने हेतु चेदिराज गांगलदेव तैलप को अनेक बार युद्ध में परास्त किया था तथा तेलंगाना से एक लोहे की लाट धारा नगरी में लाकर विजय स्तंभ के रूप में स्थापित किया था जो आज भी धार में पड़ी हुई है। उन्होंने गुजरात, चैदि, अनहिलवाड़ एवं कर्नाट के राजाओं को अपनी प्रबल शक्ति का परिचय दिया था तथा उनसे अपना प्रभुत्व स्वीकार कराया।
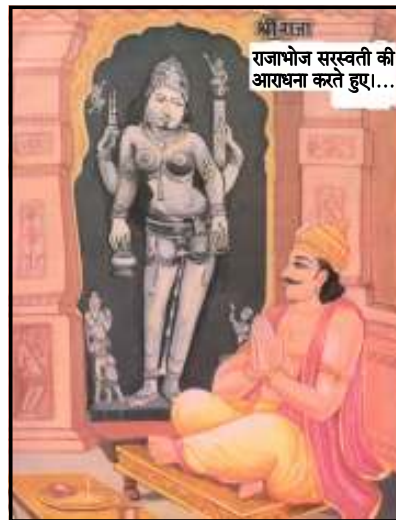
राजा भोज की ख्याति का प्रधान कारण उनकी साहित्यिक प्रतिभा है। वे अद्वितीय प्रतिभा सम्पन्न विद्वान कवि एवं ज्योतिष शास्त्र में निपुण तथा अनेक शास्त्रों के ज्ञाता थे। साथ ही साथ वे विद्वानों के संरक्षक भी थे। विद्या तथा संस्कृत के प्रसार के लिये उन्होंने धारा नगरी में सरस्वती कण्ठाभरम नामक एक विश्वविद्यालय की स्थापना की थी। इसी विद्यालय को भोजशाला नाम से संबोधित किया जाता था।

राजा भोज ने ज्योतिष, अलंकार, योगशास्त्र, राजनीति, धर्मशास्त्र, शिल्पकला, नाटक, कार्य, व्याकरण, वैद्यक, शैवमत आदि विषयों पर अनेक ग्रंथ लिखे थे।

जयसिंह (1055 से 1059 तक) - यह भोज का पुत्र था। जब भोज की मृत्य हुई तब धार व मालवा के आसापस युद्ध के बादल उमड़ पड़े थे तथा भोज अपने मृत्यु के पहिले गुजरात के दुर्लभराज की राजधानी अनहिलपाता पर चढ़ाई कर दी थी।

उदयादित्य (सन् 1080 से 1086) - यह भोज का छोटा भाई था तथा इन्होंने उदयपुर शहर बसाया था। वहाँ उन्होंने एक शिवालय सन् 1056 में बनवाया था। इसका प्रमाण उदयपुर में स्थित प्रशस्ति से प्राप्त होता है। इनका राज्यकाल शिलालेखों से सन् 1080 से 1086 तक प्रतीत होता है। जब ये सिंहासनारूढ़ हुए तब मालवा दूसरों के प्रभुत्व में था तथा उदयादित्य ने शाकंबरी के चाहुमानों की सहायता से शत्रुओं को मालवा से मार भगाया।

जगदेव परमार (सन् 1116 से 1168 तक) - राजा जगदेव ने सन् 1116 से 1168 तक 52 वर्ष पर्यन्त मालवा प्रान्त में राज्य किया तथा उनकी

मृत्यु के पश्चात् उनका बड़ा पुत्र जगधौल सिंहासनारूढ़ हुआ। जगदेव, परमार वंशीय राजाओं में बहुत प्रसिद्ध हुए तथा उनका भी नाम मुंजदेव व भोज के समान आदर से लिया जाता है।

जगदेव अपनी वीरता की वजह मालवा के सिंहासनारूढ़ हो गये थे परन्तु कुछ वर्ष राज्य करने के उपरान्त जगदेव ने अपनी राजगद्दी नरवर्मण के लिये छोड़ दी थी।

नरवर्मन (1104 से 1133 तक) - नरवर्मन जिसने निरवान नारायण की उपाधि ग्रहण की थी। वे मालवा में सन् 1104 के लगभग सिंहासन पर आरूढ हुए। उनका राज्य उत्तर में बूंदी स्टेट तक तथा दक्षिण में चांदा (मध्यप्रदेश) जिले तक सीमित था।

यशोवर्मन (सन् 1133 से 1142 तक)- यशोवर्मन जब राज्यासन हुए तब मालवा राज्य चालुक्यों के आक्रमणों से त्रस्त था तथा कमजोर हो चुका था। धार के नजदीक ही के विजयपाल नामक व्यक्ति ने देवास में एक स्टेट का निर्माण कर लिया था। चंदेल मदनवर्मन ने भिलसा प्रांत में आधिपत्य स्थापित कर लिया था। इनके राज्य काल में चालुक्य जयसिंह ने चाहमान आसोराज की सहायता से मालवा पर आक्रमण कर संपूर्ण मालवा पर अपना प्रभुत्व कर लिया तथा जयसिंह ने अवंतिनाथ की पदवी धारण कर ली। मालवा का राज्य जयसिंह के आधिपत्य में सन् 1138 तक रहा।

जयवर्मन (सन् 1142 से 1160 तक) - जयवर्मन अधिक समय तक मालवा में राज्य नहीं कर पाये। कल्याण के चालुक्य ऊगदेकमाल तथा होशयाल नरसिंह प्रथम ने मालवा पर सैनिक आक्रमण किये थे तथा उसे नष्ट कर डाला था।

विंध्यवर्मन (सन् 1160 से 1193 तक) - इन्होंने बारहवीं शताब्दि के सप्तम चरण में अपने पिता जयवर्मन द्वारा खोये हुए मालवा राज्य पर चालुक्य मुंजराज को युद्ध में परास्त कर अपना प्रभुत्व जमाया।

सुभातवर्मन (1193 से 1210 तक)- यह विंध्यवर्मन के पुत्र एवं उत्तराधिकारी थे। इन्होंने गुजरात के राजा अजयपाल के विरुद्ध सैनिक शक्ति का प्रयोग किया था जिसकी वजह अजयपाल के मृत्यु के उपरान्त गुजरात का राज्य

क्षीण हो गया था। उन्होंने चालुक्य के अधिनस्थ लाट के सिंग को अपनी मैत्री तबदील करने के लिये बाध्य किया था।

अर्जुन वर्मन (सन् 1210 से 1216 तक) - ये सुभातवर्मन के पुत्र तथा उत्तराधिकारी थे। इन्होंने जयसिंह के साथ यशस्वी रूप से लड़ाई की थी तथा कहा जाता है कि इसी जयसिंह ने गुजरात के भीम द्वितीय को कुछ समय के लिये सिंहासन से वंचित कर दिया था।

देवपाल देव (सन् 1216 से 1240 तक) - ये महाकुमार हरिशचन्द्र के पुत्र थे। इनका राज्य भड़ौच जिला मुंबई से मैसा तक सीमित था तथा उनके राज्य में निमाड़ और होशंगाबाद के जिले भी शामिल थे।

जयुतगी देव (सन् 1240 से 1256 तक) - इनके राज्यकाल में मालवा राज्य को बहुत सी चढ़ाई का सामना करना पड़ा था।

जयवर्मन द्वितीय (1256 से 1261 तक)- ये जयतुगी देव के छोटे भाई थे तथा जयतुगी देव के उपरान्त सिंहासनारूढ़ हुए।

जयसिंह तृतीय (सन् 1261 से 1280 तक)- इनके राज्यकाल में रणथंबोर के चाहमान जयतसिंह ने मालवा पर चढ़ाई की थी। जयसिंह को लाचारवश मंडप (मांडु) जिले में आश्रय लेना पड़ा था।

अर्जुनवर्मन द्वितीय (सन् 1270 से 1280 तक)- ये जयसिंह के पुत्र तथा उत्तराधिकारी थे। इनके मंत्री एवं इनके बीच अनबन हो गयी थी। कुछ समय तक भीषण युद्ध के उपरान्त न दोनों मालवा राज्य के बहुत से हिस्से पर अपना कब्जा कर लिया था।

भोजदेव द्वितीय (सन् 1280 से 1210 तक) - इनके राज्यकाल में मालवा पर पुनः चाहमान हमीर तथा सुल्तान अलाउददीन खिलजी ने चढ़ाई की। भोज द्वितीय के उपरान्त पता चलता है कि सन् 1305 में जब अलाउद्दीन खिलजी ने मालवा प्रांत पर चढ़ाई की तब महलक देव यहाँ के राजा थे। महलक देव का सेनापति कोकादेव युद्ध में मारा गया तथा महलक देव ने मांडू के किले में आश्रय लिया। वहाँ अलाउद्दीन के सेनापति ऐनउलमुल्क ने उसे मार डाला तथा मालवा पर मुसलमानों का पुर्णरूप से अधिकार हो गया।

पवारों का प्रदेशान्तर

सन् 1310 में अलाउद्दीन खिलजी के मुसलमान सरदारों ने मालवा पर विजय प्राप्त कर ली थी तथा वहाँ के परमार वंशीय राजा को इस्लाम धर्म ग्रहण करने पर बाध्य किया था। यह सत्य है कि लगभग 1310 ईस्वी तक परमार राजाओं का राज्य धारा नगरी में था तथा मुसलमानों के आक्रमणों का सामना न कर सकने के कारण वे वहां से दूसरे प्रदेशों में चले गये।

पहला प्रदेशान्तर - सन् 1094 से 1133 के बीच हुआ। इस समय मालवा के नरवर्मन देव का छोटा भाई लक्ष्मणदेव राज्य के दक्षिण प्रान्त या नगरधन स्थित उपराजधानी का राज्यपाल था।

दूसरा प्रदेशान्तर - करीबन 1190 ई. में हुआ। शहाबुद्दीन गौरी ने गुजरात के सोमनाथ मंदिर पर प्रथम आक्रमण किया इस समय दिल्ली के सम्राट पृथ्वीराज चौहान की महारानी इच्छिनीदेवी आबू के परमार सम्राट जैत्य की पुत्री थी। दोनों सम्राटों ने संयुक्त प्रयासों से शहाबुद्दीन गौरी को सात बार पराजित किया। किन्तु बार-बार के आक्रमण से तंग आकर पवारों ने पयान कर दिया एवं पवार चारों दिशाओं में अनेक दलों में बट गये। यह समाज महाराष्ट्र शासन के एस.टी. श्रेणी में आता है तथा खुद को आबू के मूल निवासी बताते हैं, धार के नहीं।

तीसरा प्रदेशान्तर - ई.सन् 1421 से 1425 के बीच हुशंगशाह तथा गौरी ने धार और मांडू पर अपना-अपना अधिपत्य जमा लिया। वह पवार राजाओं के किले, मंदिर, भवन, ताल आदि पर आक्रमण किया करता था। साथ ही परमार राजाओं के अवशेषों को नष्ट कर देना चाहता था। उसके आक्रमण से तंग आकार धार के पवारों के एक समूह ने नर्मदा पारकर सतपुड़ा के जंगलों में आश्रय लिया।

विविधा

- 'देव' शब्द राजा का पर्यायवाची है। 500 ई.पूर्व इसका प्रयोग किया जाता था। पवार समाज में समधी-समधन द्वारा अपने जवाई व उनके भाइयों को फलाना देव कहकर संबोधित किया जाना उसी राजन्य संस्कार की परिणति है। यह 'देव' संबोधन आदर सूचक है तथा हमारी रगों में हमारे पूर्वज राजाओं की भांति राजसी खून होने की पुष्टि करता है।

- उज्जैन विक्रमादित्य के उदय की नगरी रहा है। इसे ज्योतिषी कालचक्र का केन्द्र माना जाता है। अरबी (भाषा) में उजीन (उज्जैन) को पृथ्वी के केन्द्र के रूप में प्रयुक्त किया है। भारतीय ज्योतिषी उज्जैन को पृथ्वी का केन्द्र मानते हैं।
- परमार (पवार) राजाओं के मालवा राज्य की राजधानियाँ धार, उज्जैन, मांडू, देवास तथा नगरधन, रही है। इन्होंने 1307 ई.सं. तक भारत के विशाल भूभाग पर राज्य किया। इनका तलवार एवं कलम पर समान अधिकार था। डॉ. शिवमंगल सिंह सुमन ने पवार राजाओं को भारतीय संस्कृति का सर्वाधिक संरक्षक माना है। इनमें सर्वाधिक श्रेय राजा मुंज और भोज को जाता है।
- आबू एवं मालवा के अधिपति पवार राजा अतिप्रबल, सुसंस्कृत, कला, विद्या एवं शिल्प प्रेमी इनके पोषक एवं विकासक रहे हैं। विक्रमादित्य, भृतहरि, मुंज, भोज जगदेव आदि की लोककथाएँ लोकजीवन में आज भी प्रचलित है।
- वर्धा, नागपुर, अमरावती, भंडारा, बालाघाट, सिवनी, बैतूल, छिंदवाड़ा आदि जिलों में बसने वाले पवार और भोयर भाषाविद डॉ. ग्रीयर्सन के अनुसार पवार जाति के ही दो बिखरे समुदाय है। सन् 1921-22 तक इस जाति के लोगों को सरकारी दफ्तरों में भोयर कहा जाता था। इसके बाद 1939 तक इन्हें भोयर पवार कहा जाने लगा परन्तु 1939 के खैरवानी (मुलताई) अधिवेशन के बाद केवल पवार लिखा जाने लगा।
- आबू एवं मालवा से पलायन के पीछे मुगलों के अत्याचार व धर्मपरिवर्तन मुख्य कारण रहे हैं। सतपुड़ा के जंगलों में बसने के पीछे अपने अस्तित्व की रक्षा ही मुख्य कारण रहा है। जन्मजात वीरता के गुण के कारण भी इस जाति के लोगों ने इन दुर्गम जंगलों में कृषि करके जीविकोपार्जन किया है।
- मुगल साम्राज्य के विस्तार के बाद भी पेशवाओं की सहायता से पवारजन धार और देवास के 1818 तक सत्ताधीश बने रहे। ई.सं. 1700 के अंत में गोंड महाराजा बख्त बुलंदशाह ने पवार वीरों की सहायता से गोंडवाना

के राज्य का विस्तार किया एवं पवार वीरों को भोरगढ़ एवं नगरधन के किलों में प्रश्रय दिया। इनकी वीरता से परिचित एवं कृषि विषयक निपुणता के कारण भोरगढ़ के पवारों को छिंदवाड़ा बैतूल एवं कारंजा (घाडगे) तथा नगरधन के पवारों को भंडारा, बालाघाट एवं सिवनी जिलों में जमीन आदि पुरस्कार स्वरूप दी गई।

- भोरगढ़ जिले से अन्य स्थानों (बैतूल, छिंदवाड़ा, कारंजा (घाड़गे) में जाकर बसने वाले पवार भोरगढ़ किले के कारण ही भोयर कहलाये। भोरगढ़ पवार न कहकर सुविधा की दृष्टि से भोयर शब्द अस्तित्व में आया प्रतीत होता है। भोरगढ़ के किले नागपुर के काटोल क्षेत्र एवं बैतूल के भैंसदेही क्षेत्र में स्थित है।
- 'गोंडवाना' राज्य पवारों की वीरता एवं सहायता के कारण ही पुनर्स्थापित हुआ था। बाद में यह राज्य पवारों की सहायता से काफी विस्तृत हो गया था। गोंडवाना राज्य की राजधानी देवगढ़ (छिंदवाड़ा) से नागपुर एवं नगरधन तक स्थानांतरित होना गोंडवाना राज्य के विस्तार पर प्रकाश डालने हेतु पर्याप्त है।
- खेड़ला किला (बैतूल) के समीप सूर्यमंदिर तथा विंजवासिनी (चन्द्रपुर) में सूर्य मंदिर का होना पवारों के पूर्वजों की सूर्यपूजा प्रवृत्ति को प्रकट करता है। सूर्य उपासना पवारों को अग्निवंशीय होना बताती है। आबू, धार, मांडू एवं उज्जैन में सूर्यमंदिर पाये जाते हैं। संभवतः इसी से प्रभावित होकर पलायन के बाद भी पवार जहाँ-जहाँ गए वहाँ-वहाँ सूर्यमंदिरों की स्थापना कीं।

खंड–3

माँ काली एवं विक्रमादित्य

पूर्वी उत्तर प्रदेश के तीन जिलों की सीमाओं पर स्थित राजाओं के शौर्य का गवाह उग्रसेन किले के संबंध में जन मान्यता है कि महाराज उग्रसेन नित्य प्रति किले के उत्तरी दरवाजे से सुबह निकलकर बसुही नदी में स्नान करके नदी की दूसरी छोर पर स्थित माँ भद्र-काली मंदिर पहुंचकर अपने को खौलते कड़ाहे में देवी का स्मरण कर न्यौछावर कर देते थे, भक्त की समर्पण भावना देखकर माँ भगवती प्रसन्न होकर देवी भक्त महाराज उग्रसेन को प्राणदान देती थी और उसके बाद भक्त को सोने की पोटली गरीबों में वितरण के लिये देती थी। वर्षों वर्ष उग्रसेन की यह दैनिक क्रिया चलती रही।

सम्राट विक्रमादित्य जब काशी भ्रमण पर आए तो वे उग्रसेनजी के समर्पण व देवी भक्ति से प्रभावित होकर महाराज के दरबान बनकर खुद वहाँ नौकरी करने लगे। एक दिन महाराज उग्रसेन के बिस्तर से उठने के पूर्व ही वे बसुही नदी में स्नान कर देवी मंदिर पहुंचे और अपने शरीर में तेज धारदार चाकू से चीरे लगाकर उनमें काली मिर्च व नमक भरकर खौलते कड़ाहे में कूद पड़े। देवी ने अति प्रसन्न होकर भक्त को प्राणदान देने के उपरान्त वरदान माँगने को कहा। सम्राट विक्रमादित्य ने अपनी पूर्व मंशा के अनुरूप देवी को उज्जैन चलने का आग्रह किया तत्पश्चात् माँ भगवती काली उज्जैन चली आई। तबसे उज्जैन का वैभव बढ़ता ही चला गया और उग्रसेन के साम्राज्य का पतन शुरू हो गया। उग्रसेन किले से एक कि.मी. दूर सरावा गांव आज भी अस्तित्व में है। इस किले के बिखरे अवशेष ले जाने वाला व्यक्ति देवी के कोपभाजन का शिकार होता रहा है।

पवार वंशीय राजा विक्रमादित्य द्वारा माँ भगवती काली की उपासना व उज्जैन में उनकी स्थापना करना यह स्पष्ट करता है कि पवार शिव और शक्ति दोनों के उपासक रहे हैं। उज्जैन में महाकालेश्वर व माँ भगवती काली की शक्ति पीठ का होना भी इस बात की पुष्टि करता है आबू में अबुर्दा देवी धार में माँ काली जी देवास में माँ चामुन्डा देवी आबू में अचलगढ़ महादेव भोजपुर में विशाल शिवलिंग व हबीबगंज में मां दुर्गा जी के प्राचीन मंदिर का पाया जाना भी पवारों के शिव व शक्ति भक्त होने की पुष्टि करता है।

विक्रम संवत

हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत को सृष्टि के जन्मदिन के रूप में भी मनाया जाता है. कहते हैं आज ही के दिन चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को सृष्टि का निर्माण हुआ था. प्राचीन ग्रन्थों में वर्णन मिलता है कि उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य ने 2058 वर्ष पहले सिन्धु नदी पारकर अरब क्षेत्र से आए शक आततायियों को पराजित कर आज ही के दिन विजय ध्वज की पूजा की थी. यही विजय ध्वज सिमटकर प्रतीक रूप में 'गुड़ी' बना जिसकी आज घर-घर में पूजा की जाती हैं. गुड़ी की पूजा करने के कारण इसे गुड़ी पड़वा भी कहा जाता है. गुड़ी को स्थानीय बोलचाल की बोली में असावधानी से इकट्ठा करना या लपेटना कहते है. विक्रमादित्य की विजय से विक्रम संवत और शकों को पराजीत करने के दिन की वजह से शके संवत का प्रारंभ चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा से माना गया है. इस दृष्टि से देखा जाए तो आज यह हिन्दू नववर्ष 2058 प्रारंभ हुआ है।

राजा विक्रमादित्य ने विदेशी आक्रमणकारियों को पराजित कर अपने नागरिकों को सुख, सुरक्षा व सुविधा प्रदान की थी. विजय ध्वज की अर्चना में यही सद्भाव निहित था. विजय भाव से सद्भाव पैदा हुआ था और उस सद्भाव का साम्राज्य आज भी इतिहास में दर्ज है. हमें चाहिए राजा विक्रमादित्य के उन आदर्शों का हम अपने जीवन में पालन करें. हिन्दू नववर्ष इसी भाव में भाव पैदा करने का सद्भाव जगाता है.

हिन्दू नववर्ष विक्रम संवत का महत्व युग का प्रारंभ. नवरात्र का प्रारंभ. संत झूलेलाल का जन्म दिन, महर्षि गौतम का जन्म दिन, भगवान राम का राज्याभिषेक,

डॉ. हेडगेवार का जन्म दिन, महर्षि दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना के कारण और भी बढ़ जाता है. इस दिन प्रातःकाल मिश्री, नीम की कोपलों और काली मिर्च का सेवन स्वास्थ्यप्रद माना गया है.

विक्रम और उज्जैन

भारतीय कथा साहित्य में उज्जैन का राजा विक्रमादित्य बड़ा लोकप्रिय रहा है। उसके प्रसंग को लेकर हजारों कहानियाँ देश की विविध भाषाओं में प्रचलित हैं। उसके नवरत्नों की कथा भी सर्वविदित है। विदेशी इतिहासकाल उसे केवल क्लिपत राजा मानते हैं। विक्रम की नगरी उज्जैन में महाकाल का सुप्रसिद्ध मंदिर है। देश के किसी अन्य भाग में महाकाल का कोई मंदिर नहीं है। अतः निश्चय ही यह प्रश्न उपस्थित होता है कि यह 'महाकाल' क्या शिव का पर्याय मान लिया गया है? उज्जैन के महाकाल के मंदिर के अलावा देश के अन्य मंदिर महाकाल के मंदिर क्यों नहीं कहलाते? हमारे विचार से विक्रमादित्य, उज्जयिनी, नवरत्न और महाकाल इन चारों शब्दों की उत्पत्ति से इसके वास्तविक अर्थ पर प्रकाश डाला जा सकता है और सुप्रसिद्ध कथा की गुत्थी सुलझ सकती है। भारतीय ज्योतिष के विद्वान यह जानते हैं कि उज्जैन का सूर्योदय काल देश भर के पंचांगों के लिये प्रामाणिक उदयकाल माना जाता रहा है। भारतीय ज्योतिषियों के अनुसार दक्षिण में लंका, भारत के मध्य में उज्जैन और उत्तर में रोहोतक (संभवतः वर्तमान रोहतक) नगरों के मध्य से जाने वाली देशांतर रेखा से पूर्व में तथा पश्चिम में स्थित स्थानों के सूर्योदय का काल ज्ञात करने की विधियाँ निर्धारित की हुई हैं इस प्रकार उज्जयिनी का सूर्योदय काल देशभर के लिये प्रामाणिक
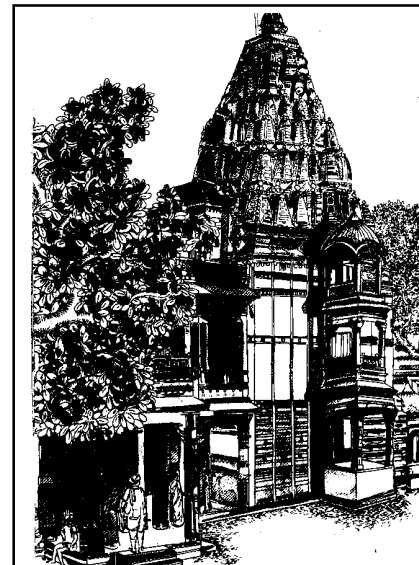
सूर्योदय काल था और आधुनिक भाषा में उसे भारत का 'स्टैंडर्ड टाइम'कहा जा सकता है। ईसा पूर्व के ज्योतिषी संभवतः इसी को महाकाल कहते थे। विविध शास्त्रीय तथ्यों को देवरूप में स्वीकार करने की हमारे यहां परंपरा रही है । इसी परंपरा के अंतर्गत महाकाल को देवरूप में माना गया और उसके मंदिर की स्थापना उज्जयिनी में की गई। उज्जयिनी को क्यों चुना गया, यह भी एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। जब एक ही देशांतर रेखा देश के इतने लम्बे चौड़े भाग से गुजरती है, तो उज्जैन को ही क्यों महत्व दिया गया है? उत्तर यह है कि उज्जैन कर्क रेखा पर स्थित है, जहाँ उत्तरायण सूर्य आता है और पुनः लौटकर मकर रेखा तक दक्षिणगामी होती है। विक्रमादित्य शब्द में दो खंड हैं विक्रम-आदित्य।

आजकल विक्रम का अर्थ सामान्यतया 'पराक्रम' समझा जाता है और आदित्य का 'सूर्य'। इस प्रकार विक्रमादित्य का अर्थ शक्ति का सूर्य लगाया जाता है, परंतु विक्रम शब्द में क्रम धातु है, जिसका अर्थ है चलना। इसी से बना हुआ दूसरा शब्द संक्रम, संक्रमण और संस्कृति आधुनिक ज्योतिषियों के लिये अपरिचित शब्द नहीं है। उज्जैन की व्युत्पत्ति इस समय उज्जयिनी से मानी जाती है। उज्जैन के प्राकृत नाम 'उज्जैणी' या 'उजाजैन नगरी' थे, जो स्पष्टः संस्कृत 'उदियनी' या उदय नगरी से व्युत्पन्न प्रतीत होते हैं। पुनः संस्कृतिकरण की यह प्रक्रिया कथा सरित सागर आदि में बहुत अधिक पाई जाती है। उज्जैन वास्तव में विक्रमादित्य के उदय की नगरी थी।

लोक कथाओं में राजा भोज

त एक बार राजा भोज नगर भ्रमण पर निकले। राह में एक महिला सिर पर बोझा लिए चली आ रही थी। हवा के तेज झोके से उसका आंचल खिसक गया था। उसका वक्ष स्थल खुल जाने से महिला लज्जित महसूस कर रही थी। यह देख राजा भोज ने हवा से कहा- 'अपनी मर्यादा में बहो तुम्हारी अमर्यादित गति से एक महिला को परेशानी हो रही है।' राजा भोज के वचन सुनकर हवा शांत हो गई। राजा भोज के प्रताप की यह कहानी मालवा अंचल में घर घर कही-सुनी जाती है।

त एक बार राजा भोज रात्रि भ्रमण पर निकले। उन्होंने देखा एक स्त्री इतनी रात गए अकेली घूम रही है। उनके पूछने पर स्त्री ने जवाब दिया- 'राजन्, आपके

प्रशासन से काम का प्रशासन ज्यादा बलवान होता है। जिसकी आज्ञा टालना देवताओं के वश में भी नहीं।'

स्त्री का उत्तर सुनकर राजा भोज संतुष्ट हुए एवं स्त्री की वाक्पटुता से प्रभावित हो उसे पुरस्कृत किया।

त एक बार शिकार खेलते समय राजा भोज को जोर की प्यास लगी। सौभाग्य से एक सुकुमारी इतने में सिर पर छाछ (मही) का मटका लिये वहाँ से गुजर रही थी। राजा ने पानी की प्रत्याशा में युवती से पूछ लिया - 'सुकुमारी, इस मटके में क्या है. मैं प्यास से व्याकुल हूँ।'

युवती बोली - 'राजन्, इसमें बर्फ, चन्द्र और शंख के समान सफेद, पके कबीट फल के समान सुगन्धित रसयुक्त छाछ है।'

राजा ने छाछ पीकर कहा- 'बोलो, युवती तुम क्या चाहती हो?'

वह बोली - 'जिस प्रकार कुमुदनी चन्द्र को, चकवा सूर्य को, चातक मेघ को, भ्रमर फूल को, कोयल आम रस को तथा स्त्री परदेशी पति को देखने की कामना करती है ऐसे ही मैं आपको देखने की कामना करती हूँ।

युवती के वचन सुनकर राजा भोज ने रानी लीलावती की अनुमति से उक्त युवती को अंतःपुर में स्थान दिया।

त एक बार राजा भोज बगीचे में घूम रहे थे। इतने में वहाँ से एक पारधीन हाथ में थोडा सा मांस लिए निकली। राजा भोज ने पूछा - 'माँस इतना कम क्यों है?' वह पारधीन बोली - 'आपकी कीर्ति जग में व्याप्त है। आपकी कीर्ति सुनने में हरिण इतने मग्न हो जाते हैं कि वे चरना ही भूल जाते हैं। इसलिये उनके शरीर में माँस कम बनता है।'

त एक स्त्री देर रात गए दहाड़ मार कर रो रही थी। वस्तुस्थिति का पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि स्त्री की पुत्रवधू गर्भवती है और पीड़ा से उसके प्राण निकले जा रहे है। घर में कोई पुरुष नहीं है। घर की आर्थिक स्थिति विपन्न है। इस कारण स्त्री रो रही है।

ऐसा सुनकर राजा भोज का हृदय भर आया। उन्होंने तत्काल आवश्यक राशि व सहायता उस परिवार को पहुंचाई।

माऊंट आबू

आबू पर्वत पर पवारों की उत्पत्ति में मुख्य भूमिका निभाने वाला पवित्र अग्निकुंड आज भी दिखाई देता है जिसे कर्नल टाड ने स्वयं जाकर देखा है तथा लेखक ने भी स्वयं सन् 1998 के ग्रीष्मकाल में इस स्थान पर पुष्पांजलि अर्पित की थी। आज भी इस स्थान पर टूटी फूटी हालत में अग्नि कुंड दृष्टिगोचर होता है। इसी स्थान पर एक सप्त धातु की बनी 3.5 फीट ऊँची मूर्ति स्थित है। कुछ इतिहासकारों का कथन है कि यह परमार राजा धारा वर्ष की मूर्ति है तथा वहाँ के स्थानीय संरक्षकों का कहना है कि यह राजा इंद्र की मूर्ति है। इसी स्थान पर वशिष्ठ आश्रम है जहाँ वशिष्ठ जी व भगवान राम व लक्ष्मण की चित्ताकर्षक मूर्तियाँ हैं। इस स्थान पर पहुँचने के लिये आबू से 3 मील दूरी पर स्थित हनुमान आश्रम से होकर जाना पड़ता है जहाँ हनुमानजी की 10 फुट ऊँची प्राकृतिक एवं विशाल प्रतिमा है।

माऊंट आबू से लगभग सात मील दूरी पर अचलेश्वर महादेव का एक विशाल मंदिर है तथा इसी मंदिर के पास से एक रास्ता अचलगढ़ को जाता है। अचलगढ़ का पुराना किला आबू परमार नरेश ने सन् 900 के लगभग बनवाया था। इस किले के एक दो द्वार ही हाल में स्थित हैं। इसकी सीमा के अंदर जैनियों ने मंदिर बना लिये गये हैं। इस अचलगढ़ किले के समीप ही बाजू में मंदाकिनी नामक कुंड है। इस कुंड के पानी को गंगा नदी के जल समान पवित्र माना जाता है। इसके चारों कोने में ऋषियों की कुटियाँ बनी हैं तथा कहावत प्रचलित है कि पुराने समय में यह कुंड घी से भरा रहता था। इस घी को पीने के लिये तीन राक्षस भैंसों का रूप धारण कर

आते थे. जब परमार राजा आदिपाल को इस बात की खबर लगी तब उन्होंने एक ही बाण से उन तीनों भैंसों को मार डाला जो पत्थर की तरह जड़वत दिखाई देते हैं। धनुर्धारी परमार राजा की मूर्ति भी वहाँ आज भी मौजूद है। इसी पाषाण मूर्ति को देखकर कर्नल टॉड बड़े ही प्रभावित हुए थे। उन्होंने इस मूर्ति की बड़ी ही प्रशंसा की है तथा उसे भारत के एक कलात्मक नमूनों में से कला का एक उत्कृष्ट नमूना वर्णित किया है।

आबू की उत्पत्ति एक किवदंती के अनुसार आज से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व बैसाख की अष्टमी के दिन हुई थी। ऐसा भी कहा जाता है कि अनेक वर्षों पहले इस स्थान पर एक विशाल मैदान था. यहाँ देवी देवता निवास करते थे। इस मैदान के एक हिस्से में बहुत ही गहरा गड्ढा था इस स्थान पर वशिष्ठ मुनि तपस्या करते थे। संयोग वश एक दिन उनकी गौ फिरते फिरते उस गड्ढे में गिर गई। ऋषि को इस बात से बड़ा दुख हुआ व गाय को निकालने के लिये वे सरस्वती नदी के पास गये तथा उनकी प्रार्थना पर सरस्वती ने अपना बहाव उक्त गड्ढे की ओर इस प्रकार किया कि वह गड्ढा जलमग्न हो गया व गाय तैरकर ऊपर आ गई। ऋषि ने अपनी गाय बाहर निकाली। वशिष्ठ जी ने उस गड्ढे को पूरने के लिये हिमाचल पर्वत से प्रार्थना की। उनकी प्रार्थना को स्वीकार कर गिरिराज ने अपने छोटे पुत्र नन्दीवर्धन को यह कार्य पूरा करने की आज्ञा दी परन्तु वह लंगड़ा होने से उसने अर्बुद नामक सर्प की सहायता ली तथा उसकी सहायता से इस विशाल मैदान में प्रवेश कर उक्त गड्ढे को पूर दिया तब से इस पहाड़ का नाम अर्बुदांचल हुआ। आबू शब्द अर्बुदांचल का अपभ्रंश है।

उज्जैन या अवंतिका

उज्जैन की प्राचीन समय में उज्जयिनी नाम से संबोधित किया जाता था तथा इसे अवंतिका या अंबावती भी कहते हैं। भविष्य पुराण में लिखा है -

अवनो प्रमरोभूपोश्चतुर्योजन विस्तृताम्।

अम्बावतीं नाम पुरीं मध्यास्य सुखितो भवत्।।

अर्थात् परमार राजाओं का अम्बावती नामक नगरी के चहुँ ओर चार योजन तक विस्तृत राज्य था तथा अंबावती नगरी राज्य के मध्य भाग में स्थित थी।

इतिहासकारों का मत है कि उज्जैन को परमार राजाओं ने ही बसाया था एवं चरित्र नायक विक्रमादित्य इसी नगरी में राज्य करते थे। उन्होंने विक्रम संवत् ईसा मसीह के 56 वर्ष पूर्व से ही चलाया था। विक्रमादित्य नागवंशी ही नहीं प्रस्तुत अग्नि-कुलोत्भव पंवार थे। इसी परमार राजा ने शक लोगों को जो तातार देश से भारत पर चढ़ आये थे उन्हें पराजित किया था।

पुण्य-सलिला क्षिप्रा के पूर्वी तट पर स्थित भारत की महाभागा-अनादि नगरी उज्जयिनी को भारत की सांस्कृतिक-काया का मणिपुर-चक्र माना गया है। इसे भारत की मोक्षदायिका सात प्राचीन पुरियों में एक माना गया है। प्राचीन विश्व की याम्योत्तर (शून्य देशान्तर) रेखा यहीं से गुजरती थी। पुराणों में उज्जयिनी, अवन्तिका, अमरावती, प्रतिकल्पा, कुमुद्वती आदि नामों से इसकी महिमा गायी गई है। महाकवि कालिदास द्वारा वर्णित 'श्री विशाल विशाला' एवं भाणों में उल्लिखित 'सार्वभौम' नगरी यही रही है। इस नगरी से ऋषि सांदीपनि, महाकात्यायन, भास, सिद्धसेन दिवाकर, भर्तृहरि, कालिदास-वराहमिहिर- अमरसिंहादि नवरत्न, परमार्थ, शूद्रक, बाणभट्ट, मयूर, राजशेखर, पुष्पदंत, हरिषेण, शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, दरूप आदि संस्कृतिचेता महापुरुषों का घनीभूत संबंध रहा है। धर्म और संस्कृति के विभिन्न आयामों से समृद्ध रही है उज्जयिनी।

राजनैतिक दृष्टि से उज्जैन का एक लम्बा इतिहास रहा है। उज्जैन के गढ़ क्षेत्र में हुए उत्खनन से आद्यैतिहासिक एवं प्रारंभिक लोहयुगीन सामग्री प्रभूत मात्रा में प्राप्त हुई है। पुराणों व महाभारत में उल्लेख आता है कि वृष्णि-वीर कृष्ण व बलराम यहाँ गुरू सांदीपनि के आश्रम में विद्याध्ययन हेतु आये थे। कृष्ण की एक पत्नी मित्रवृन्दा उज्जैन की ही राजकुमारी थी। उसके दो भाई विन्द एवं अनुविन्द महाभारत युद्ध में कौरवों की ओर से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए थे। ईसा की छठी सदी में उज्जैन में एक अत्यंत प्रतापी शासक हुआ। उसका नाम था चण्डप्रद्योत। भारत के अन्य शासक उससे भय खाते थे। उसकी दुहिता वासवदत्ता एवं वत्सनरेश उदयन की प्रणयगाथा इतिहास-प्रसिद्ध है। प्रद्योत वंश के उपरान्त उज्जैन मगध साम्राज्य का अंग बन गया। मौर्य सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य यहाँ आया था। उसका पौत्र अशोक यहाँ का राज्यपाल रहा था। उसकी एक भार्या वेदिसा देवी से उसे महेन्द्र और संघमित्रा जैसी संतुति मिली जिसने कालान्तर में श्रीलंका में बौद्ध धर्म का प्रचार किया

था।

मौर्य साम्राज्य के पतन के बाद उज्जैन शकों और सातवाहनों की राजनैतिक स्पर्धा का केन्द्र बना। शकों के पहले आक्रमण को उज्जैन के वीर विक्रमादित्य के नेतृत्व में यहाँ की जनता ने प्रथम सदी ई.पू. में विफल कर दिया, किन्तु कालान्तर में विदेशी पश्चिमी शकों ने उज्जैन हस्तगत कर लिया। चष्टान व रुद्रदामन इस वंश के प्रतापी व लोकप्रिय महाक्षत्रप सिद्ध हुए। चौथी शताब्दी ई. में गुप्तों और औलिककोरं ने मालवा से इन शकों की सत्ता समाप्त कर दी। शकों और गुप्तों के काल में इस क्षेत्र का अद्वितीय आर्थिक एवं औद्योगिक विकास हुआ। छठी से दसवीं सदी तक उज्जैन कलचुरियों, मैत्रकों, उत्तरगुप्तों, पुष्पभूतियों, चालुक्यों, राष्ट्रकूटों व प्रतिहारों की राजनैतिक व सैनिक स्पर्धा का दृश्य देखता रहा। सन् 1000 से 1300 ई. तक मालवा परमार-शक्ति द्वारा शासित रहा। काफी समय तक उनकी राजधानी उज्जैन रही। इस काल में सीयक द्वितीय, मुंजदेव, भोजराज, उदयादित्य, नरवर्मन जैसे महान नृपतियों ने साहित्य, कला एवं संस्कृति की अभूतपूर्व सेवा की। दिल्ली के दास एवं खिलजी सुल्तानों के आक्रमणों के कारण परमार वंश का पतन हो गया। सन् 1406 में मालवा दिल्ली सल्तनत से मुक्त हो गया और उसकी राजधानी मांडू से धोरी, खिलजी व अफगान सुल्तान स्वतंत्र राज्य करते रहे। मुगल सम्राट अकबर ने जब मालवा अधिकृत किया तो उज्जैन को प्रान्तीय मुख्यालय बनाया गया। मुगल शासक अकबर, जहांगीर, शाहजहाँ व औरंगजेब उज्जैन आये थे। अठारहवीं सदी के पूर्वार्द्ध में मालवा व मराठों का अधिकार हो गया। सिंधिया वंश की राजधानी उज्जैन बनी। इस वंश के संस्थापक राणोजी शिंदे के मंत्री रामचन्द्र शेणवी ने वर्तमान महाकाल मंदिर का निर्माण करवाया। शिन्दे वंश के शासकों में महादजी सर्वाधिक उल्लेखनीय है।

सन् 1810 ई. में सिंधिया राजधानी ग्वालियर ले जाई गई किन्तु उज्जैन का सांस्कृतिक विकास जारी रहा। सन् 1948 में ग्वालियर राज्य का विलय नवीन मध्यभारत प्रान्त में हो गया। आजकल उज्जैन मध्यप्रदेश का एक प्रमुख नगर, संभाग-मुख्यालय व प्रसिद्ध रेल्वे जंक्शन है।

ज्योतिर्लिंग महाकालेश्वर - उज्जैन सभी धर्मों एवं मत-सम्प्रदायों के समन्वय का केन्द्र रहा है। असंख्य शिवलिंगों एकादश रुद्र अष्ट भैरव, द्वादश

आदित्य, छः विनायक, चौबीस मातृका, मारूति-चतुष्टय, दस विष्णु, नवदुर्गा, नवग्रह आदि के धर्मस्थल इस पवित्र क्षेत्र में होने की चर्चा स्कन्दपुराण के अवन्ती खण्ड में आई है। प्राचीनकाल में जैन व बौद्ध धर्म तथा मध्यकाल में इस्लाम के विभिन्न सम्प्रदायों का यहाँ पर्याप्त प्रसार-प्रचार रहा। फिर भी अवन्ती मूलतः एक शैव क्षेत्र है। इस क्षेत्र के अधिपति भगवान भूतभावन महाकालेश्वर माने गये हैं। ज्योतिर्लिंग महाकाल दक्षिणमूर्ति होने से भारत के अन्य ज्योतिर्लिंगों की तुलना में विशिष्ट महत्व रखते हैं। परमारकाल में पुनः निर्मित विशालतम महाकाल मंदिर सहित उज्जैन के अनेक प्राचीन मंदिरों को सन् 1235 ई. में दिल्ली के गुलाम-वंशी सुलतान इल्तुतमिश के धर्मान्ध निर्देश पर ध्वस्त कर दिया गया था। यद्यपि इन स्थानों की पूजा-अर्चना फिर भी जारी रही किन्तु उज्जैन के इन मंदिरों में से अनेक का पुनः निर्माण मराठाकाल में ही संभव हो सका। महाकालेश्वर, अनादि-कल्पेश्वर, वृद्ध-महाकाल, हरसिद्धि, कालिका, चिन्तामण-गणेश, द्वारकाधीश (गोपाल), जनार्दन, अनन्तनारायण, नवग्रह, तिलभाण्डेश्वर, कर्कराज आदि मंदिरों का वर्तमान स्वरूप शिन्दे शासनकाल की देन है जिसे उज्जैन के विगत सांस्कृतिक वैभव को बहुत कुछ लौटा दिया। महाकाल मंदिर तीन खण्डों वाला एक विशाल धार्मिक निर्माण है। यह भारत वर्ष के लाखों यात्रियों की असीम श्रद्धा का केन्द्र है।

धारा नगरी

इस नगरी को परमार राजा बैरीसिंग ने अपने खड्ग-धार से 9वीं शताब्दी के प्रथम चरण में त्रिपुरी के वेदि राज्य, अनहिलवाड़ के भीमदेव चालुक्य आदि को पराजित कर बसाया था तथा उसे सुशोभित किया था। खड्ग याने खंग की धार को धारा नाम से संबोधित किया जाता है तथा कंग द्वारा शत्रुओं को पराजित करने पर इस नगरी की स्थापना इतिहास प्रसिद्ध परमार राजा बैरीसिंग ने की थी तथा आज भी यहाँ परमार राजा निवास करते हैं जो अब अपने को मराठे पंवार कहते हैं। आठवीं शताब्दी से चौदवीं शताब्दि तक धार में परमार राजा राज्य करते थे परन्तु मुसलमानों से पराजित होने पर परमारों ने मराठों की सहायता ली। सन् 1724-25 में उदाजी नामक पंवार सरदार को पेशवा बाजीराव ने धार में चौथाई कर वसूल करने के लिये तैनात किया था तथा उसने मुसलमानों को परास्त कर धार में स्वतंत्र राज्य 1732

में स्थापित किया था। अंग्रेजों के समय से यह धार स्टेट सन् 1947 तक कायम रहा व भारत जब स्वतंत्र हुआ तब यहाँ के राजा को राजकीय कोष से राशि देकर उसे भारत राज्य में मिला लिया गया।

ईसा के पूर्व धारा नगरी के प्रगतिशील स्थान होने के प्रमाण भी मिलते हैं। मौर्य तथा गुप्त काल में धारा नगरी एक वैभव पूर्ण स्थान था। सरस्वती-सेवी परमारों ने इसे अपनी राजधानी बनाया था। यहाँ उन्होंने सुदृढ़ दुर्ग निर्माण किये। चहुँओर तालाबों से घिरे होने से कवि पद्मगुप्त परिमल ने नवसाहसांक चरित में इस नगरी की लंकापुरी तथा कुबेर की अल्कापुरी से तुलना कर डाली है। यह नगरी परमार या पंवारों की आदि-भूमि है।

सूर्य महल- धारा नगरी का परमार कालीन 'मार्तन्ड प्रासाद' को सन् 1405 ई. में दिलावर खान ने 'लाट-मस्जिद' में बदलने की चेष्ठा की, जो आज भी वास्तुकला का अद्वितीय नमूना है। चारों दिशाओं में भव्य प्रवेश द्वार, पाषाणों में कटी सुंदर जालियाँ, पूर्ण कलश के मुख से निकलते हुए गोल, चौकोण, षटकोण, अष्टकोण पाषाणों से बने लम्बे-चौड़े विशाल स्तंभ, अप्सराओं, देवी-देवताओं, वराह-अवतार की कलात्मक प्रतिमाएँ, घंटियाँ, कमल बेले आदि उत्कीर्ण कलाकृतियाँ मन मोह लेती है। मुसलमान आक्रान्ताओं ने छेनी से छिलकर बहुत सी कला-कृतियों को नष्ट कर दिया है फिर भी सूर्यमहल के वर्तमान अवशेष आज भी परमार कालीन वास्तुकला की भव्यता दर्शाते है। यह भोजशाला से भी सुंदर एवं विशाल है। मुख्य प्रवेश द्वार सम्मुख पार्श्वभाग में गुम्बज और दोनों ओर स्तंभों पर खड़ी दो मंजिला बैठकें राज सिंहासन एवं मंत्री-विशेष अतिथियों की व्यवस्था दर्शाती है। मध्यभाग में 11-11 स्तम्भों पर खड़ा सभा मंडप 500 व्यक्तियों की बैठने की क्षमता रखता है। सूर्य महल के पास लोहे की लाट के तीन टुकड़े रखे हुए हैं जिसे मूलतः राजा भोज ने 11वीं शताब्दि में त्रिपुरी के गांगलदेव पर विजय स्वरूप खड़ा किया था, जो 50 फूट लम्बी और 7 टन वजनी है। इसे सुल्तान बहादुर शाह ने गुजरात ले जाने के लिये तीन तुकड़ों में तोड़ा था।

धारागिरी दुर्ग- धारानगरी के उत्तर पूर्वी सीमा पर नगर की प्राचीन दीवार एवं दुर्ग के अवशेष परमार कालीन भव्य स्थापत्य-कला का अनन्य उदाहरण है। यह दुर्ग

परमार नृपतियों का यशोवर्मन तक निवास स्थल रहा है। मराठा शासक बाजीराव (द्वितीय) पेशवा का जन्म यहीं पर दिनांक 24 जनवरी 1774 में अंग्रेजों की कैद में हुआ था।

धारागिरी दुर्ग

इस तरह मांडू दुर्ग, ओंकारेश्वर का किला तथा बुढ़ी-मांडू दुर्ग के खंडहर परमार कालीन कला की उत्कृष्ठता को प्रकट करते हैं।

भोजशाला - इसे 'शारदा-सदन' के नाम से भी संबोधित किया जाता था किन्तु बाद में मुसलमान आक्रमणकारियों ने 'कमला मौला मस्जिद' बना दिया।

भोजशाला

इसने महाराजा भोज के काल से अर्जुनवर्मन के काल तक निरंतर200 वर्षों तक संस्कृत विद्यापीठ एवं विशाल नाट्य-गृह, ग्रंथालय ई. की अहम भूमिका निभायी। यह चारों दिशाओं से दीवारों से घिरा हुआ है एवं एक विशाल प्रवेश द्वार, पूर्वाभिमुख सिंहद्वार अत्यंत आकर्षक है।

मंदिर - परमार नृपतिगण धार्मिक थे। मूलतः शिवभक्त थे। वे अपने कुल-देवता 'दुल्लादेव' को शिव का रूप मानते थे। उन्होंने शिव-मंदिर जगह-जगह बनाये। उन्होंने अन्य देवताओं तथा कुछ जैन मंदिरों का भी मालवा एवं मालवा के बाहर निर्माण किया। भोजकालीन शिलालेख से जान पड़ता है कि भोज ने धारा नगरी के चौरासी चौराहों पर चौरासी मंदिर बनवाये थे। मान्धाता (जिला खण्डवा) के 5 तथा ऊन (जिला खरगोन) के आठ मंदिर परमार कालीन वास्तुकला के बेहतरीन
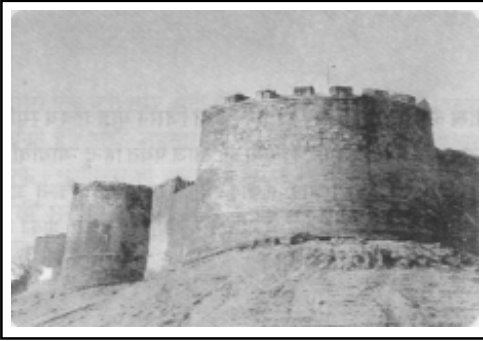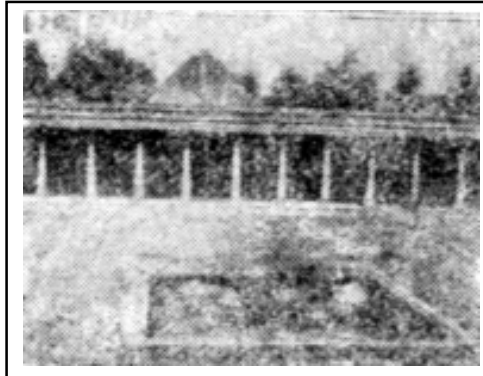
नमूने है। ऊन को तो 'मालवा का खजुराहो' कहा जाता है।

उदयपुर का नीलकंठेश्वर मंदिर बीना ओर विदिशा के मध्य बरेठ स्टेशन से 6 कि.मी. दूरी पर उदयपुर में महाराजा उदयादित्य ने इ.स. 1059-1080 में बनवाया था। इसमें नटराज शिव की मूर्तियाँ मन मोह लेती है। इस मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग है। शिव नन्दी सभा मंडप में स्थापित है। अनेक देवता दीवारों व खम्भों पर उत्कीर्ण किये गये है। मुख्य मंदिर के पास 6 छोटे देवालय है।

भोपाल

मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल शहर अपनी अनूठी नैसर्गिक छवि, ऐतिहासिकता और आधुनिक नगर नियोजन का नायाब नमूना है। ग्यारहवीं सदी के भोजपाल नामक राजा भोज ने इस नगर को बसाया था। बाद में इसकी नींव एक प्रतापी अफगान सैनिक दोस्त मोहम्मद (1708-1740) ने डाली थी। दोस्त मोहम्मद की मुलाकात रूपवती गौड़ रानी कमलापति से हुई थी जिसने अपने पति की मृत्यु हो जाने पर उनसे सहायता की याचना की थी। एक रोचक किवदंती के अनुसार रानी कमलापति कमल पुष्प की आकृति की अपनी नाव में भोपाल झील के सुरम्य विस्तार में पूनम की रातों में जल-विहार का आनंद लेती थीं। आज भी भोपाल की दोनों झीलें पर्यटकों के लिये खूबसूरत सौगात हैं। इनके किनारे ही इस शहर का विकास हुआ है।

भोजपुर- जनश्रुतियों और किंवदंतियों के रूप में अमरता प्राप्त धार के महान सम्राट राजा भोज (1010-53) ने इसकी स्थापना की थी। भोपाल से 28 किलोमीटर दूर इसकी प्रसिद्धि भव्य शिव मंदिर और विशाल बांध के कारण है। यह मंदिर जिसे पूरब का सोमनाथ भी कहा जाता है, भोजेश्वर मंदिर के रूप में जाना जाता है। अपनी वास्तु योजना में यह वर्गाकार है जिसका बाह्य विस्तार 66 फीट है।

शानदार ढंग से उत्कीर्ण इसका शिखर यद्यपि अपूर्ण है किन्तु उसकी बुलन्द ऊंचाई को चार मजबूत स्तम्भ थामे हुए हैं। इसकी परिकल्पना शिखर की भांति विशाल रूप में की गयी थी। अपनी ऊँचाई की ओर शुण्डाकार होते जाने के कारण आज भी यह विलक्षण चारूता लिए हुए है। तीन भागों में विभाजित निचला हिस्सा अष्टभुजाकार है जसमें 21.2 फु वाले फलक है और जिनसे चौबीस फलक वाली प्रशाखाएँ फूट निकलती हैं।

इस मंदिर का प्रवेश द्वार निचले हिस्से में अलंकार रहित है जिसके दोनों पार्श्वों में दो सुन्दर प्रतिमाएँ ध्यान आकृष्ट करती हैं। इसके अन्य तीन तरफ उपरिकाएँ हैं जिन्हें दीवारगीर और सुन्दर रूप से तराशे गये चार स्तम्भ सहारा दिये हुए हैं। मंदिर में विद्यमान पावन शिवलिंग की ऊंचाई दर्शकों को विस्मय से स्तब्ध कर देती है जो 7.5 फुट है और इसकी परिधि 17.8 फुट है। 21.5 फुट वाले वर्गाकार और विस्तृत चबूतरे पर इसे त्रिस्तरीय चूने के पाषाण खण्डों पर स्थिर किया गया है।

यह मंदिर कभी पूरा नहीं हो सका। शिखर भाग तक पत्थर ले जाने के लिये जो सोपान निर्मित किया गया था वह आज भी विद्यमान है। यदि यह मंदिर पूरी तरह बन जाता तो शायद ही इसकी कोई मिशाल होती।

भोजेश्वर मंदिर के पास ही इसी तरह अधूरा और पत्थर चढ़ाने के लिए बनाये गये सोपान सहित एक जैन मंदिर विद्यमान है। इसके भीतर तीर्थंकरों की तीन प्रतिमाएँ हैं। इसमें पहली विशाल मूर्ति महावीर स्वामी की 20 फुट ऊँची है और अन्य दो पार्श्वनाथ की हैं। इसकी वास्तुकला आयताकार है। संभवतः यह भोजेश्वर मंदिर के काल का ही है।

भोजपुर के पश्चिम में एक समय बड़ी झील थी किन्तु अब नहीं है। केवल पुराने शानदार बाँधों के अवशेष यत्र-तत्र बिखरे हैं। इन्हीं बांधों के द्वारा झील का पानी रोका जाता था। इस बाँध का स्थान चतुराई पूर्वक चुना गया था क्योंकि इसके दोनों ही ओर समूचे क्षेत्र में पहाड़ियों के रूप में प्राकृतिक दीवालें थीं। केवल दो स्थानों पर ही क्रमशः सौ और पांच सौ गज चौड़ी खाई थी। इन्हें मिट्टी के विशाल बांधों से बन्द कर दोनों ही ओर बालुकाश्म के विशाल पाषाण खण्डों को गारे से चिन दिया गया था। ये पाषाण खण्ड 4 फु लम्बे, चौड़े और 2.5 फुट मोटे थे। छोटा बाँध 44 फुट ऊँचा और आधार तल पर 300 फुट चौड़ा तथा बड़ा बाँध 24 फुट ऊँचा

और ऊपरी सतह पर 100 फुट चौड़ा था। ये तट बाँध लगभग 250 मील के जल प्रसार को रोके हुए थे।

इस झील को मालवा के होशंगशाह (1405-34) ने विनष्ट किया। उसने छोटे बाँध को काट दिया शायद जानबूझकर या पाशविक होकर उसने यह सर्वाधिक उपजाऊ विशाल क्षेत्र अपने अधिकार में ले लिया। एक गौंड किंवदन्ती के अनुसार उसकी फौज के लोगों को इस बाँध को काटने में तीन महीने लगे और इस झील को रीत जाने में तीन साल लगे। फिर अगले तीस सालों तक इसका कछार रहने योग्य नहीं रहा। ऐसा भी कहा जाता है कि इस अपार जलराशि के समाप्त हो जाने से मालवा की जलवायु में काफी परिवर्तन आ गया था।

नगरधन

यह नगर रामटेक के दक्षिण दिशा में 4 मील की दूरी पर बसा है। नगरधन वही स्थान है जहाँ कि पंवार राजपूतों ने अपना प्रारंभिक गृह मालवा में स्थित धार छोड़ने पर यहाँ आकार बसे थे। इसलिये इस ग्राम का विशेष महत्व है।

इस ग्राम में एक कोटेश्वर महादेव का मंदिर है जो कि हेमद पंथी नमूने पर बिना चुने के जुड़ाई के बना हुआ है। मंदिर में जो शिव लिंग है उसमें एक दरार है जो कि लगभग 3 फीट अन्दर तक गहरी है। लोगों का कहना है कि किसी समय एक गौलिन इस शिवलिंग की पूजा बड़े ही लगन से दूध बेचने को ले जाने के पहिले प्रतिदिन किया करती थी एवं कुछ दूध उस शिवलिंग पर चढ़ाया करती थी। इसके फलस्वरूप उसके दूध में वृद्धि हो जाया करती थी तथा वह उसे बेचकर ज्यादा पैसे प्राप्त करती थी। उसके पति को इस ज्यादा बिकरी का भेद न लग पाया तथा वह अपनी पत्नी के आचरण पर शक करने लगा। वह सोचने लगा कि उसकी स्त्री प्रतिदिन शिवजी के मंदिर में अपने किसी प्रीतम से मिलने जाती होगी। एक दिन वह गौली एक भाला हाथ में लिये अपनी पत्नी के पीछे पीछे इस मंदिर में दोनों प्रेमियों को जान से मारने की नियत से गया। गौलिन अपने पति को क्रुद्ध अवस्था में देखकर महादेव से प्रार्थना करने लगी कि वह उसे आश्रय देवे तथा उसके उपरान्त महादेव का पाषाण लिंग बीच से फट गया व वह गौलन उसमें समा गई। वह शिवलिंग अब तक भी नहीं जुड़ पाया है। उस गौली ने अपने भाले से शिवलिंग पर जो प्रहार किये थे उसके निशान अभी भी दृष्टिगोचर होते हैं।

पूर्वज खण्ड

परमार काल

ईसा से 57 वर्ष पूर्व राजा भर्तृहरि उज्जैन के लोकप्रिय शासक रहे। उन्होंने अप्रतिम योद्धा के रूप में शकों से अपने राज्य को मुक्त कराकर विशाल साम्राज्य की स्थापना की और नीतिज्ञ राजा के रूप में प्रजा के हृदय पर शासन किया। प्रेयसी पत्नी के विश्वासघात से भग्न हृदय भर्तृहरि ने सन्यास धारण किया, अपने अनुज विक्रमादित्य को राजपाट सौंपा और सन्यासी रूप में प्रेयसी पत्नी को 'माँ' संबोधन देकर शिक्षा प्राप्त की। भर्तृहरि ने वैराग्य शतक, श्रृंगार शतक व नीति शतक नामक तीन अद्वितीय कृतियाँ अपने सन्यासी जीवन के दौरान लिखीं।

विक्रमादित्य अपनी वीरता-धीरता के लिये विश्वविख्यात हुये। अपने भाई की तरह वे भी प्रतापी राजा थे। उनका शासनकाल ईसवी संवत 57 के आसपास का माना जाता है। उन्होंने तातार देश के शक आक्रमणकारियों को हराकर भारत से बाहर खदेड़ दिया था। इस विजय के उपलक्ष्य में चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा से विक्रम संवत चलाया जो आज पर्यन्त जारी है। उन्होंने अपने शासनकाल में नौ रत्नों की परम्परा डाली जिसे बाद में अकबर तक ने अपनाया। कश्मीर से उन्होंने 32 पुतलियों वाला सिंहासन उज्जैन लाया, जिस पर बैठकर वे सच्चा न्याय करते थे। सच्चे न्याय के कारण ही विक्रमादित्य विश्वविख्यात हुये। विक्रम और बेताल की कथाएँ आज भी लोकमानस में व्याप्त हैं।

विक्रमादित्य के बाद के शासकों की जानकारी अनुपलब्ध है। 8वीं सदी के अंत से 9वीं सदी के प्रारंभ तक राजनैतिक अस्थिरता रही फिर भी परमारों ने अपना राज्य स्थापित कर लिया था। उपेन्द्र के उपरान्त बैरीसिंह प्रथम, सीयक प्रथम, कृष्णराज वाक्पति प्रथम तथा बैरीसिंह द्वितीय परम शासक रहे। इनका राज्यकाल 781 ई. से 945 ई. माना जाता है।

परमारों का भाग्योदय हर्षदेव अर्थात सीयक द्वितीय से प्रारंभ हुआ; उसका राज्यकाल 945 ई. से 972 ई. तक रहा। सीयक द्वितीय ने अपने शौर्य का प्रदर्शन करते हुये हूणों और दक्षिण के कई शासकों को पराजित किया था। उनके बाद

वाक्पति द्वितीय जिन्हें राजा मुंज के नाम से जाना जाता है ई. 974 से ई. 994 तक शासन किया। राजा मुंज जनप्रिय शासक थे। उन्होंने कई घाट, तालाब, मंदिर तथा विद्यालयों का निर्माण कराया था। मुंज के बाद उनका अनुज सिन्धुराज सिंहासन पर बैठा। तदुपरान्त महान शासक भोज ने 1011 ई. से 40 वर्ष तक राज्य संभाला। वे कुशल योद्धा व योग्य शासक थे। उनके बाद उदयादित्य, लक्ष्मणदेव, नरवर्मन, यशोवर्मन, अजय वर्मन, अर्जुन वर्मन, देवपाल, जयतुंगदेव, जय वर्मन द्वितीय, जयसिंह तृतीय, अर्जुन वर्मन द्वितीय तथा भोज द्वितीय क्रमशः परमार नरेश रहे। इस तरह भरथरी से भोज द्वितीय तक का 1500 वर्षों का परमारों का राज्यकाल रहा।

परमारों का पराभव- यह मालवा का दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि परमारों का मुस्लिम आततायियों द्वारा पराभव हुआ। विधर्मियों की हथौड़ियों ने चारों ओर विध्वंस कर कला व स्थापत्य के इस महान साम्राज्य का भी बहुत कुछ विनाश कर डाला। फिर भी मालवा के विभिन्न अंचलों में भारी संख्या में परमारकालीन मंदिरों के अवशेष प्राप्त होते हैं जो उनकी गौरवगाथा कहने हेतु पर्याप्त हैं।

रानी लीलावती- रानी लीलावती राजा भोज की पत्नी थी। रानी लीलावती गणित विद्या में इतनी प्रवीण थीं कि उनका गणित प्रथम ग्रन्थ आज भी विख्यात है। राजा भोज अपनी रानी की विद्वता से प्रभावित थे। राज कार्य में वे रानी लीलावती से मंत्रणा करते थे। रानी के प्रति भोज की सम्मान भावना का पता इसी बात से चलता है कि रानी लीलावती की अनुमति से ही अंतःपुर में अन्य कन्याओं को स्थान दिया जाता था।

परम प्रतापी परमार नरेश राजा भर्तृहरि

भर्तृहरि प्रतिनिधि भारतीय चरित्र है। राम और कृष्ण के बाद भारतीय जनमानस को भर्तृहरि ने ही गहराई तक प्रभावित किया है। भर्तृहरि को भरथरी भी कहा जाता है। उनका जीवन वृत इतना लोकप्रिय है कि महाराष्ट्र से नेपाल और राजस्थान से नागालैंड तक उनकी गाथा गाई जाती है। रहस्य, योगसाधना और पौराणिकता उनके जीवनवृत्त के विविध आयाम है। श्रीकृष्ण के जीवन की बहुआयामता भर्तृहरि के

जीवन में दृष्टिगोचर होती है। यही कारण है कि मालवा और राजस्थान के लाखों-करोड़ों लोगों के मन को आज भी भर्तृहरि बाँधे रखे हैं। भतृहरि के जीवन में संयोगी की अधिकता है और इसे ही मानव मन चमत्कारी तत्व मान बैठता है। उनके चरित्र में ऐतिहासिकता का आयाम भी है।

जनश्रुति के अनुसार भर्तृहरि राजा विक्रमादित्य के बड़े भाई थे और 57 ईसा पूर्व में उज्जैन के वह शासक रहे हैं। कालिदास को विक्रमादित्य का समकालीन माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि विक्रम के सामने अभिज्ञान शकुन्तलम् नाटक का प्रदर्शन हुआ था। हरिद्वार के पारम्परिक पंडितों के अनुसार हरिद्वार में हर की पैड़ी का निर्माण विक्रमादित्य ने किया था और उज्जैन तक सुरंग बनवाई थी ताकि भर्तृहरि यहाँ आ जा सके। उज्जैन में अवस्थित भर्तृहरि की गुफाओं में चार सुरंगों के चिह्न हैं। कहा जाता है कि ये चारों धाम को जाती थीं। विक्रमादित्य लक्ष्मण की भांति अग्रज भर्तृहरि को रामवत् चाहते थे।

भर्तृहरि ने वैराग्य शतक श्रृंगार शतक और नीति शतक लिखे हैं, जिनकी कई सुभाषित कालिदास की कृतियों में पाये जाते हैं। जनश्रुति के अनुसार भर्तृहरि योद्धा, नीतिज्ञ कवि, भाषाशास्त्री, दार्शनिक, तत्व विवेचक थे। विक्रम के पूर्व भर्तृहरि द्वारा उज्जैन पर राज्य करने का वृतान्त काफी प्रसिद्ध है। वे विक्रम को राज्य सौंपकर वैराग्य लेते हैं और योग, अद्वैत दर्शन व्याकरण, कविता के क्षेत्र में ग्रन्थ निर्माण और प्रचार-प्रसार का कार्य करते हैं। अद्वैत परम्परा के अनुसार भर्तृहरि ने वेदान्त सूत्रों पर टीका लिखी थी जो अप्राप्त है। उन्होंने योगसाधना कर महाराष्ट्र से पश्चिम भारत तक अलख जगाई थी। राजस्थान उनकी साधना भूमि थी। आबू और अन्य अनेक स्थानों पर उनकी साधना चली थी और हठयोग के वैरागी पंथ की प्रथम गद्दी अजमेर के पास रतढाडा में बनी थी जो अभी भी है। कहा जाता है कि भर्तृहरि ने अलवर के पास सरिस्का अरण्य में एक दुर्गम घाटी में समाधि ली थी जो अभी भी है। राजस्थान से लगे मालवा क्षेत्र में पूगल देश से यायावर क्षेत्र में राजपूताना के साहसी व लड़ाकू लोग बसे हो ऐसी मान्यता है। उस समय पूगल देश सौन्दर्य के लिये प्रसिद्ध था। संभवतः पिंगला का संबंध पूगल देश से ही हो जो भर्तृहरि की रानी थी। इसी पिंगला के सौन्दर्य पर राजा भर्तृहरि पागल थे और उसके विश्वासघात

से राजा इतने दुखी हुये कि उन्होंने अपने अनुज विक्रमादित्य को राजपाट सौंपकार वैराग्य ले लिया था।

विक्रमादित्य

ऐसा कहा जाता है कि आबू पर्वत पर दैत्यगण ऋषियों के यज्ञ भंग कर दिया करते थे। उनके बढ़ते अत्याचारों को रोकने के लिये देवराज इंद्र ने नवीन दूब से मानव कृति बनाकर उसमें प्राण प्रतिष्ठा की और आबू पर्वत पर ब्राह्मणों द्वारा किये जा रहे यज्ञ के हवन कुण्ड में उसे डाल दिया। संजीवन मंत्र का पाठ करते ही उस कुण्ड से एक वीर पुरुष 'मार-मार'' शब्द का उच्चारण करता हुआ प्रकट हुआ। उस वीर पुरुष का नाम वशिष्ठ ऋषि ने परमार रखा। इस तरह परमार वंश का प्रथम पुरुष पैदा हुआ और उसने अपनी वीरता के बल पर परमार वंश को आगे बढ़ाया। देवताओं ने उसकी वीरता, धीरता को देखते हुए उसे आबू, धार और उज्जैन देश का राजपाट सौंपा।

इतिहास के पन्ने पलटने से ज्ञात होता है कि क्षत्रियों में परमार वंश श्रेष्ठ प्रतिष्ठा को प्राप्त हुआ था। इसी वंश में विक्रम संवत् के प्रवर्तक राजा विक्रमादित्य हुये थे जो भर्तृहरि के अनुज माने जाते हैं। विक्रमादित्य ने अपने पूर्वजों की राजधानी अयोध्या का पुनः संस्कार किया, इन्द्रप्रस्थ का उद्धार किया व कश्मीर को जीतकर वहाँ से स्वर्ण सिंहासन उज्जैन लाया था। भारत में शक जाति के लोग घुसकर प्रजा को प्रताड़ित करते थे उन्हें विक्रम ने ही अपने पराक्रम से बाहर खदेड़ा था। शकों को मार भगाने की खुशी में ही विक्रम संवत् प्रचलन में आया। विक्रम के पराक्रम ने परमार शब्द को सार्थक कर दिखाया और तभी से परमार वंश विख्यात हुआ। विक्रमादित्य के पुत्र शिलादित्य के बाद उज्जैन से इस वंश का पराभाव हो गया था और कई पीढ़ियों के बाद इस वंश के राजा आबू, मालवा और गुजरात में अपने राज्य स्थापित कर पाये थे। मालवा में परमार आबू में ही आये और उपेन्द्र नामक नरेश ने इस वंश को आगे बढ़ाया था। उपेन्द्र के बाद के परमार राजाओं का इतिहास में उल्लेख मिलता है जिनमें भोज, मुंज व जगदेव प्रमुख हैं।

विक्रमादित्य न्याय के लिये पूरे भारत में जाने जाते थे। नवरत्नों की परम्परा विक्रमादित्य ने ही डाली थी जिसे भोज तक ने अपनाया। अकबार ने इसी से

प्रभावित होकर अपने दरबार में भी नवरत्नों की परम्परा डाली थी।

विक्रमादित्य अपने अग्रज भर्तृहरि को बहुत चाहते थे। भर्तृहरि द्वारा वैराग्य लेने के कारण ही विक्रम को राजपाट मिला था। विक्रमादित्य ने हरिद्वार में हर की पैड़ी का निर्माण कराया था। उज्जैन में स्थित भर्तृहरि की गुफा से चारों धामों को जाने के लिये विक्रमादित्य ने सुरंग खुदवाई थी।

जगदेव परमार

मालवा क्षेत्र में धारा नगरी में उदयादित्य राजा राज्य करते थे। उनकी दो रानियां थी। एक का नाम बाघेली और दूसरी रानी का नाम सोलंकी था। रानी बाघेली के पुत्र का नाम रणधवल था और दूसरी रानी सोलंकी के पुत्र का नाम जगदेव था। राजा उदयादित्य का प्रेम रानी बाघेली पर अधिक था। इससे रानी सोलंकी और जगदेव को एक गांव देकर अलग व्यवस्था कर दी थी। राजा उदयादित्य मांडू के राजा के यहां अधिक दिन रहता था।

इसी समय बाघेली के पुत्र रणधवल का विवाह गोंड देश के राजा गंभीरसिंह की पुत्री के साथ तय हो गया। इस शादी में जगदेव भी गया। रास्ते में टोंक टोंडा के राजा राजसिंह की पुत्री वीरमती के साथ सम्पन्न हो गया और रणधवल का गंभीरसिंह की पुत्री के साथ। राजा उदयादित्य धारानगरी से मांडू आ गये। लेकिन इसी बीच जगदेव के प्रति विमाता बाघेली का द्वेष और बढ़ गया।

इस हालत को देखकर जगदेव पिता एवं माता सोंलकी से विदा लेकर अपने श्वसुर राजा राजसिंह के राज्य में गया। चार दिन रहने के बाद रानी वीरमती को लेकर गुजरात प्रांत के पाटन के राजा सिद्धराज के यहाँ जाने का तय किया। रास्ता बहुत भयंकर था। लेकिन जगदेव और वीरमती घोड़े पर अस्त्र-शस्त्र लेकर इसी रास्ते पाटन के लिये रवाना हो गये।

रास्ते में सिंह सिंहनी ने इन पर हमला कर दिया। लेकिन दोनों ने मिलकर सिंह सिंहनी को मार डाला और पाटन चले गये।

पाटन के किनारे तालाब पर घोड़ों को बांध वीरमती की देखरेख में छोड़ शहर में नौकरी की तलाश में चला गया। इसी बीच पाटन शहर की जामोती नाम की वैश्या

ने छल-कपट रच कर वीरमती को शहर में ली गयी और एक मकान में ऊपर वाले कमरे में ठहरा दिया।

वीरमती सतर्क थी। ग्राम कोटवार के लड़के ने आकर वीरमती का शील भंग करने का प्रयास किया। लेकिन वीरमती ने आते ही कोटवार के लड़के का अन्त तलवार से कर दिया और कपड़े बाँध कर बाहर फेंक दिया। इसके बाद जामोती वैश्या ने कई लोगों को भेजा लेकिन वीरमती ने सभी लोगों को तलवार से खत्म कर दिया। इसकी जानकारी राजा सिद्धराज को हो गयी।

राजा घटना स्थल पर आये और पूरी जानकारी ली गई, इसी समय जगदेव भी घटना स्थल पर आये तभी वीरमती मकान के बाहर आयी। पूर्ण जानकारी प्राप्त कर राजा सिद्धराज जगदेव और वीरमती को साथ लेकर महल में ले गया। जामोती वैश्या कोटवार अन्य इनके साथियों को दंड दिया।

एक हजार रुपये रोज देकर जगदेव को राज्य का अधिकारी बना दिया। समय आने पर राजा सिद्धराज जगदेव की स्वामीभक्ति, कर्तव्य निष्ठा एवं वीरता पर मंत्रमुग्ध हो गया। पाटन नरेश को जगदेव के प्रयास से जीवनदान मिला। जगदेव की कीर्ति बढ़ने से राजा सिद्धराज को द्वेष होने लगा। एक बार चामुण्डा देवी भिकारिन बनकर राजा सिद्धराज के यहाँ आयी। देवी ने राजा से अनेक माँगे रखी। जगदेव की देवी भक्ति की प्रशंसा की, दान की तारीफ की। राजा सिद्धराज ने कहा कि जगदेव कहा कि जगदेव से चार गुना अधिक दान दूँगा।

इसके तुरन्त बाद देवी जगदेव के मकान में गयी। पूर्ण जानकारी देकर दान की माँग की। इस पर जगदेव ने सिर काटकर देवी को दे दिया। सिर लेकर देवी सिद्धराज के पास गयी और इससे चार गुना दान राजा दे कहा। राजा भयभीत हो गया। सिरे के नीचे चामुण्डा ने जगदेव का सिर अमृत छिड़ककर जोड़कर जीवित कर दिया। जगदेव के दो लड़के जगधवल, बीजधवल थे। राजा सिद्धराज ने जगदेव द्वेष के कारण धारानगरी पर आक्रमण करने का आदेश दिया। इस पर जगदेव ने मना कर कहा-

धारा भीतर मैं रहूं/मुझ में रहे जो/जो मैं धारा पर चढ़ूं/लाजे कुल परमार/जहाँ पँवार तह धार है/धार बिना परमार नहीं/नहीं पँवार बिन धार।

जगदेव के दो लड़के जगधवल, बीजधवल वीरमती और दो और रानियों सहित धारानगरी आ गये और विमाता बाघेली, रणधवल माता सोलंकी एवं पिता उदयादित्य से मिले। सभी लोगों की राय होने पर जगदेव का उदायदित्य राजा ने राज्याभिषेक कर दिया। प्रजा एवं सभी का आशीर्वाद प्राप्त कर जगदेव राज्य का संचालन करने लगा।

राजा मुंज

सीयक द्वितीय (हर्षदेव) का उत्तराधिकारी वाक्पति द्वितीय ही राजा मुंज के नाम से प्रसिद्ध हुये। उनका कार्यकाल 974 ई. से 994 ई. माना जाता है। राजा मुंज ने गुहिलों को पराजित कर उनके सहयोगी गुर्जरों को पलायन के लिये विवश किया था। उन्होंने चौहानों से सफलतापूर्वक टक्कर ली व हूणों को पराजित किया था। इतिहासकार गांगुली के मतानुसार मुंज ने आबू को भी अपने अधिकार में ले लिया था और कलचुरि शासक युवराज द्वितीय को पराजित किया था। मेरूतंग के मतानुसार राजा मुंज ने तेलप को भी पराजित किया था। संभवतः राजा मुंज की इन सफलताओं के कारण ही उदयपुर प्रशस्ति उसे लाट, कर्णाट, चोल और केरल के शासकों को प्रणम्य मानती है। मुंज का करुण अंत हुआ। वे जब चालुक्य राजकुमारी के साथ गोदावरी पार कर रहे थे तभी उनकी हत्या कर दी गई थी।

राजा मुंज जनप्रिय शासक थे। धार और अन्य स्थानों पर उन्होंने कई घाट, तालाब, मंदिर व विद्यालयों का निर्माण करवाया था।

राजा भोज

राजा मुंज की भांति राजा भोज भी एक कुशल योद्धा व विद्वान शासक थे। विद्यानुरागी राजा भोज अपने न्याय, प्रशासन व विद्वानों के प्रश्रयदाता के कारण प्रख्यात हुये। उनका शासनकाल 40 वर्ष तक अबाध गति से जारी रहा। उन्होंने संस्कृत ग्रंथों की रचना कर साहित्य भंडार में अभिवृद्धि की थी। उनके नाम से कई ग्रंथों की रचना का उल्लेख मिलता है। भोज सामरिक व राजनीतिक दृष्टि से भी शक्तिशाली नरेश रहे। उन्होंने सबसे पहले कोंकण के शिलाहारियों को पराजित किया। तैलप के उत्तराधिकारी विक्रमादित्य चालुक्य को युद्ध में मारकर मुंज की हत्या

का बदला लिया। भोज ने कलचुरि नरेश गांगेयदेव को पराजित किया और गांगेयदेव तथा तेलंग राज्य पर विजय के स्मृति स्वरूप धार में लौह स्तंभ बनवाया। भोज ने तुर्कों को भी पराजित किया और उन्हें मालवा से बाहर खदेड़ दिया था।

परमार राजाओं की परम्परा में राजा भोज परम प्रतापी और तेजस्वी हुये। उनका विद्या प्रेम एवं विद्वानों को आश्रय देने की प्रवृत्ति पूरे भारत में ख्यात थी। उनकी कीर्ति और दानप्रियता सुनकर सुदूर देश से भी लोग उनसे मिलने चले आते थे। भोज सर्वशास्त्रज्ञ अर्थात् शास्त्र विज्ञान के ज्ञाता थे। भोज कवि एवं लेखक भी थे। लगभग सभी विषयों पर उनकी पुस्तकें होने का पता चला है। साहित्य, व्याकरण, कोश, इतिहास, दर्शन, धर्म, ज्योतिष, राजनीति, आयुर्वेद, स्थापत्य, संगीत, युद्ध आदि उनमें प्रमुख हैं।

भोज का शासनकाल ईस्वी संवत् 1010 से 1050 माना जाता है। वे कवियों, विद्वानों, वीरों और ईमानदारों का आदर करते थे और दुष्टों को कठोर दंड देते थे। भोज के दरबार में कवियित्रियाँ भी थीं जिन्हें समुचित सम्मान दिया जाता था। कवयित्री की रचनाओं से खुश होकर भोज द्वारा उन्हें पुरस्कार देने के प्रसंग कई जगह सुनन-पढ़ने को मिलते हैं। मालवा क्षेत्र में आज भी भोज की लोककथाएँ कही-सुनी जाती हैं। लोक साहित्य में भरथरी के बाद सबसे ज्यादा स्थान राजा भोज को ही मिला है जो उनकी लोकप्रियता ही उजागर करता है। भोज की पत्नी का नाम लीलावती था जो सुशील व गणित में प्रवीण थीं।

देवपाल

देवपाल निःसंतान अर्जुनवर्मन के उत्तराधिकारी थे। वे विदिशा शाखा के महाकुमार हरिश्चन्द्र के पुत्र थे। उन्होंने 1216 से 1239 ई. तक शासन किया। उनके राज्यकाल को परमार सत्ता का गोधूलि कहा जाता है। उनके राज्यकाल में परमारों के विभिन्न क्षेत्र एक बार फिर संयुक्त हो गये थे। अभिलेखों से ज्ञात होता है कि देवपाल का शासन पूर्व में उदयपुर, दक्षिण में निमाड़ तथा पश्चिम में भड़ोच तक था। गुजरात के चालुक्य और देवगिरि के यादवों के साथ उनका संघर्ष चलता रहा।

उत्तर भारत में मोहम्मद गोरी द्वारा दिल्ली में दास वंश का राज्य स्थापित करने के बाद उसके सुल्तान इल्तुतमिश ने सन् 1234 ई. में भेलसा पर आक्रमण कर दिया और उज्जैन के महाकाल मंदिर को नष्ट कर दिया जिसके निर्माण में 300 वर्ष लगे थे। इन मुस्लिम आततायियों ने मालवा को खूब लूटा। उनके लौटने पर परमार फिर विदिशा जीतने में सफल हुये। देवपाल परमारों का अंतिम उल्लेखनीय शासक था। चौतरफा विपदाओं के बावजूद वे निर्माण व विद्वानों के संरक्षक बने रहे। हरसूद और मांधाता में प्राप्त दानपत्रों के अनुसार देवपाल देव ने महिष्मती में नर्मदा तट पर चन्द्रग्रहण के समय ई.स. 1225 में ब्राह्मणों को अपने राज्य के गांव दान में दिये थे।

पूर्वज नरेशों की देन

परमारों का शासन मालवा की कला और संस्कृति का एक उज्जवल और गौरवशाली अध्याय है। परमारों की वास्तु दृष्टि बड़ी लचीली और प्रयोगशील रही है। उनके समय वास्तुकारों ने कुछ वास्तु मूल्यों को विकसित किया और मूल्यों के मामले में अनुशासन भी बनाये रखें।

परमार नरेशों द्वारा निर्मित मंदिर भूमिज शैली के हैं, जिनकी योजना पंचरथ या सप्तरथ होती थी। शिखर तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह भूमियों के होते थे। इनमें स्थायी शुकनासा होती थी। भूमिज मंदिरों का सबसे श्रेष्ठ और पूर्ण प्रमाण उद्देश्वर का मंदिर है। भोज के उत्तराधिकारी जयसिंह देव जैन धर्म से प्रभावित थे। परमार नरेश उदयादित्य ने ऊन के प्रसिद्ध जैन मंदिरों को पल्लवित होने के पर्याप्त अवसर दिये। नरवर्मन ने भी इस दिशा में काफी कार्य किये।

परमार काल में शैव मत की चौमुखी प्रगति हुई। सीयक द्वितीय शैव मतावलम्बी थे। सिंधुराज और भोज भी शैव मत के प्रबल समर्थक थे। उदयादित्य का राज्यकाल शैव धर्म के लिये स्वर्णकाल था। ऊन के महाकालेश्वर, नीलकंठेश्वर व वल्लालेश्वर के शैव मंदिरों का निर्माण उदयादित्य के समय ही हुआ। उज्जैन का महाकालेश्वर मंदिर का उन्होंने पुनर्निर्माण कराया था।

यह परमारों के लिये गर्व का विषय था कि द्वादश ज्योतिर्लिंगों में महाकालेश्वर

एवं ओंकारेश्वर उनके राज्य में थे। परमारों ने अनेक शिव मंदिर बनाये इसके कई परोक्ष और प्रत्यक्ष प्रमाण मिलते हैं।

उदयेश्वर मंदिर पाषाण पर लिखी धार्मिक कविता है। सत्यं-शिवं-सुन्दरं के जिस सिद्धांत का कला के रूप में विकास हुआ, परमार नरेश उदयादित्य का यह मंदिर उसका साक्षात स्मारक है। भूमिज शैली का यह उत्कृष्ट उदाहरण है और समस्त समकालीन भारतीय मंदिरों में यह अद्वितीय है। वस्तुत: यह वास्तुरत्न कलाकारों द्वारा तराशा गया समतल व वृत्ताकार रेखाओं का संतुलित उदाहरण है। उदयेश्वर के अलावा कड़वाहा का महादेव मंदिर मंडपमय मंदिर विश्व में अमण्डप मय सौन्दर्य है। राजा भोज का बनाया हुआ शैव मंदिर भोजपुर में है, जिसके शिवलिंग की ऊंचाई 2.25 मीटर है एवं जलधारी का व्यास 6.60 मीटर है। इस मंदिर के शिखर की ऊँचाई 19.50 से 21.00 मीटर तक मानी जाती है। धार परमारों की अत्यन्त प्रिय नगरी और राजधानी रही है। यहाँ मुंज, भोज, उदयादित्य, देवपाल आदि ने अपने आराध्य देव के कई मंदिर बनवाये परन्तु मुस्लिम आक्रान्ताओं की हथौड़ियों ने सब कुछ नष्ट कर दिया।

परमारकाल में विष्णु पूजा पर्याप्त लोकप्रिय थी। सीयक द्वितीय, अर्जुनवर्मन, जयवर्मन व देवपाल के तामपत्र स तथ्य को प्रमाणित करते हैं। ग्यारसपुर, आज्ञापुरी, मांधाता, उज्जैन, देवास, शाजापुर, बुंजर, दूदाखेड़ी, हिंगलाजगढ़, मोड़ी आदि स्थानों पर वराह, शेषशायी विष्णु, गरूड़ारूढ़ विष्णु आदि की अनेक प्रतिमाएं प्राप्त हुई हैं जो परमारकालीन हैं। परमारकाल में शक्ति की उपासना एक महत्वपूर्ण धार्मिक विधा थी। महालक्ष्मी, सीता, वैष्णवी, ब्राह्मणी, रूद्राणी, पार्वती, काली, उमा, चामुण्डा, चण्डिका, महिषासुर मर्दिनी, गौरी, भैरवी, गणेशानी, ऋद्धि,-सिद्धि, सूर्याणी आदि कई मूर्तियाँ इस काल में सामने आई, रूणीजा का नवदुर्गा मंदिर, उज्जैन का चौबीस खम्बा इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

परमार नरेशों की साहित्यिक अभिरुचि से विद्या की अधिष्ठात्री सरस्वती को भी आदर मिला और सरस्वती के कई मंदिर निर्मित हुए। विदिशा का बीजामंडल मंदिर विजयादेवी का मंदिर था जिसे बाद में मस्जिद में बदल दिया गया। भोज द्वारा धार में निर्मित सरस्वती शाला को भी आक्रान्ताओं ने नहीं बख्शा।

सूर्य देवता के कई स्वतंत्र मंदिर परमार नरेशों ने बनवाये। सूर्य की राज्ञी, निक्षुभा, छाया, सुवर्चला रानियों में से कहीं न कहीं उत्कीर्ण हुई हैं। उज्जैन, हिंगलाजगढ़, कागपुर, आशापुरी आदि स्थानों पर सूर्याओं की प्रतिमाएँ मिली हैं।

सूर्य के चार पुत्र माने गये हैं जिनके नाम रेवन्त, यम, मनु और द्विनय हैं। इनकी भी प्रतिमाएँ परमारकाल में निर्मित की गई। सूर्य का उल्लेखनीय मंदिर झालरापाटन है।

परमारकाल मंदिर निर्माण की दृष्टि से मालवा का स्वर्णयुग रहा। मालवा की उस काल की कोई जीवित या लुप्त बस्ती ऐसी नहीं है जहाँ परमारकालीन मंदिरों ने परोक्ष या प्रत्यक्ष अवशेष न छोड़े हों। 13वीं शताब्दी के अंत तक परमार शक्ति अपना अस्तित्व खो बैठी और उसी के साथ मालवा से इतिहास का प्राचीनकाल विदा हो गया। 13वीं और 14वीं शताब्दी के मालवा ने विधर्मियों के आक्रमण के दुस्सह भोग भोगे। चारों और लूट, विध्वंस, बलात्कार, हिंसा एवं भौतिक आपाधापी के दृश्य दिखाई दिये। नगर व गाँव उजाड़ दिये गये। मंदिर ध्वस्त किये गये, मूर्तियाँ भग्न की गई और उनसे जुड़ी सम्पदा का तिनका बीन लिया गया। यह लोक आस्था, लोक श्रद्धा और लोक-त्याग-तपस्या ही थी जिसने इसके बाद की शताब्दियों में भी इन सारी परिस्थितियों के होते हुए भी मंदिर निर्माण की परम्परा जारी रखी और ध्वस्त मंदिरों का पुनर्निर्माण करते हुए अपनी धार्मिक चेतना को जारी रखा।

Boyar से भोयर तक का विश्व सफर

Boyar का अर्थ होता है योद्धा। इसका एक अर्थ होता है–समूह का नेता। अंग्रेज भ का उच्चारण ब ही करते हैं। वे भोयर को बोयर ही उच्चारित कर सकते हैं। आन्ध्रप्रदेश के बोया को नायडू कहा जाता है। तमिलनाडु में बोयर कहलाते हैं। ऐसा माना जाता है कि क्षत्रिय वंश की व्यूत्पत्ति इन्हीं ये हुई है। संस्कृत साहित्य में पहाड़ों में रहने वाले कहा जाता है विशेषकर हिमालय और उत्तर पूर्व भारत में। बोया जाति किरात लोगों के रूप में जानी जाती है। महाभारत के वनपर्व और किरात पर्व में इसका उल्लेख किया गया है जिसमें इन्हें योद्धा या पहाड़ी कहा गया है। किरात का राज्य नेपाल,भूटान व महाभारत में फैला हुआ था। महाभारत में उल्लेख है कि भीम विदेह से मिलता है जो हिमालय के रहवासी थे तथा देखने में स्वर्ण के समान और पीले होते थे। वे शिव भक्त कहलाते थे।

रूस में भी बोयर शब्द का उपयोग होता है। ऐसा माना जाता है कि बोयर 5 वीं सदी में तुर्की, आयरलेंड, रोमानिया से आए। रूस एवं बल्गारिया में इसे भारत से जोड़कर देखा जाता है। बोयर का मूल शब्द है बोई–जिसका अभिप्राय है–महान्, कुलीन। तुर्की में बोलिया शब्द है जिसका अभिप्राय भी महान् और कुलीन ही है।यूरोप ,अमेरिका अफ्रीका में भी बोयर शब्द प्रचलन में है और इसका उपयोग उच्च व कुलीन लोगों के लिए किया जाता है। यह भी कहा जाता है कि बोयर शब्द तुर्की का है। 9 वीं–10 वीं सदी में यह शब्द रोमानिया पहुँचा। वहॉ से बुल्गारिया, लुथियाना और सरबिया पहुँचा। 10वी व 12 वीं सदी में बोयर अभिजात वर्ग के लिए उपयोग में लाया जाता था। अमेरिका में बोयर बोई से निकला है। बोया सुडान से कसाला आए एवं नाइजिरिया होते हुए इजराइल पहुॅचे। वे दमिश्क के असीरियन प्रांत में बसे जहॉ से महाराष्ट्र आए और कोंकण जीता। डॉ अटलसिंह के अनुसार पवार वंश अग्निकुलीन है जिनकी उत्पत्ति अजीयन शब्द से हुई।

इतिहास– किरात का अर्थ होता है–गढ़ या किला। ऐसा माना जाता है कि 2400 ईसा पूर्व मेसोपोटामिया या असीरियन देश में उन्होंने एक देश बनाया तथा वे काबुल, काश्मीर, कराकोरम और हिमालयीन क्षेत्र तक फैल गए। पं. भार्गव द्वारा रचित "भारत का वृहद इतिहास" नामक पुस्तक में उल्लेख है कि सिन्धु घाटी, हड़प्पा और मोहनजोदड़ों में उनकी कालोनी थी। ये कालोनी वैदिक काल से पहले की मानी जाती है। किरात अंतिम शासन के बाद ग्रीक, रोम, बेबीलोन, परशिया,तुर्क और भारत में बॅट गए थे। कई सालों बाद किरात राजपूत कहलाने लगे। इन सभी से आर्यन हिन्दू धर्म अपनाकर क्षत्रिय बनें। बोया ब्राह्मणों में लोकप्रिय गोत्र है–भारद्वाज, कश्यप, कनौदिया, पाराशर।

महाभारत में कथा है महाभारत युद्ध के पूर्व अर्जुन तप करने और भगवान शिव से पसुपतशास्त्र प्राप्त करने के उद्देश्य से 4 पांडवों और द्रौपदी को छोड़कर इन्द्रनील पर्वत पर गए तो किरात द्वारा उन्हें रोक लिया गया और अर्जुन को युद्ध में परास्त कर दिया गया। अर्जुन ने किरात से माफी मॉगी थी। कहते हैं, बोया का तात्पर्य है भगवान शिव की प्रतिकृति। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि हुमायुँ की जीवनी परमारों द्वारा लिखी गई थी। धारानगर और उज्जैन के मध्य पवार प्रांत हुआ करता था। महमूद गजवनी के आक्रमण के समय यहॉ से पवार उत्तरप्रदेश की ओर बढ़ गए थे।भारत में पवार राजस्थान, उत्तरप्रदेश, उत्तराखंड, हरयाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, आदि राज्यों में पाए जाते हैं।

पवारों की उत्पत्ति–महाभारत के अनुसार पवारों का जन्म पुहार से माना जाता है जिसका अर्थ होता है–अग्नि।

इतिहास–पवार धारा नगर से संबंधित माने जाते हैं। बॉसवाड़ा अभिलेख और शिलालेख में सियक को भोज का पूर्वज बताया गया है। सियक का पुत्र वाकपतिराज था। वाकपतिराज का पुत्र सिन्धुराज व सिन्धुराज का पुत्र था भोजराज।

पवार खाप (उ.प्र.) ककड़ीपुर, ऐलम, नाला, भारसी, भनेडा, ईदरिशपुर,

दौघट, मुज्जफरनगर, मेरठ, गाजियाबाद, बागपत, सहारनपुर, उत्तराखंड–बद्रीनाथ, आदि स्थानों पर पवार बसे हुए हैं।

महाराष्ट्र–नागपुर, अमरावती, वर्धा, पूना, में पवार बसे हुए हैं।

म.प्र. में मंदसौर, नीमच, रतलाम, बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट में पवार बसे हुए हैं।

हरयाणा–पानीपत, झाझा, हिसार, करनाल और जींद में पवार बसे हुए हैं।

दिल्ली–शाहपुर, जाट, बेर, सरई में पवार बसे हुए हैं।

पंजाब– होशियारपुर, जालंधर। इसके साथ ही कर्नाटक,केरल व आन्ध्रप्रदेश में भी पवार बसे हुए है।

पवारों की समृद्ध संस्कृति

आयुध–तीन प्रकार के होते हैं–प्रहरण जैसे तलवार। हस्तमुक्त जैसे चक्र, भाला, बरछी। यंत्रमुक्त जैसे तीर, बंदूक, तोप।

64 कलाएं–शुक्रनीति और कामसूत्र के अनुसार 64 कलाएं होती हैं–1.गायन, 2.वादन, 3.नृत्य, 4.नाट्य, 5.चित्रकला, 6.तिलक लगाने की कला, 7.चौक पूरना, अल्पना डालना, 8.पुष्पों की सेज बनाना, 9. अंग रागादि लेपन, 10.पच्चीकारी, 11.शयन रचन, 12.जलतरंग बजाना, 13. पानी के खेल, 14.चित्रयोग 15.माल्यग्रन्थन, 16.सिर में अनेक प्रकार के फूल सजाना, 17.देशकाल के अनुरूप वस्त्र धारण करना, 18.हाथी दॉत और शंख के कर्णफूल बनाना, 19.सुगंधित पदार्थ बनाना और उपयोग, 20.भूषण योजना, 21.जादूगरी, 22.हस्तलाघव, 23.कुरूप को सुंदर बनाना 24.विविध प्रकार के व्यंजन बनाना, 25.शर्बत,शराब बनाना, 26.सूचीकर्म, 27.सूत्रक्रीड़ा, 28.पहेलिया, 29.अंत्याक्षरी, 30. कठिन शब्दों को पढ़ना, 31. पुस्तकवाचन, 32. नाट्यकला दर्शन, 33.समस्यापूर्ति, 34.मेज, कुर्सी, पलंग बुनना, 35. तर्क करना, 36.बढ़ई का काम, 37.वास्तुविद्या, 38.धातु परीक्षा, 39.धातु साफ करना, 40.रत्नादि का ज्ञान, 41.बागवानी, 42.तीतर,बटेर,मुर्गा

लड़ना, 43.चिड़ीबाजी, 44.उबटन बनाना,लगाना,मालिश करना, 45. केशमार्जनकौशल, 46.संक्षेप में लिखा हुआ पढ़ना, 47.शब्दों का गुढ़ अर्थ समझना, 48.देश–देश की भाषा समझना, 49.बच्चों के लिए फूलों की गाड़ी बनाना, 50.गुप्त बातों को वर्तमान संदर्भ में बतलाना, 51.यंत्रमात्रिका, 52.बिना पढ़े हुए को दूसरे से सुनकर पढ़ना या सुनाना, 53.स्मरण शक्ति बढ़ाना, 54.आशुकाव्य रचना,दूसरे के मन की बात जानना, 55.कोष रचना, 56.छंदों का ज्ञान, 57.काव्य रचना हेतु अंलकारों का ज्ञान, 58. ऐयारी, 59.वस्त्रगोपन, 60.द्यूतक्रीड़ा, 61.खिलौने बनाना, 62.विनय और विजय के उपाय, 63.पॉसा खेलना, 64.वैतालिकी व्यायामिकी विद्या.

धर्म के दस लक्षण–अहिंसा, क्षमा, अस्तेय, सत्य, श्रद्धा, इन्द्रियसंयम, यज्ञ, तप, ज्ञान, अपरिग्रह।

पूजा–16 प्रकार की होती है–आवाहन, स्थापन, पाद्य, सिंहासन, अर्ध, आचमन, स्नान, चंदन, फूल, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, प्रदक्षिणा, नमस्कार, आरती।

प्रहर–पूर्वाह्न, मध्याह्न, अपराह्न, सायं, प्रदोष/रजनीमुख, निशीथ, त्रियामा, उषा/भोर/ब्राह्ममुहूर्त।

स्त्रियों के 12 भूषण–रूप, शील, सत्यवादी, श्रृंगार किए रहना, धर्म करना, मधुर वचन, अंतःकरण व बाह्य शुद्ध रखना, पति का भाव रखना, पति की सेवा करना, सहनशीलता, रति में कुशलता, पतिव्रता।

पवारों के वंश, पदनाम, गोत्र, कुलदेवी व झंडे की जानकारी

अग्निवंशीय 24, सूर्यवंशीय 21, चन्द्रवंशीय 18 व ऋषिवंशीय 9–कुल 72 पवार वीर योद्धाओं पर केन्द्रित इकाई

क	वंश के नाम	सरनेम/ पदनाम	गोत्र	कुलदेवी	झंडा/निशान
1.	अग्निवंश	1.डोंगरदिया	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	2.डिगरसे	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	3.खपरिया	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	4.दुखी	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	5.किरंजकार	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	6.बारंगा	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	7.परिहार	भारद्वाज	काली देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	8.चिकनिया	वत्स	आशापुरी देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	9.देवासिया	वत्स	आशापुरी देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	10.धारफोड़िया	वत्स	आशापुरी देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	11.रावत	वत्स	आशापुरी देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	12.हजारिया	वत्स	आशापुरी देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	13.पठाड़िया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	14.गाड़किया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	15.फरकाड़िया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	16.गिरहारिया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	17.लबाड़	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	18.डालू	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	19.सवाई	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	20.ढोलिया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	21.उकार	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	22.टोपरिया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	23.लावरी	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
	अग्निवंश	24.माटिया	वशिष्ठ	दुर्गा देवी	लाल सुनहरी झंडी
2.	सूर्यवंश	1.रोलकिया	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी

क	वंश के नाम	सरनेम/पदनाम	गोत्र	कुलदेवी	झंडा/निशान
	सूर्यवंश	2.गकड़िया	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	3.पाठा	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	4.चौधरी	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	5.मानमोड़िया	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	6.देशमुख	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	7.हिंगवा	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	8.गोहितिया	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	9.गोनदिया	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	10.ढोटा	गौतम	चंडिका देवी	लाल सुनहरी झंडी
	सूर्यवंश	11.ढोंडी	गौतम	कच्छपवाहिनी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	12.कामड़ी	गौतम	कच्छपवाहिनी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	13.मुनी	गौतम	कच्छपवाहिनी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	14.कोड़लिया	गौतम	कच्छपवाहिनी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	15.कालभूत	गौतम	कच्छपवाहिनी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	16.उकड़लिया	गौतम	कच्छपवाहिनी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	17.घाघरिया	गौतम	राठेश्वरी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	18.रबड़िया	गौतम	राठेश्वरी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	19.पिंजारा	गौतम	राठेश्वरी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	20.किंकर	गौतम	राठेश्वरी देवी	पंचरंगा
	सूर्यवंश	21.गोरिया	गौतम	राठेश्वरी देवी	पंचरंगा
3.	चंद्रवंश	1.गाडरी	भारद्वाज	महाकाली देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	2.कसाई	भारद्वाज	महाकाली देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	3.सरोदिया	गर्ग	महाकाली देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	4.बोबड़ा	गर्ग	महाकाली देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	5.बरगाड़िया	अत्रि	महालक्ष्मी देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	6.बोगाना	अत्रि	महालक्ष्मी देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	7.बुहाड़िया	अत्रि	महालक्ष्मी देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	8.बरखेड़िया	अत्रि	महालक्ष्मी देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	9.बोबाट	भारद्वाज	चण्डी देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	10.खौसी	भारद्वाज	चण्डी देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	11.नाड़ीतोड़	कश्यप	कालिका देवी	पंचरंगा

क	वंश के नाम	सरनेम/पदनाम	गोत्र	कुलदेवी	झंडा/निशान
	चंद्रवंश	12.खरगोशिया	कश्यप	कालिका देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	13.ढुडारिया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	14.बारबुहारा	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	15.भादिया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	16.कड़वा	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	17.रमधम	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	चंद्रवंश	18.बड़नगरिया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
4.	ऋषिवंश	1.करदातिया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	2.चोपड़िया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	3.लोखड़िया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	4.शेरकिया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	5.बड़गरिया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	6.ठावरी	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	7.ठुस्सी	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	8.लाड़किया	काण्डवायन	कालिका देवी	पंचरंगा
	ऋषिवंश	9..ढोबरिया	काण्डवायन	दधीमाता देवी	पंचरंगा

खंड–4

लोक साहित्य

लोक साहित्य लोक की लाज होता है. यह इतना ललित, लतीफ, लाजवाब और माधुर्य से लथपथ होता है कि सारा लोक इसपर लट्टू हो जाता है. इसकी लोकप्रियता का यही राज है कि इसमें लोक लीला के साथ साथ लोक लीन होता है. लोक साहित्य में लोक की लीक और लीला ध्वनित होती है. यह एक कण्ठ से दूसरे कण्ठ में जाता हुआ समस्त समाज में समाहित हो जाता है. स्मरण के सहारे इस लोक साहित्य की सम्पत्ति को पीढ़ी दर पीढ़ी सौंपा जाता है. लोक साहित्य लोक हृदय का लावण्य है. इसमें लोक जीवन जीवंत रहता है. लोक साहित्य में भावधारा पूरे समय प्रवाहित होती रहती है. इसमें इसकी व्यंजना अधिक होती है.

सामान्य जन के संवेदनशील एवं भावुक हृदय के स्वाभाविक उद्गार छंदबद्ध होकर प्रस्फूटित होते हैं तो ये भाव हृदय के बोझ को हल्का करते हैं. लोकगीत लय के बिना अधूरा होता है. इसलिये इसे बोलने की अपेक्षा गाकर अभिव्यक्त किया जाता है. इसमें लोक के हर्ष-विषाद, आशा-निराशा, सुख-दुख सभी की अभिव्यक्ति होती है. लोकगीत हृदय के खेत में उगते हैं. सुख के गीत उमंग और उल्लास के जोर से जन्मते हैं तो दुख के गीत विपरीत परिस्थितियों से जूझने पर जन्मते हैं. लोक ने सदियों के घात-प्रतिघात से लोकगीत में आश्रय पाया है. मन की विभिन्न स्थितियों ने इसमें ताने बाने बुने हैं. स्त्री पुरुष ने थककर इसके माधुर्य में अपनी थकान मिटाई है. इसके संगीत में बालक सोए हैं, जवानों में मस्ती छाई है, बूढ़ों ने मन बहलाए हैं. विरही जनों ने मन की कसक मिटाई है, विधवाओं ने एकाकी जीवन की जंग इससे जीती है. पथिकों ने पथरीली राहों में भी पीड़ा की जगह प्रेम को गले लगाया है. किसानों ने अपने खेत जोते हैं, सैनिकों ने जंग में दुश्मनों के दाँत खट्टे किये हैं तो मजदूरों ने विशाल भवनों पर पत्थर चढ़ाए हैं.

लोकगीत का सृजन स्वाभाविक रीति से होता है. वह किसी नीति या नियत नियम के तहत नहीं निथरता, निखरता. लोकगीत हृदय में उत्पन्न होने वाले राग-विराग के सीधे सच्चे भावों का सीधा और निश्छल प्रकटीकरण है. इसमें झरने की

स्वच्छंदता, फूलों की मुस्कराहट, वृक्षों की उदारता, नदी की कलकल की आवाज, पक्षियों का कलरव, बसंत की बहार, कोयल की कूक आदि सब कुछ समाहित होता है. लोकगीतों में लौकिक सभ्यता, लौकिक आचार, लौकिक व्यवहार, लौकिक रीति रिवाज, लौकिक परम्परा प्रतिबिम्बित होती है. जीवन का एक-एक पल भाव रूप धारण कर इसमें समाया होता है.

लोकगीत में वैयक्तिकता का अभाव होता है. इसमें निजत्व को आरोपित नहीं किया जाता. असंख्य स्त्री पुरुषों के समवेत स्वरों से जीवन प्राण पाता रहता है. जिनकी वाणी में मष्तिष्क नहीं हृदय है. स्वार्थ नहीं परमार्थ है. ईर्ष्या नहीं प्रेम का परिमल है. साधारण जनता इसमें गाती है, रोती है, हँसती है, खेलती है. लोकगीतों में मानव हृदय की भाव उर्मियाँ स्वाभाविक रूप से उद्वेलित होकर उठती बैठती रहती है. अपने उद्गारों की अभिव्यक्ति की शुरू से मानव मन की स्वाभाविक प्रकृति रही है. इस तरह इनके सहारे मानव अपनी मूल संस्कृति को संरक्षित करता चलता है.

लोक साहित्य के निर्माण में समाज सदा से सदाशयी भूमिका निभाता रहा है. समाज के प्रांगण में प्रफुल्लित-विकसित सम्पूर्ण मानवी भावनाएँ, विश्वास-मान्यताएं, परम्पराएं रीति नीतियाँ लोक साहित्य की प्रेरक परिस्थितियाँ रही हैं.

विवाह गीत

विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले गीत लोक जीवन को प्रतिबिम्बित करते हैं ये गीत गरीब और अमीर दोनों के यहाँ समान भाव से गाये जाते हैं-

स्नान के समय

कोन बड़े की नांदन बेटी, सवा घड़ा दूध नाह्यो वो

अंगना म चिक्खल सखी, किसने किया वो.

विवाह के अवसर पर गरीब की बेटी भी सवा घड़े दूध से नहाकर आँगन में कीचड़ करती है.

कांकण बाँधते समय

लुगड़ा धोती को दियो इनाम

हरि जो सखी न कांकण बांध्या

काको दियो इनाम

हरि जो सखी न कांकण बांध्या

वर-वधू को जो कांकण बांधते हैं उसे लुगड़ा और धोती इनाम स्वरूप दिये जाते हैं.

मंडप सूतते समय

मंडा सूतन की बघत भई ओ नारी मंझारी

सवास्या कौन देव ओ नारी मंझारी

सवास्या गोरे देव ओ नारी मंझारी

सवासिन कौन बाई ओ नारी मंझारी

सवासिन हीरा बाई ओ नारी मंझारी

मंडप छाते समय

कहाँ सी लायो हरद्या मोंगर वो

कहां सी लाई नांगन बेलनी

हमरा राज कुंवर घर मांडोड़

कौन सो बइल प लायो हरद्या मोंगर वो

चौर्या बइल प लाई नांगन बेलनी वो

हमरा राज कुंवर घर मांडोड़.

- आरू जाजे कोयल बाई बलखंड

आरू लाजे वो जामुन की खोज

धनुती बोलय कोयल

आरू जामुन जो कहे मोह बड़ी

अरू मोहे बिन मंडप नी शोभय

धनुती बोलय कोयल.

आरू जाजे कोयल बाई बलखंड

आरू लाजे वो सवासिन की खोज

आरू सवासिन बोली मोहे बड़ी

आरू मोहे बिन मंडप नी शोभय

धनुती बोलय कोयल.

कालिदास के मेघ की तरह लोक जीवन में कोयल को दूत बनाकर मंडप के लिए जरूरी चीजों की खोज में भेजा जाना उनकी कल्पनाशीलता और पक्षियों के प्रति प्रेम व जुड़ाव दर्शाता है.

खनमिट्टी लाते समय

आरू जाजे कोयल बाई बलखंड

लाजे मट्टी को खोज

मट्टी बोली मेरो बिन मंडवा नी शोभय

धनुती बोलय कोयल.

सगाई गीत

चौका म बठी बारी दुल्हन ओ

बाबूलजी से अरज करे.

अच्छा घर देजो मरा बाबूलजी ओ

बेटी लिल्लोरी घोड़ी प् लानी ओ

चाँदी सोना हम लेन चले...

चउक पर बैठी दुल्हन अपने पिता से अरज करती है कि उसे अच्छे घर में देना-

तोऽऽख दिन बुलायो रे साजन रात काहे आयो रे

तोऽऽख आवत हो गई अरधी रात मरा गहरा मन को सावन रे

हमरी ओसारी का चौका चंदन मिट गया रे

तोऽऽख आवत हो गई अर्धी रात मरा गहरा मन को साजन रे.

साजन की आने की उम्मीद में ओसारी में चौका चंदन उसके स्वागत में बनाया है पर वह आधी रात को आया तब तक वह मिट गया.

असो समधि आलसी बिन मांग को आयो

माँग बाप कह्य लेतो माँग लेखन आतो

असो समधि आलसी, बिन कपड़ा को आयो

बुनकर बाप करा लेतो, कपड़ा लेखन आतो.

असो समधि आलसी, बिन जेवर को आयो

सुनार बाप कह्य लेतो, जेवर लेखन आतो

असो समधि आलसी, बिन पान को आयो

बरई बाप कह्य लेतो, पान लेखन आतो.

असो समधि आलसी, बिन सुपारी को आयो

बनिया बाप कह्य लेतो, सुपारी लेखन आतो.

सगाई में समधी यदि कंजूसी कर ले तो उसकी खैर नहीं. उसे माँग, कपड़े, जेवर, पान सुपारी तो लेकर आना ही है अन्यथा महिलाएँ गीत के जरिये उसकी ऐसी सुध लेती है कि सारा जग हँसते रह जाता है और समधी बेचारा उनके बीच घिरा चुपचाप उनके कटाक्ष सुनते रह जाता है.

भोजन के समय

भोजन हँसी खुशी से कराया जाता है और यहाँ भी समधी और समधी पक्ष के लोगों को भोजन करते समय कान खुले रखने पड़ते है. साथ ही दिमाग भी खुले रखने पड़ते है. ताकि महिलाओं द्वारा पूछी गई पैलोड़ी का उत्तर दिया जा सके. पैलोड़ी बड़ी मजेदार होती है जिसे महिलाएं गाकर पूछती है-

ट भूरी भूरी मूच्छी को डोकरा, हाट हाट बिकाय सुनो सजन हमरी पैलोड़ी,

हमरी पैलोड़ी को अरथ बताय, सुनो सजन हमरी पैलोड़ी

पैलोड़ी होती ही ऐसी है कि उत्तर दिया तो इनाम ऐसा मिलता है कि हँसते हँसते लोट पोट हो जाए. और यदि नहीं दिया तो भी गालियाँ सुनने को मिलती है.

उपर्युक्त पैलोड़ी को अंत में दो तरह से गाया जाता है.

उत्तर देने पर

आरू जीत लीनी हौसी न जीत लीनी तोऽऽख डुक्कर दी रे इनाम

सुनो सजन हमरी पैलोड़ी.

पैलोड़ी जीतने पर समधी को इनाम भी मिला तो डुक्कर (सुअर)

उत्तर न देने पर

आरू नी जीती गंडिया न नी जीती

आरू नी जीती मूरख गंवार

सुनो सजन हमरी पैलोड़ी

पैलोड़ी न जीतने पर मूरख गंवार का खिताब हाथ लगता है. इस तरह पूरी पंगत भर पैलोड़ी का दौर चलता है.

समधी पक्ष की विदाई अवसर पर

खिलाने-पिलाने के बाद समधी पक्ष की विदाई भी हँसी खुशी से की जाती है. समधी को यहाँ भी केन्द्र में रखकर गीत के जरिये ऐसी विदाई दी जाती है-

तू चल्यो समधी तू चल्यो रे, तू ते नाचत चल्यो

हाथ म् दोना ले चल्यो रे, पातर चाट्त चल्यो.

समधी इस गीत पर हंसता है, मुस्कराता है. नाराजगी नहीं पालता. दिल और दिमाग खुले रखकर हर चीज को हल्के फूल्के ढंग से लेता है.

बारात आने पर

गाड़ी सी गाड़ी ठील गई रे मरो रंजन भौरा

केतिक आवय बरात रे मरो रंजन भौरा

पैदल की नहाय गिनती रे मरो रंजन भौरा

हाथी घोड़ा नी मोंजात, रे मरो रंजन भौरा

समधी मांडी प चढ़-चढ़ देखय रे मरो रंजन भौरा

ओकी छाती धड़ाका लेय, रे मरो रंजन भौरा

दार म् डालो पानी, रे मरो रंजन भौरा.

बाराती कितने है यह देखने समधी मांडन पर चढ़ा है. पैदल की कोई गिनती नहीं है और हाथी घोड़े पर भी सवार है. समधी की छाती धड़क रही है. भोजन कम न पड़ जाए इस डर से दाल में पानी डाला जा रहा है.

द्वारचार का गीत

निकलो न ओ बेटी श्याम सुंदरिया

तेरो वर आयो बरबल देश म

कैसी ज निकलू मरी मैया यशोदा

बाबूलजी थाड़े द्वार म्

डाली ले जो घूँघट बेटी ओढ़ ले जो आँचल निर्मल झकोर रे

पड़छने का गीत

दूल्हे के स्वागत में सास उसे पड़छती है उस समय का गीत-

निकलो न सासू स्वागत ल पड़छो जाओ मजा

बेटा पड़छय राजा दशरथ को पड़छो जाजो मजा

सूपड़ा बन्यो मैया बाँस को पड़छो जाजो मजा

दीया बन्यो मैया कनकी को पड़छो जाजो मजा

बत्ती बनी मैया रेशम की पड़छो जाजो मजा

नांदड़ बन्यो मैया कनकी को पड़छो जाजो मजा

मूसर बन्यो मैया खइर को पड़छो जाजो मजा

रई बनी ओ मैया बॉस की पड़छो जाजो मजा

दूल्हे को राजा दशरथ के बेटे राम की तरह देखा जाता है और उसी सम्मान के साथ पड़छा जाता है.

दहेज गीत

दहेज डालने पर दहेज डालने वाले का नाम लेकर गीत गाया जाता है-

बाँटऽऽ की लाड़ऽऽ न लाहूर्‌या लिह्ये ओ

लाहूर्‌या लिह्ये ओ, डालो न गोरे देव दायजा.

विदाई गीत

बेटी की विदाई का दृश्य बड़ा कारुणिक होता है. गीत भी करुण रस से भरा होता है.

चीर-चीर कमढी को पिंजरा बनायो

एना पिंजरा म रह्य नी पाई मरा गोविन्द रे

पिंजरा की मैना मरी उड़ चली

बाँस की कमची छिल छिल कर पिंजरा बनाया है और पिंजरे की बेटी रूपी मैना इसमें रह नहीं पाई और वह उड़ चली.

बाबूलजी रोए ओके सेला भीजे

माय की भीजे गुलसाड़ी रे मरा बाबूलजी की बेटी बिहानी.

काहे ख रोये मरा गहरो सो बाबूल

काहे ख दी परदेश

रे मरा बाबूलजी की बेटी बिहानी

इस तरह लोक साहित्य बड़ा ही समृद्ध और प्रत्येक अवसर केन्द्रित है.

कर्म और करूणा के कारगर गीत : घट्टी गीत

चक्की या घट्टी दो पाटों का एक ऐसा अद्भूत समन्वय है जिसमें एक पाट स्थिर होता है और दूसरा चलता है. इसका स्थिर पाट परम्परा का परिचायक है तो दूसरा पाट गति या विकास का. विकास वही उपादेय है जो परम्परा की जमीन से जुड़ा होता है. आदमी की चाल भी गति और परम्परा की परिचायक है. एक पैर स्थिर होता है तभी आदमी अपना दूसरा पैर उठा पाता है. चलने का यही नियम है, आगे बढ़ने का यही नियम है. केवल परम्परा ही परम्परा या केवल गति ही गति जीवन को न गत दे पाती है न गति. घट्टी जीवन को गत और गति दोनों देती है. गाँव के हर घर में घट्टी की व्यवस्था जीवन को गत और गति प्रदान

करने की चाह का ही परिणाम है. घट्टी न केवल घर के सदस्यों को ताजा आटा देती है, अनाज पीसने वाली के ओठों को गीत देती है अपितु पीसने वाली को स्वास्थ्य के साथ साथ गरिमा भी प्रदान करती है. पीसने वाली महिला इसमें केवल अनाज ही नहीं पीसती वह अपने दुख-दर्द भी पीस डालती है, अंधकार भी पीस डालती है. और यह सब वह केवल सफेद झक आटे के लिए ही नहीं करती वह सफेद झक दिन और सफेद झक भाग्य की उम्मीद में भी करती है. घट्टी से जब आटा झरता है और अनाज पीसने वाली के होठों से गीत झरता है तो दोनों का ऐसा ताल और सुर जमता है कि सुनने वाला भाव विभोर हो जाता है और सोने वाला और गहरी निद्रा में सो जाता है. पूरा घर और आँगन इस ताल और सूर में इतना तल्लीन हो जाता है कि घर के कोठे में बंधे पशु भी जुगाली करना छोड़कर इस गीत और संगीत की ओर अपने कान लगाए बैठ जाते हैं. समय भी यहाँ आकर ठहर जाता है.

सतपुड़ा अंचल की पवित्र नदी ताप्ती पश्चिम को पयान करती है और डूबते सूरज को अर्द्ध चढ़ाती है. सतपुड़ा अंचल की महिलाएं घट्टी गीत के द्वारा अंधेरे की आरती उतारती है और आटे का अर्द्ध चढ़ाती हैं. यहाँ महिलाएँ अनाज ही नहीं पीसती, आटे का अर्द्ध भी चढ़ाती हैं. यह अर्द्ध ऐसी संधि वेला पर चढ़ता है जब अंधकार विदा होने को होता है और प्रकाश का पदार्पण होने को होता है. इस तरह यह अंधकार और प्रकाश की पूजा का पर्व है.

घट्टी गीत कर्म और करुणा के गीत हैं इसमें जहाँ कर्म को गाया जाता है वहीं करुणा को भी गाया जाता है. सतपुड़ा अंचल में लगभग सभी गाँवों में गाये जाने वाले ये गीत भोर के गीत भी कहलाते हैं. ये गीत 3 पंक्ति से लेकर 10 पंक्ति तक के होते हैं. इन गीतों को गाने वाली महिला का स्वर और घट्टी का स्वर इतना एकाकार हो जाता है तथा गाने वाली महिला अपने गीत में इतनी तल्लीन हो जाती है कि घट्टी में दरना उसका दर्द नहीं दवा बन जाता है-

पाँच बोटी की चिमटीनऽऽ

काशी की हिमतीनऽऽ

दरना दरत पस्या की लगय धारी

पाज्यो काशी न दूधऽऽ मरी.

इन गीतों में अक्सर माँ अपनी विवाहित बेटियों के नाम लेती है और बहन बेटियाँ अपने मायके अपने प्रिय भाई-बहन व माँ का नाम लेती हैं-

दूर को पल्ला पड़य बैनी साथी जानू पड़य

बंधूजी आला नेऊ बन्धू का भोजनी

सासू कहा चा रांधू वाडू, मोती चूर का बांध्या लाडू.

उपर्युक्त गीत में भाई बहन को लेने गया है. बहन सास से पूछ रही है भोजन में क्या बनाऊ. मोती चूर के लड्डू?

पति न हाका मारी कवाड़ा आडून

सोन्या का सरोता न देली सुपारी फोडून.

उपर्युक्त गीत में पति दरवाजे की आड़ से अपनी पत्नी को बुला रहा है और पत्नी सोने के सरोते से सुपारी फोड़कर पति को दे रही है.

झना मरना ले जन बसले नइ थड़ी

मरा सत्ता का मारय बूड़ी

मरा मरना ख देर भासरा एक गोत

मरा बंधूजी तिराहित बसले आंगनीत.

उपर्युक्त गीत बड़ा मार्मिक है जिसमें कहा गया है कि मेरे मरने पर लोग नदी किनारे बैठे है और मेरे घरवाले नदी में डुबकी लगा रहे है जबकि मेरे मायके से आए लोग किसी तिराहित (पराए व्यक्ति) की तरह अलग थलग बैठे हैं -

अव पिता का मरना ले, अव नइ का पयली पार

पिता की सरवन जलय, अगासी धुँआ डाटय

बारा को हिरदा भरय, नितरी पानी पड़य.

उपर्युक्त गीत बड़ा कारुणिक है. पिता के मरने पर नदी के उस पार पिता की चिता जल रही है. धुँआ आसमान में डट रहा है. बेटे का दिल भर आया है और आँखों से आँसू टपक रहे हैं.

इस तरह घट्टी गीत जीवन और मृत्यु दोनों के गीत भी है. पीसने वाली महिला पीसते-पीसते जीवन और मृत्यु दोनों का सफर पूरा कर लेती है. पीसने के बाद वह इतनी हल्की फुल्की हो जाती है कि अपना भारी व कठिन जीवन भी उसे हल्का-फुल्का व आसान नजर आने लगता है.

सावन गीत

सावन में गाये जाने के कारण इसे सावन गीत कहा जाता है. मेंहदी लगाते समय महिलाएं इस गीत को गाती हैं. यह मेंहदी गीत भी कहलाता है. इसमें मेंहदी के जन्म से लेकर उसके तोड़ने, बेचने, बाँटने, लगाने और रंगने तक का वर्णन है. भाभी और देवर मेंहदी लगाते हैं. देवर अपना हाथ माँ को दिखाता है. भाभी की मेंहदी देखने वाला कोई नहीं होता. वह एक चिड़िया के द्वारा अपने बाप, माँ, भाई, बहन, भाभी के नाम एक-एक करके संदेशा भेजती है.

गीत का कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत है-

कहाँ सी मैंहदी उपजी बीरा सावन रे
कहाँ रे धर्यो अवतार गुलाबी रंग सावन रे
सर्ग सी मैंहदी उपजी बीरा सावन रे
धरती रे लिन अवतार गुलाबी रंग सावन रे
छोटो सो दिवड़ा लाड़िलो बीरा सावन रे
मेंहदी ले राखन जाय गुलाबी रंग सावन रे
लाओ न भौजाई कोरी टोपली बीरा सावन रे
तोड्हें ओ मैंह्दी का पान गुलाबी रंग सावन रे
तोड़ी तोड़ाई डल्ला भरी बीरा सावन रे
ले चल्या बैतूल बजार गुलाबी रंग सावन रे
ले दे ओ सासू मेंह्दी बीरा सावन रे
मैंहदी का बड़ा बड़ा पान गुलाबी रंग सावन रे
काओ टका तोरी बोह्यनी बीरा सावन रे
का ओ सेर बेचाय गुलाबी रंग सावन रे

रुपया टका मोरी बोह्यनी बीरा सावन रे
दो रुपया ओ सेर बिकाय गुलाबी रंग सावन रे
कहाँ सी लाँऊ सील सिलौटा बीरा सावन रे
कहाँ सी लाऊ दोउ नीर गुलाबी रंग सावन रे
जमना सी लाऊँ सील सिलौटा बीरा सावन रे
जमुना सी लाऊँ दोउ नीर गुलाबी रंग सावन रे
घसमस मैंहदी बाटन्ती बीरा सावन रे
नथनी रे झोका खाय गुलाबी रंग सावन रे
घसमस मैंहदी बाटन्ती बीरा सावन रे
बाजूबंद झोके खाय गुलाबी रंग सावन रे
बाटी बटाई बटका भरी बीरा सावन रे
धर दी रे कोठी का मांझ गुलाबी रंग सावन रे
दिवर्या लगावय चिलिआंग्ठी बीरा सावन रे
भौजाई रचय दोई हाथ गुलाबी रंग सावन रे
कोठी पर दिवल्या लेसंती बीरा सावन रे
परखय दोई दोई हाथ गुलाबी रंग सावन रे
भौजाई की रची काली कोयल बीरा सावन रे
दिवर्‌या की लाल गुलाल गुलाबी रंग सावन रे
दिवर्‌या बताहे ओकी माय सी बीरा सावन रे
भौजाई कोहे बताय गुलाबी रंग सावन रे
सर्ग उड़न्ती चिड़ौली बीरा सावन रे
एक संदेश लेइ जाय गुलाबी रंग सावन रे
बाप मर्यो ओकी खोय मुड़ी बीरा सावन रे
टूट्यो रे चौरी को ख्याल गुलाबी रंग सावन रे
सर्ग उड़न्ती चिड़ौली बीरा सावन रे

दोइ संदेश लेइ जाय गुलाबी रंग सावन रे
माय मरी ओकी खोय मुड़ी बीरा सावन रे
टूट्यो रे रैटट्या को ख्याल गुलाबी रंग सावन रे
सर्ग उड़न्ती चिड़ौली बीरा सावन रे
तीन संदेश लेई जाय गुलाबी रंग सावन रे
भाई मर्यो ओकी खोय मुड़ी बीरा सावन रे
टूट्यो रे भैसी को ख्याल गुलाबी रंग सावन रे
सर्ग उड़न्ती चिड़ौली बीरा सावन रे
चार संदेश लेइ जाय गुलाबी रंग सावन रे
भाउज मरी ओकी खोय मुड़ी बीरा सावन रे
टूट्यो रे डेहरी को ख्याल गुलाबी रंग सावन रे
सर्ग उड़न्ती.....
पाँच संदेश .....
भाई मर्यो ओकी खोय मुड़ी बीरा....
टूट्यो रे चेंडू को ख्याल गुलाबी रंग....
सर्ग उड़न्ती....
छः संदेश ....
बहिन मरी ओकी खोय मुड़ी बीरा...
टूट्यो रे फुतरी को ख्याल गुलाबी...
सर्ग उड़न्ती....
सात संदेश ....
रनिया मरी ओकी खोय मुड़ी ....
लड़का रे दानो दान गुलाबी....

निरन्तर............

लोकोक्ति एवं कहावतें

- आई अखाड़ी आया सन, आई ग्यारस गया सन.
- पानी पिये छान छान, गुरू करे जान जान.
- चोरी को माल मोरी म.
- दमी यार किसके, दम लगाया खिसके.
- सुनो सबकी, करो मन की.
- पूस, घर म घूस.
- चमड़ी जाय, पर दमड़ी नी जाय.
- कातिक कुतिया माघ बिलाई, चैत चिड़िया सदा लुगाई.
- महिला, मांडन, कुँआ, जल और बरगद की छाय।
  ठंडी में गर्मात है, और गर्मी में ठंडाय।।
- भरोसा की भैसी न बोदा दियो.
- कुत्ता ख चउक प बिठावय ते कुत्ता चउक चाटय.
- पास नी कौड़ी, नाक छिदावन दौड़ी
- आयता प रायता लगावय
- मोटो देख डरनूँ नी, दुबलो देख मारनूँ नी.
- मू अउर मरी माय, घर म नी समाय
- तू चल मू आऊ, आगल्या की खबर लाऊ.
- लंगड़ी घोड़ी लाल लगाम, मारे जूता करे सलाम.
- बुड्ढो बइल ख बेगड़ को सवाद.
- जसो देस, तसो भेस, उल्टो लुगड़ा नेस.
- कोठी चा दाना सरू नको, लेकरू माझा मरू नको.
- रह्यो तब तक घी घना, नी ते मुट्ठी भर चना.
- खाय खसम को गावय बीर को.

- आठ हाथ काकड़ी, नौ हाथ बीजा.
- हाथ धरी बेटी, नाथ धर्यो बइल जहाँ चाहो वहाँ ले जाओ.
- घर म बूढ़ी, पंगत म कढ़ी.
- नाच नी जानत आँगन तेढ़ो.
- दही, मूली, खीरा, रात म करय पीरा.
- तम्बाकू, सुपारी, पान, तीन्ही बढ़ावय मान.
- आघऽऽ का पानी पेय, पाछऽऽ का चिक्खल पेय.
- आवय कातिक होय खाज, आवय अषाढ़ जाय खाज
- जेख खाज, तेख नी लाज
- कपड़ा नी लत्ता, पान खाय अलबत्ता.
- खाना म लाडू, सगा म साढ़ू.
- जब सेर भर भीतर, तब देव अउर पित्तर.
- जब लगय अदरा. तब भरय डबरा.
- जू मानत नी स्याना की सीख, ले ढोमनी मॉगय भीख.
- तपय जेठ, ते बरखा होय भरपेट.
- दार भात रोटी, अउर बात खोटी.
- देख रे आँखी, सुन रे कान
- बामन, भइसा, उड़िद दार, पानी माँगय जोरदार.
- बोली लोमड़ी फूली कांस, छोड़ो अब बारिश की आस.
- भीज्या कंडा भीजी ढोल, लौट्यो बराती कौड़ी मोल.
- माटी का चूल्हा घर घर होय.
- मान मनाई खीर नी खाय, जूठी पातर चाटत जाय.
- मुंढा देख बीड़ा, कूल्ला देख पीढ़ा.
- रस्ता की खेती, रांड की बेटी.

- सर बड़ो सरदार को, पाय बड़ो गंवार को.
- सोचय नी समझय, लठ ले ख जूझय.
- माँ सी पूत, पिता सी घोड़ा, ज्यादा नी ते थोड़ा थोड़ा.
- लात को भूत बात सी नी मानत.
- गांडू हत्थी फौज ख भारी.
- खप्ती माँ का उल्लू बेटा, चिराग लेकर हगने बैठा.
- मान न मान, मैं तेरा मेहमान.
- आ रे बड़ा, मुँह में पड़ा.
- बुड्ढा मर्हे कब, स्वारी खाहे कब.
- आधी भाकर प दार झेलनूँ
- कुम्हड़ा को डिशूल होनू
- ओखरी म सिर दियो ते मूस्सर सी का डरनूं
- पाई का पंध्रा, सूर्या का सोला.
- बाई का आया ते ओटा में, भाऊ का आया ते कोठा म.
- देव आयो देन ख, ते पदर नी लेन ख.
- अंधी पानी ख गई, घगरा फोड़ ख घर आई.
- फटी धोती टूटी बाह्य, पोरी देखन फिर भी जाय.
- नींद न देखे टूटी खाट, भूख न देखे बासी भात.
- सड़ल्या की दौड़, बागुड़ तक.
- कब सर्हे सासू, कब आहे आँसू.
- ऐरा गैरा, नत्थू खैरा.
- नाती, चढ़य छाती.
- घर्म नी दाना, मुर्गी करय धिंगाना.
- जेनऽऽ करी शरम, ओका फूट्या करम.

- बाप न मारी मेंढकी, बेटा तीरंदाज
- तेली जोड़य धारो धार, खुदा ले जाय एकच बार.
- काक म् पोरया, गाँव म् ढिंढोरा.

चिन्हन की काह्यनी

- कारी गाय काटा खाय, पानी ख देख चमकत जाय.
- हाथ सी छूटी ते भोभाय उठी.
- एक आड़ा की झोपड़ी ओम नव लाख गाय समाय.
- बाबा सुवय या घर्म्, पाय पसारय वा घर्म्.
- बालपन म कारा कारा, जवानी म लालम लाल, बूढ़ोपन म बकरी को कान
- चल चल भई, पसर गई.
- चार भाई चार रंग, फूल खिलय एक रंग
- पाँच भाई पांच रंग, सालू बांधय एक संग
- मूॅ कटू, तू काहे रुवय.
- काली थी कलूटी थी, काले वन में रहती थी, लाल पानी पीती थी.
- एक मंदिर म तीस देव.
- एक छोटो सो पोर्‍या सालू बाँध बांध फिरय
- सर सराटा उप्पर काँटा, जीनी चिन्हें तेको बाप मराठा.
- हरनी भगय, दूध बगरय
- ठाटी भर मोती, तोसी मोंजाय नी मोसी.
- इत सी गई उगी मुगी, उत सी आई गाल फूगी.
- ओंढो कुँआ भोंडो पानी, ओमऽऽ नाचय दुर्गा रानी.
- या आई वा गई.
- काटय ते कटत नी, मारय ते मरत नी.
- एक आयो भाट ओ न बूनी नौरंगी खाट, बुनतन बुन ली उकलता नी बनी.
- नान्ही सी कोठरी, म कुट्टन डोकरी.
- दिन म सुवय रात म जागय.

उत्तर -1. जूता, 2. थाटी, 3. मैहयरूज, (मधुमक्खी का छत्ता), 4. आड़ा, दीपक, 5. परसा (पलाश) के फूल, 6. बाह्यरी (झाडू), 7. पान, 8. गन्ना, 9. कांदा (प्याज), 10. जूँ, 11. बत्तीसी, 12. ढेरा, 13. गल, 19. छाय (परछाई), 20. अल्पना (रांगोली), 21. जीभ, 22. बन बागुड़ (चमगादड़)

- बारा आया पाव्हणा, रोटी रांधी एक।
  घास-घास सब्न खाई, रह्य गई एक की एक।।

  तना

- एक बाप की दो बेटी, रमकू-झमकू नाम।
  एक खाय खोपरा, दूसरी बाट खाय।।

  तराजू

- सबका पैह्ले मू भयो, मरा पाछऽऽ मरी माय।
  घमा घमी सी भाई भयो, जेका पाछऽऽ भयो बाप।।

  दूध, दही, मही, घी

- दाढ़ी वालो छोकरा, हाट-बजार बिकाय।
  देव का माथा चढ़य, एको अर्थ बताय।।

  नारियल

- लाल फूल गुलाब को, झलमल जिगाय।
  नी माली घर उपजय, नी राजा घर जाय।।

  सूरज

- आई आई सब कव्हय, गई कहे नी कोय।
  आना सी दुख उपजय, जाना सी सुख होय।।

  आँख आना

- चिन्धी बांध्या वा फिरय, माथा आग धराय।
  ओठ प ओख रखय, बूड्ढा का मन भाय।।

  चिलम

- एक अचम्भा हम्न देख्यो, कुँआ म लग गई आग।
  पानी-पानी जल गयो, मछली गोता खाय।।

  चिलम

1. गर्मी में जिससे घबराते जाड़े में हम उसको खाते
   उससे हर चीज चमकती,दुनिया भी खूब दमकती।
2. खुली रात में पैदा होती,हरी घास पर सोती
   मोती जैसी मूरत मेरी, बादल की मैं पोती।
3. छिलका न डंठल,सफेद–सफेद होय
   खाय सारी दुनिया,कहीं पैदा नी होय।
4. प्यार करूँ तो घर चमका दूँ, वार करूँ तो ले लूँ जान
   जंगल में मंगल कर दूँ, कर दूँ शहर वीरान।
5. मुँह खुला और छूट गया एसका अपना देश
   क्या कुछ न बनना पड़ा,बदल–दल कर भेष।
6. एक गॉव असो जेका चारी तरफ पानी
   उत्तर दिहे सही ते कहलाए तुम ज्ञानी।
7. ठंडी हवा संदेशा लाती,तब धरती पर आती
   बच्चों के मन को भाती कृषकों को सुहाती।
8. घास–पात खाकर मैं जीती
   पानी पीते ही मर जाती।
9. लिया काला, वापरा तो लाल
   फेंका सफेद, गजब का माल।
10. पानी मेरा बाप,पानी मेरा बेटा,
    आसमान में रहता,मैं लेटा लेटा।
11. इक नारी का मैला रंग,
    सदा रहे पीय के संग।
12. हमने देखा एक बताशा,पानी में इतराता जाता,
    हवा लगे तो फिर वह नजर नहीं आता।
13. हरे भरे बाग में मोती गिरे अनेक
    माली गया बीनने,बाकी बचा न एक।
14. एक जगह पर खड़ा हुआ हूँ,पर हित करते रहता हूँ
    कार्बनडाईआक्साइड खाकर आक्सीजन देता रहता हूँ।

15. पैदा हुई तो बीस फीट, फिर घटी फीट चार
    घटकर के घटती गई, कैसी है वह नार।
16. देखने में हरी–हरी, लगने पर लाल
    जो भी करे संगत होता लालमलाल।
17. बारह शाखा पेड़ की, बावन उसके फूल
    सात पंखुड़ी फूल की,इसे न जाना भूल।
18. चौड़ा पेट बना है जिसका,जलती जिसमें ज्वाला
    औरों के पेटों की वह नित आग बुझाने वाला।
19. एक नार का पेट न ऑत,
    ऊपर–नीचे दॉत ही दॉत।
20. जंगल में मायका,घर–घर ससुराल।
    घर में लगते ही कचरे का काल।
21. एक नार के पेट में कीली,
    कीली बिन हो जाए ढीली।
22. दो पॉव और दो ही सर,
    ऐसी नार रहे हर घर।
23. सोने की वह चीज है,बिके हाट बाजार।
    पॉव भी उसके चार हैं,चलने से लाचार।
24. रोज मुझे तुम देखते हो,
    साल भर बाद फेंकते हो।
25. काला घोड़ा, सफेद सवारी,
    एक के बाद एक की बारी।
26. बाल नुचे, कपड़े फटे, मोती लिए उतार।
    यह आफत कैसी पड़ी,नंगी कर दी नार।
27. एक फूल फिर भी पत्ता,
    दिल्ली हो या कलकत्ता।
28. मुँह पे मस्सा,पेट में दाढ़ी।
    चूसकर खाए, लाड़ा–लाड़ी।

29. आधा फल हूँ, आधा हूँ फूल,
नाम बताओ, जाना न भूल।
30. तन गठीला,खाने में रसीला।
31. बचपन में होती हरी,पर बुढ़ापे में लाल।
जो भी खाए उसका, हो जाए बुरा हाल।
32. कॉच का महल,कचनार की कली,
अमृत की बूँद, मिश्री की डली।
33. गोरी नारी, पहनी हरी सारी।
34. बाहर बाल भीतर पानी, बीच में सुंदर काया।
जिसने पाया बड़े चाव से, तोड़–तोड़कर खाया।
35. हरा चबूतरा,लाल मकान
जिसमें बैठे काले पठान।
36. बाहर से हरा,पर अंदर से लाल
खाने में मीठा, पर मोटी खाल।
37. दूध का पोता, दही का बच्चा
लोग जिसको, खाते कच्चा।
38. एक मिठाई खेत में, खड़ी खड़ी इठलाय
महीनों तक ताजा रहे, ना वह मुरझाय।
39. एक मिठाई है लगी, झाड़ी बीचों बीच,
खाना भाई घ्यान से,खड़े सिपाही तीस।
40. रंग बिरंगी,ठंडी मीठी,सबके मन को भाती
नर–नारी बच्चे बूढ़े, सबको ही ललचाती।
41. पूरी तो भी पूरी, आधी तो भी पूरी।
42. कॉटे बीच पैदा हुए,खाए जग संसार
शबरी देती प्रेम से खाए पालनहार।
43. एक घर में सोना रखा, चॉदी की दीवार
जाने को रस्ता नहीं,बाहर से ही पुकार।
44. एक गेंद में रहता पानी,
आधा सोना, आधा चॉदी।

45. छोटे से सूरदास
कपड़े पहने सौ पचास।
46. छोटा सा फकीर,
पेट में लकीर।
47. इसमें एक अनोखी बात,
मुॅह कड़वा पर मीठा गात।
48. जला तो सबके मन भाया,
बूझा तो कुछ काम न आया।
49. न पहने न खावे,
बूढ़ों को राह दिखावे।
50. छोटा सा घर तुरत बनाऊं,
मक्खी मच्छर दूर भगाऊं।
51. आधा लोहा आधा लकड़ी,एक तरफ रखता है धार,
बालों का वह होता दुश्मन,करता उनका बेड़ा पार।
52. आगे घेरा पीछे घेरा,जंजीर बॅधी पॉवों में,
सरपट वह दौड़ा करती, शहर–गॉवों में।

उत्तर– 1. धूप 2. ओस 3. ओला 4. बिजली 5. कपास 6. पृथ्वी 7.बारिश 8. आग 9.कोयला 10.बादल 11.परछाई 12.बुलबुला 13. ओस की बूॅदें 14.पेड़ 15. परछाई 16. मेंहदी 17.साल 18. चूल्हा 19. कंघी 20. झाड़ू 21.कैंची 22.कैंची 23.खटिया 24.कलेण्डर 25.तवा और रोटी 26. भुट्टा 27.बंदगोभी 28.आम 29.गुलाजामुन 30.गन्ना 31.मिर्चा 32.अंगूर 33. मूली 34. नारियल 35.तरबूज 36.तरबूज 37.छाछ 38. गन्ना 39. शहद 40. कुल्फी 41.पूरी 42.बेर 43.अण्डा 44.अण्डा 45.प्याज 46.गेहूँ 47.ककड़ी 48. दीया 49.लाठी 50.मच्छरदानी 51. उस्तरा 52.सायकल.

चिह्नन की काह्यनी

01. कारो बाप, हरी महतारी, ओकी बेटी परम पियारी।

02. खाय भी पहनय भी।

03. एक चीज का नाम बताए, हर धरम के लोग खाए।

04. घाम म् जिंदो छाय म् मर जाय, काम करय उपजय, हवा सी मर जाय।

05. दरवाजा प खड़ो घोड़ा, आता–जाता पेट मरोड़ा।

06. हय छोटो पर बड़ा कहाऊं, डूब दही म् मू नहाऊं।

07. कटोरा म् कटोरा, बेटा बाप सी भी गोरा।

08. देखो एक अनोखी नारी, पाय सी वा पेय पानी।

09. एक नार,सींग हजार, साफ करय घूम बजार।

10. नान्हो सो वीर, गाना गा ख् मारय तीर।

11. जरा सी चुहिया, गज भर चुटिया।

12. अगल–बगल घास–फूॅस,बीच म् तबेला, दिन भर भीड़–भाड़,रात म् अकेला।

13. मू असी रानी, सिंहासन नी जानी।

14. जंगल सी घर आई,यहॉ छिदाया कान, पंगतम् जेवन करय घर का मेहमान

15. एक कुआं म् भर्यो हय पानी,जे म् नहावय लाल भवानी।

16. एक किला का दो रखवाला, दुही लम्बा दुही काला।

17. तीन पाय की तितली, नहा धो ख् निकली।

18. काकी का दो कान, काका का एक नी,काकी समझदार,काका ख् अकल नी।

19. चार ड्रायवर,एक सवारी, आध–पाछ रिश्तेदारी।

20. कारो तलाब,कारो पानी, ओ म् कूदी चंदा रानी।

21. एक किला म् खिड़की–खिड़की, ओ म् नी कुई किवाड़,
राजा–रानी दीवाल तोड़य, नी खिड़की नी किवाड़।

22. रेशम की डोली म् बुलबुल को अण्डा, जल्दी बताओ नी ते पड़हे डण्डा।

23. चार खूॅट को चबूतरा,नब्बे गज को दोर। बाल–बच्चा खेल्हे,तब नाच्हे मोर।

24. पेट कट्यो,मुंढा फट्यो,गयो बीच दरबार।जाता इज्जत मिली,कर्यो खूब हुंकार

25. धूप–छांव म् काम नी, फिर भी अराम नी।

26. देखो जादूगर को कमाल, कर देय हरो ख् लाल।

27. चार छेद का पहिया,सबका पास हय भइया।

28. दुही भाई न्यारा–न्यारा,साथ रव्हय प्यारा–प्यारा।

29. सींग हय पर काठी नी,काठी हय पर घोड़ा नी,
चलय पर कार नी, घंटी हय पर किवाड़ नी।

30. पूंछ सी मू पानी पिऊ, बिन पानी मू मर जाऊ।

31. जब तब मन म् रव्हय, तब तक तन दुबलो रव्हय।

32. आगर देख्यो,सागर देख्यो अऊर देख्यो कलकत्ता।
एक अजूबा हम्न देख्यो, फल का ऊप्पर पत्ता।

33. छोटो सो मनीराम छोटी सी पूंछ,जहॉ गयो मनीराम, वहॉ गई पूंछ।

34. लोहा की रानी, चलूॅ मस्तानी,कपड़ा सीऊ सबका,पोती हो या नानी।

35. खरीदना म् काला,जलाना म् लाल। फेंकना म् उजरा,वा भई कमाल।

36. एक जीव को नाम बतावे, बिन आगी जोत जलावे।
37. माचिस सी जलत नी, फूंक सी बूझत नी, रात म् काम मरो, दिन म् कुई काम नी
38. सुनना म् अटपटी, कह्‌यना म् चटपटी, उत्तर सरल पर, करय माथा पच्ची।
39. घाम म् साथ देय, छाव म् नी, कब साथ छोड़ दिहे, कह्‌य सकत नी।
40. एक पाय प् खड़ी रहूँ, खड़ी–खड़ी रूवत रहूँ।
41. भइया सुनो हमारो हाल, बचपन हरो जवानी लाल।
42. काली हूँ पर काग नहीं,लम्बी हूँ पर सॉप नहीं,बलखाती पर दोर नहीं।
43. बाहर हरी भीतर काली, पर सवाद म् निराली।
44. पेड़ नी पत्ता नी, नी कुई बांस। खाय सब मजा सी,रव्हय सबका पास।
45. ओको रंग डोरा म् समाय। बिना पंख ऊ उड़ जाय।
46. फूल भी फल भी जी, जनम कढ़ाई म् जी।
47. कुई म् दो,कुई म् तीन, कुई म् एख्लो।खाना म् मजेदार,खा ख् देख लेव।
48. नी कई पेय नी कई खाय,मार पड़य ते शोर मचाय।
49. सिर म् कलगी ,पंख म् चंदा। गरजय बादर,नाचय बंदा।
51. आग म् फूल ख् कुप्पा होय। खा ख् ओख् सब खुश होय।
52. हरो आटा,लाल परांठा,सब सखी ने मिलकर बांटा।
53. दिखना म लक्कड़,खाना म् शक्कर।
54. उजरा पाय, उजरा हाथ। रूवय अकेली आवय रात।
55. हिलय न डुलय, फिर भी चलय।

56. पानी का चोला,चंदा सा गोरा। पकड़्हे मख् ते हाथ ठिठुरे तोरा।
57. हरा कपड़ा, पेरी काया। भूख लग्हे ते सेक ख् खाया।
58. कद म् छोटो,काठी म् हीन। बीन बजाना म् शौकीन।
59. अंधा नी जानत,काना नी पह्‌चानत, ऑख प् चढ़ूँ ओको पेट नी भरत।
60. कभी फूॅल,कभी कली। बारिस म् मू लगू भली।
61. खाता न पीता ,न कभी चलता,घर की सबकी चौकीदारी करता।
63. एक किला म् सौ–सौ खिड़की, पहरेदार खड़ा हर खिड़की।
64. सिर पे बाल तन पे मोती। ओढ़ चुनरिया खड़ी वो रहती।
65. भीतर लाल,ऊपर काला। नाम बताकर खाओ लाला।
66. पानी का मटका, पेड़ पे लटका।
67. काटा जाता, बॉटा जाता, पीसा जाता, पर खाने के काम न आता।
68. दिखना म् लाठी, खाना म् मीठी।
69. हरी–हरी मॉ, हरे हरे बच्चे। कोई खाए पके,कोई खाए कच्चे।
70. लाल डिब्बा, पीले खाने। भीतर लगे, उसके दाने।
71. कान मरोड़ो, पानी दूॅगा। कुछ नहीं मैं, दाम लूॅगा।
72. नाती कव्हय,पोती कव्हय,दादी कव्हय मामा।माय–बाप मामा कव्हय,कोन ऊ मामा
73. पंख नी मू उड़ू। हाथ नी मू लड़ू।
74. काली मुर्गी, दस–बीस बच्चे। जहॉ जाय मुर्गी,वहॉ जाय बच्चे।
75. जिंदा म् छाय देय, मर्‌ख देय आग। फल–फूल खूब देय, करय खूब त्याग।
76. एक बाई का दो–दो पोर्‌या,दुही एक रंग।एक चलय एक उभो फिर भी एक संग
77. कुआ भर्‌यो,हिरना खड़ो। कुआ सूख्यो,हिरना मर्‌यो।

78. आंख चिड़ी,पूंछ बिल्ली,मुँह चूहा पाया।पीठ हरिन,पेट सिंह, अजब जीव आया।

79. छोटी सी छुटकी ,लम्बी सी पूंछ। काम निकल गयो, तोड़ दी पूंछ।

80. हिरवो तोता नीलाम भयो। मरता मरता लाल भयो।

81. लियो तब भी दीया, दियो तब भी दीया।

82. पकना प् पीला–पीला,खाना म् रस रसीला।

83. हाथी,घोड़ा,ऊंट नी,खात नी वा घास। जमीन प् चलय,होत नी वा उदास।

84. जनम सी उड़न लगय,दिखय पर हाथ नी आवय।

85. शाम ख़ जाय, सुबह आवय। घर को कुई ख् नी पता बतावय।

86. महफिल म् आया दुही भाई, आता उनकी लगी ठुकाई।
दुही लग्या तमाचा खाने, मानो वो हय इसके दीवाने।

87. बेपारी एक ऐसा देखा, माल–दाम दोनों लेता।

88. बचपन म् हरा–हरा, बुढ़ापा म् पीला–पीला।
आम, संतरा, मोसम्बी नी,फिर भी रसीला।

89. बेल पड़ी तलाब में, फूल भी खिलता जाए।
अजीब तमाशा हम्ने देखा,फूल बेल को खाए।

90. बिना आग खीर पकाई,मीठी ना नमकीन।
चाट–चाट कर खा गए, बड़े–बड़े शौकीन।

91. ये देखो कलयुगी राग, बर्फ का टुकड़ा लागी आग।

92. नौ गज खम्बा,सवा गज डाली। बना कुम्हार के बन गई हांडी।

93. काठ को घोड़ा,काठ की लगाम। जी भी चिह्ने, उन्ख मिल्हे इनाम।

94. दिन म् बिछड़य दुही भाई। रात म् होय मेल मिलाई।

95. बाद म् आवय, पहले जाय। जब तक रव्हय काम करता जाय।

96. काली हूँ पर कोयल नहीं, लम्बी हूँ पर सांप नहीं।
तेल चढ़े पर शनि नहीं, फूल चढ़े पर भगवान नहीं।

97. पत्थर की नाव प् पत्थर सवार, नाव चलत नी फकत चलय सवार।

98. सीटी बजय पर इंजिन नी, डिब्बा हय पर रेलगाड़ी नी।

99. खड़ा हय ते खड़ा हय,बठ्या हय ते भी खड़ा हय।

100. इत सी जाऊ, उत सी आऊ, आता–जाता मू काट खाऊ।

उत्तर–

1.चार 2.लौंग 3.कसम 4.परया 5.ताला 6.बड़ा 7.नारियल 8.कंदील 9. खरेटा 10.मच्छर 11.दीया बत्ती 12.कुआ 13.महेतरानी 14.पत्तल 15. स्वारी 16.मूंछ 17.समोसा 18.कढ़ाई–तवा 19.मुर्दा 20.पूड़ी 21.मच्छरदानी 22.भेंडी 23.पतंग 24.शंख 25.दिल 26.पान 27.बटन 28.चंदा–सूरज 29. साइकिल 30.दीया 31.चिंता 32.सिंघाड़ा 33.सुई–दोरा 34.सिलाई मशीन 35.कोयला 36.जुगनू 37.बलफ 38.पैलोड़ी 39.छाय 40.मोमबत्ती 41. भिलवा,मिर्ची 42.चोटी 43.इलायची 44.हवा 45.काजर 46.गुलाबजामुन 47. मूमफली 48.ढोलक 49.मोर 50.छत्ता 51.रोटी 52.मैंह्दी 53.साटा 54. मोमबत्ती 55.घड़ी 56.गार,ओला 57.भुट्टा 58.मुरकुट,मच्छर 59.चश्मा 60. छत्ता 61.ताला 63. मैह्रूज 64.भुट्टा 65.जामुन 66.नारियल 67.ताश 68. साटा 69.बटना 70 अनार 71.नल 72.चंदा 73.पतंग 74.रेलगाड़ी 75. झाड़–पेड़ 76.घट्टी 77.दीया–बत्ती 78.खडाग्री 79.सुई–दोरा 80.पान 81.दीया 82.आम्बा 83.साइकिल 84.धुआ 85.सूरज 86.ढोलक 87.नाई 88. नीम्बू 89.दीया–बत्ती 90चूना 91.कपूर 92.नारियल 93.चक्का 94.चंदा–तारा 95.दांत 96.चोटी 97.सील–लोढ़ा98.कुकर 99.सींग 100.आरी.

चिह्नन की काह्यनी

1. असो कसो पाव्हना माय,घर्म सोयो ऑगल म् पाय।
2. काली गाय कोदो खाय,जे प पादय उ मर जाय।
3. काली थी कजराली थी काले वन में रहती थी,लाल पानी पीती थी,चटक चुम्मा लेती थी।
4. सील डूबय,बट्टा तैरय,पानी म छायो पाप।
5. एक खूटा प बारा गाय,इनका हय दो चरवाय।
6. एक अचम्भा हम्न देख्यो,मुर्दा आटा खाय,बोलय ते बोलत नी,मारय ते चिल्लाय।
7. एक ठाटी मोती सी भरी,सबका माथा औंधी पड़ी।
8. कच्ची केरी कचपची,पकन दे दिन चार।कच्ची मत तोड़जो,जीवन अकारथ जाय।
9. घर्म सासु घर्म माय,रोती आवय,रोती जाय।
10. चार भाई भामरभट्ट,सबका मुंढा म एक एक लट्ठ।
11. चार कबूतर चार रंग,मिलय ते एक रंग।
12. चार भाई चौर्यासा,फूल पड़य एक सा।
13. छे पाय फिर भी कम्मर कुबड़ी।
14. उजरो घोड़ा,हिरवी पूंछ।
15. नान्ही सी छड़ी जमीन म गड़ी,रूमझुम करती खेत म खड़ी।
16. नान्ही सी पोरी,राजा ख रूलावय।
17. नान्ही सी डब्बी म रम्भा बाई नाचय।

18. नीच्च फटी,उप्पर फटी,बीच म जुड़ी।
19. बिन सुई बिन तागा,बुनय रूमाल राधा।
20. बीसों का सिर काट लिया,न मारा न खून किया।
21. माय बेटी को एक नाम।
22. रग्घु चलय दाय बाय,तीन माथा दस पाय।
23. रांड की रांड भटकती जाय,पीछ्अ दोरा लटकाती जाय।
24. रात म खाई लप्सी,सबेरे आयो स्वाद।
25. न हल्दी न हींग,उप्पर चारों सींग।
26. लाल छड़ी,जमीन म गड़ी।
27. हम छोटे तुम बड़े, छू दिया तो रो पड़े।
28. हॅसी की हॅसी,ठिठोली की ठिठोली,मरद की गॉठ लुगई न खोली।
29. एक फकीर,जेका पेट म लकीर।
30. एक झाड़ प डब्बी च डब्बी।
31. गाय घूमत जाय,दूध देत जाय।
32. तीन पाय की रानी,कच्चो आटा खाय। दार भात को भोग लगय, सुबह शाम नहाय।
33. बारा मसी तीस गया बाकी बच्या का।
34. बाप बेटा दो,रोटी पकाई तीन,केत्ती–केत्ती खाई।
35. एक पड़ी, एक उभी, एक छमाछम नाचय।
36. चलता चलता बुड्ढा हो गया,चल्या नी एक कोस।
    नाती पोता असा भया, वी चल्या सौ–सौ कोस।

37. पेरो तलाव म पेरा अंडा,बता नी ते मारू डंडा।

38. होठ किनारे मोर नाचे।

39. दादा खुरदरो,बाप चिकनो, बेटा का मूंछ का बाल।

40. आगी सी तेज कोन,काजर सी कालो कोन।

41. बोयो बीच खेत,उग्यो मेर प।

42. चार्‌ही पारग लकड़ी खाऊ,पानी पेता मू कर जाऊ।

43. एक तरबूज की बारा चीर,एक चीर म तीस बींज

44. अत्तीस नाड़ा,बत्तीस नाड़ा,बिन चक्का को चल गाड़ा।

45. नौ सौसीधा,नौ सौ उल्टा,नौ सौ बावन वीर।बारिस सी बचावयसब्ख,हरय सब्कीपीर।

46. नान्ही सी डब्बी डब डब भरय।

47. माय जंगल म,बाप पंगत म, बेटी रंगत म।

48. पानी की झारी सिराना धरी, ते भी सारी रात तीसी मरी।

49. नीच्च्व मुंढा उप्पर पाय, दिन म सुवय रात म जाय।

50. सर सराटा उप्पर कॉटा, जी नी चिह्ने ओको बाप मराठा।

51. एक आड़ा की झोपड़ी ओ म् नौ लाख गाय समाय।

52. बाबा सुवय या घर म्, पाय पसारय वा घर म्।

53. मू कटू ते काहे रूवय।

54. एक मंदिर म् तीस देव।

55. एक छोटो से पोर्‌या सालू बॉध–बॉध फिरय।

56. हात सी छूटी ते भोभाय उठी।

57. ठाटी भर मोती, तोसी मोंजाय न मोसी।

58. नाह्‌नी सी कोठरी, म् कुट्‌टन डोकरी।

59. दिन म् सुवय, रात म् जागय।

60. एक आयो भाट, ओ न बुनी नौरंगी खाट, बुनतन बुन ली, उकलता नी बनी।

उत्तर

1.दीया 2. बंदूक 3.जीव 4.मही,नोनी 5.घड़ी 6.ढोलक 7.आकाश 8.पोरी 9. किवाड़ 10.खाट 11.पान 12.गााय का थन 13.मकोड़ा 14.मूली 15.जुवार 16.मिर्ची 17.जीभ 18.फनी 19.मकड़ी 20.नाखून 21.इमली 22.किसान दो बैल 23.सुई दोरा 24.मेंहदी 25.लौंग 26.गाजर 27.बिच्छू 28.ताला–चाबी 29.गहूॅ 30.तिल्ली 31.घट्‌टी आटा 32.चौकी बेलन 33.ग्यारा (12 महीना मसी 30 दिन गया) 34.एक एक,बाप एक बेटा दो 35.रोटी 36.कुम्हार को चक्का ,बर्तन 37.कढ़ी,पकोड़ा 38.नथ 39.पेड़,आम,गुठली 40.क्रोध,कलंक 41.घट्‌टी 42.आग 43.साल महीना दिन 44.नाव 45खपरैल 46.ऑख 47. परसा,पान,फूल 48.इत्र की शीशी 49.बनबागुड़ 50. गल 51.मैह्‌रूज 52. दीया 53.कांदा 54.मुॅह–दॉत 55.ढेरा 56.ठाटी 57.तारा 58.जीब 59. बनबागुड़ 60.रंगोली.

खंड–5

साहित्य और सोच में सुदामा समाज

एक बार एक नेता एक गॉव में भाषण देने पहुॅचे। सभा स्थल पर मात्र एक ग्रामीण को उपस्थित देखकर नेताजी बिना भाषण दिए जाने लगे। उन्हें जाते हुए देख ग्रामीण बोला–नेताजी, मैं अनपढ़ हूॅ। मेरे घर में 20 गायें हैं। उनमें से यदि एक गाय भी घर आती है तो मैं उसे घास डालना नहीं भूलता। नेताजी ग्रामीण के विचार से प्रभावित होकर भाषण देने को तैयार हो गए। नेताजी ने दो घंटे तक धुऑधार भाषण दिया। भाषण समाप्ति पर नेताजी ने ग्रामीण से पूछा–मजा आया। ग्रामीण बोला–नेताजी, मैं अनपढ़ हूॅ, पर 20 गायों में से केवल एक गाय ही आती है तो मैं 20 गायों का घास एक गाय को ही नहीं डाल देता।

इस दृष्टांत के माध्यम से मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूॅ कि मैं 20 गायों का घास एक गाय को डालने की भूल नहीं करूॅगा। भाइयों, बहनों, हमें यह सदैव ध्यान रखना होगा कि हम राजा विक्रमादित्य और राजा भोज की वंश परम्परा के अनुयायी हैं। आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस देश में राम और कृष्ण के बाद सबसे ज्यादा लोकप्रिय राजा विक्रमादित्य और राजा भोज ही हैं जिनकी लोककथाएॅ राम–कृष्ण की लोककथाओं की तरह जनमानस में व्याप्त और लोकप्रिय हैं। हमारे आचार–विचार एवं व्यवहार में सदैव राजा विक्रमादित्य और राजा भोज के व्यक्तित्व की झलक प्रतिबिम्बित होनी चाहिए। हम जो भी काम करें उसमें राजा की सोच जैसी व्यापक सूझबूझ निहित होनी चाहिए। आज हम घर परिवार से निकलकर समाज संगठन में तो आ गए पर हमारा घर परिवार, हमारा क्षेत्रवाद, हमारा भाषावाद अभी हमारा साथ नहीं छोड़ पा रहा है। अभी भी हम घर, परिवार, क्षेत्र, भाषा से बाहर नहीं निकल पाए हैं। हमारे द्वारा प्रकाशित संगठन साहित्य इस बात का प्रमाण है। संगठन के साहित्य में हमेशा गिने चुने चेहरे ही झलकते रहते हैं या उनके नाम ही सदैव स्थान पाते रहते है। इस तरह की सोच परिपक्व नहीं कही जा सकती। जब किसी समाज सदस्य द्वारा अच्छा काम

किया जाता है तो पूरे समाज का नाम रौशन होता है, उसी तरह जब किसी समाज सदस्य द्वारा अच्छा काम नहीं किया जाता तो इससे पूरे समाज की नजरें भी झुक जाती हैं। आज तकनीक का युग है। बातें फैलते वक्त नहीं लगता। किसी भी संगठन द्वारा प्रकाशित साहित्य केवल समाज तक ही सीमित नहीं होता वह अन्य समाज के हाथों भी लगता है। साहित्य से समाज की छवि प्रतिबिम्बित होती है। दूसरे समाज के लोग इसे देखकर, पढ़कर समाज के बारे में तरह–तरह की राय बनाते हैं। वे इसके माध्यम से भावी रणनीति बनाते हैं। और कई बार राजनीति तक करने में इसे काम में लाते हैं। प्रायः संगठन के पदाधिकारी अपनी पत्रिकाओं में केवल विज्ञापन प्रकाशित कर अपने कर्त्तव्यों की इतिश्री मान बैठते है। उनकी इस सोच का परिणाम समाज को भुगतना पड़ता है। जब दूसरे समाज के लोगों के हाथों में ऐसी पत्रिकाएं जाती हैं तो इससे हमारे समाज के साहित्य और सोच का सुदामापन उजागर होता है। कई बार तो 2 रुपये के अखबार में भी पढ़ने लायक सामग्री मिल जाती है पर इन हजारों की लागत की पत्रिकाओं में ढूढें से भी कुछ पढ़ने गुनने लायक नहीं मिलता। संगठन के पदाधिकारियों को इस बात का तनिक भी भान नहीं होता कि उनके इस तरह के आचरण से समाज की छवि कितनी धूमिल होती है।

संगठन के निमंत्रण पत्रों को देखकर लगता है मानों वे किसी घर परिवार के निमंत्रण पत्र हों। संगठन के निमंत्रण पत्र तो ऐसे होने चाहिए जो पूरे समाज का प्रतिनिधित्व करते प्रतीत होते हों। दूसरे लोग इन निमंत्रण पत्रों का उपयोग उन लोगों को उकसाने के काम में लाते हैं जिनका नाम जाने अनजाने निमंत्रण पत्र में शामिल नहीं हो पाता। इस तरह समाज का एक व्यक्ति ही समाज का दुश्मन बन जाता है और समाज को बेवजह ही उसकी क्रोधाग्नि का भाजन बनना पड़ता है। यह सही है कि निमंत्रण पत्र की भी अपनी सीमा है, उसमें सबके नाम शामिल नहीं किए जा सकते, परंतु उसमें शामिल नामों से यह संदेश जरूर जाना चाहिए कि वे इस समाज के राजा विक्रमादित्य, राजा भोज तो नहीं हैं पर कम से कम उनके आचार–विचार ,व्यवहार तो अनुकरणीय है। निमंत्रण पत्रों में छपे शब्दों से यह संदेश जाना चाहिए कि ये

निमंत्रण पत्र राजा भोज और राजा विक्रमादित्य के वंशजों के है। उनकी प्रतिभा, उनकी सोच, उनकी दूरदृष्टि निमंत्रण पत्रों में उजागर होगी तो निश्चित ही इससे समाज की छवि भी उज्ज्वल होगी। आयोजन करना अच्छा है। पर जब आगन्तुक आयोजन से समृद्ध होकर जाए तो आगमन और आयोजन दोनों

सार्थक सिद्ध होते हैं। इसी तरह समाज के अधिकांश लोग 21 वीं सदी में भी 12 वीं सदी को जी रहे है। इस तकनीकी युग में भी आज समाज अंधविश्वास और रूढ़िवादिता से मुक्त नहीं हो पा रहा है। एक समय था जब समाज सदस्य मृतक के शोकाकुल परिजनों को पूरे 10 दिन तक सुबह–शाम भोजन कराया करते थे। यह आचरण राजाओं के आचरण सा था। परन्तु आज नक्शा कुछ और ही है। रोटी खिलाने वाले अब रोटी खाने वाले बन गए हैं। राजा का काम तो खिलाना है। खिलाने वाला ही खाने लगे तो फिर राजा किस बात का ? समाज सदस्यों के ये छोटे–छोटे स्वार्थ ही समाज को और कमजोर करते हैं। हमें चाहिए कि यदि हम खिलाने वाले न बन सके तो कम से कम खाने वाले भी न बनें। संगठन पदाधिकारियों को चाहिए कि वे आगे आकर मृत्यु भोज करने के स्थान पर उपवास करके आदर्श प्रस्तुत करें। उन्हें चाहिए इन कुरीतियों को खत्म करने में हरसंभव प्रयास करें और भीड़ का हिस्सा न बनें। समाज को आज ऐसे ही विक्रमादित्य और राजा भोज की जरूरत है जो स्वार्थ से ऊपर उठकर काम कर सके।

मुट्ठी भर चने कृष्ण को न बॉटकर सुदामा स्वयं खा जाते है। सुदामा का यह छोटा सा स्वार्थ उसे जिंदगी भर के लिए गरीब बना देता है, सुदामा बना देता है। जब सुदामा कृष्ण के द्वार मुट्ठी भर चावल लेकर जाते हैं तब सुदामा की गरीबी दूर होती है। संगठनों के पदाधिकारियों से मेरा यही विनम्र अनुरोध है कि वे सुदामा की तरह मुट्ठी भर चने का स्वार्थ न पालें। उनके मुट्ठी भर स्वार्थ से वे स्वयं तो सुदामा बन ही रहे हैं इससे समाज भी सुदामा बन रहा है। संगठन के पदाधिकारी जिस दिन सुदामा की तरह मुट्ठी भर चावल लेकर समाज के द्वार पर पहुँच जायेंगे उस दिन पदाधिकारियों की गरीबी तो दूर होगी ही समाज भी समृद्ध हुए बिना नहीं रहेगा।

वल्लभ डोंगरे,

राजा भोज की जगह गंगू तेली बनता समाज

उज्जैन नरेश राजा विक्रमादित्य और धार नरेश राजा भोज देश के गौरव कहे जाते हैं। दोनों ही नरेशों का पवार वंश से सम्बद्ध होना समाज के लिए गौरव की बात है। राजा विक्रमादित्य की न्यायप्रियता के संबंध में तो यहॉ तक कहा जाता है कि उनके सिंहासन पर वही व्यक्ति बैठ सकता था जो उनके समान गुणवान हो। सिंहासन बत्तीसी नामक किताब में बत्तीस पुतलियॉ राजा विकमादित्य के 32 गुणों का प्रतिनिधित्व करती हैं। ये पुतलियॉ राजा भोज द्वारा 32 बार सिंहासन पर बैठने के प्रयास करते समय राजा भोज से राजा विक्रमादित्य के समान गुणी होने का प्रमाण मॉगती हैं। इसी कारण किताब का नाम सिंहासन बत्तीसी पड़ा। राजा विक्रमादित्य और राजा भोज भगवान राम और कृष्ण के बाद सर्वाधिक प्रसिद्ध नरेश माने जाते हैं। इनके संबंध में जनमानस में आज भी अनेकों लोक कथाएं व्याप्त हैं। मालवा में आज भी दिन की शुरूआत राजा भोज, राजा भ्रर्तहरि और राजा विक्रमादित्य की लोककथाओं के गायन व श्रवण से होती है। ऐसे राजाओं के वंशज होना हमारे लिए गौरव की बात है।

राजा भोज, राजा विक्रमादित्य तथा राजा भ्रर्तहरि की गौरवमयी परम्परा को जीवित रखने और उसे आगे बढ़ाने का दायित्व वर्तमान पीढ़ी का है, ताकि हमारी गौरवमयी परम्परा को न केवल हम जीवित रखने में सहभागी बन सके अपितु इसे आगे बढ़ाने में भी मददगार साबित हो सके। राजा विक्रमादित्य द्वारा नवरत्नों की परम्परा इसीलिए शुरू की गई थी कि समाज को उनकी प्रतिभा का लाभ मिल सके और समाज उन्नति कर सके। यह परम्परा राजा भोज द्वारा भी जारी रखी गई। यहॉ तक कि मुगल शासक अकबर द्वारा भी इसे जारी रखा गया। आज समाज संगठनों में योग्य पदाधिकारी को न रखकर हमारी गौरवमयी परम्परा को बाधित करने के प्रयास किए जा रहे है। हम मूक दर्शक की

तरह या कहे भेड़िया धसान की तरह उनका अनुसरण करके उनकी हर गतिविधि का जाने–अनजाने समर्थन कर हम राजा भोज कम गंगू तेली ही ज्यादा बनते जा रहे हैं।

एक बेटे की चाह में हम अपने घर में बेटियों की फौज खड़ी कर देते हैं। बेटे को बीई और एमबीबीएस कराते हैं पर बेटियों को शासकीय स्कूल और कालेज में पढ़ाकर अपनी समझदारी का ढिंडोरा पीटते नहीं थकते। अपने व अपने भाइयों के विवाह के समय पूरा जग छान मारने वाले अपनी ही बेटियों के विवाह के समय हाथ पर हाथ धरे बैठकर साधू–संत बनाने में अपना हित देखते हैं। हम पैसों के प्रति इतने लालची हैं कि अपने ही घर में बैठी जवान बेटी के विवाह के प्रति ऑख मूँदकर बैठ जाते हैं। यहॉ तक कि बेटी यदि नौकरी में लग जाए तो भाई–बहनों को पढ़ाने व घर की जवाबदारी पूरी कराते–कराते उसके विवाह की उम्र ही निकाल देते है और मॉ–बाप भी उसे अविवाहित रखने में ही अपना भला समझते हैं। कुछ मॉ–बाप तो लड़के में खोट दिखाकर नौकरी कर रही अपनी बेटी को तलाक दिलाकर अपने घर बिठा लेते हैं ताकि सोने के अंडे देने वाली मुर्गी घर में ही रहे। ऐसा करके हम राजा भोज कम गंगू तेली ही ज्यादा बनते जा रहे हैं।

कभी किसी निरक्षर तथा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी द्वारा लगभग 40 साल पूर्व समाज संगठन की स्थापना की गई थी। पर संगठन आज तक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी की मानसिकता से उभर नहीं पाया है। संगठन का अपना संविधान है, निर्धारित चुनाव प्रक्रिया है, पर समाज संगठन के संविधान का पालन न करने से जो संदेश निचले स्तर पर जा रहा है वह अनुकरणीय नहीं है। हम शहर में रहकर भी गॉव वाले होकर रह गए हैं। हम न शहर को अपना सके न गॉव को। गॉव को छोड़ने के साथ हम शहर को पकड़ नहीं पाए, इससे हमसे अपना गॉव तो छूटा ही, शहर भी छूट गया। संगठन को अपनी जागीर समझकर अपनी सोच और अपनी मानसिकता का मुलम्मा चढ़ाकर संचालित करने वाले यह नहीं जानते कि दुनिया में कभी भी कोई काम किसी के कारण नहीं रूकता

तथा दुनिया सदा अपनी स्वाभाविक गति से चलती रहती है। हमें यह सदैव ध्यान रखना चाहिए कि इस लोकतांत्रिक देश में अलोकतांत्रिक कार्य प्रणाली से समाज का कभी भी हित नहीं हो सकता। समाज में ऐसे लोगों को बढ़ावा देकर हम राजा भोज कम गंगू तेली ही ज्यादा बनते जा रहे हैं।

जब हम गॉव से शहर आए तो साथ में अज्ञान भी था। दारू–जुए की लत भी थी। बीड़ी–सिगरेट पीने व मॉस–मटन खाने का शौक भी था। आठवीं पढ़कर आए तो नौवी नहीं कर पाए। आठवीं में ही जिंदगी निकाल दी। मैट्रिक थे तो मैट्रिक ही रह गए। आई टी आई करके रोजी–रोटी कमाने–खाने वाले बन गए तो घर परिवार के लिए साहब बन गए। आईटीआई से सब इंजीनियर बन गए तो इंजीनियर साहब हो गए। दिमाग में मैट्रिक का ही कूड़ा करकट भरा रह गया। पत्नी साहब का संबोधन करके अपने भाग्य पर फूली नहीं समाने लगी। मॉ बेटे को बेटा न कहकर साहब संबोधित करने लगी। मॉ के लिए बेटे का और बेटे के लिए मॉ का कद छोटा हो गया और साहब का कद बड़ा हो गया। साहब शब्द ने संबंधों में सेंध लगा दी। इस तरह का आचरण करके हम राजा भोज कम गंगू तेली ही ज्यादा बनते जा रहे हैं।

आठवीं पढ़कर नौकरी में लग गए तो शहर में रहने का गुमान करने लगे। शहर में रहकर हम शहरी हो गए। गॉव जाते तो साहब बन जाते। अनपढ़ मॉ–बाप के चरण छूने और उनकी सेवा करने में शर्म आने लगी। जन्म देने वाले बाप का धोती पहनना बेटे के लिए शर्म का कारण हो गया। घर आए अनपढ़ बाप को चपरासी कहकर अपने सहकर्मी को परिचय देने लगे। अपने बाप को चपरासी कहकर अपने सहकर्मियों में खास होने का भ्रम पालने लगे। चारदिवारी खड़ी करके घर बना लेने पर अपने स्वयं का घर होने का जिक्र करने लगे। बेटों के व्यवसाय का जिक्र करने से तो बचते रहे, पर बहू की शान बघारते फिरने लगे। इस तरह का आचरण करके हम राजा भोज कम गंगू तेली ही ज्यादा बनते जा रहे हैं।

क्षत्रिय होने के नाते हमारा शस्त्र बल पर विश्वास करना स्वाभाविक है, पर शास्त्र बल को अपनाकर हम और अधिक समृद्ध और सबल ही होते। राजा भोज शक्ति के साथ–साथ सरस्वती के भी आराधक थे। तभी वे 50 से ज्यादा उपयोगी किताबें समाज को दे पाने में सफल हो सके थे। हम राजा भोज की परम्परा को बिसारकर सरस्वती के सच्चे उपासक नहीं बन पाने के कारण शास्त्र बल में कमजोर पड़ने लगे और अंततः क्षत्रिय ही रह गए। इस तरह हम राजा भोज कम गंगू तेली ही ज्यादा बनते जा रहे है।

दुख में अपनों का साथ देने में हमारा कोई सानी नहीं था। किसी की मृत्यु हो जाने पर मृतक के शोकाकुल परिजनों को पूरे 10 दिन तक सुबह–शाम भोजन कराया करते थे। दसवा में उपस्थित होते समय यथायोग्य दाल, चावल, आटा, नमक, मिर्च साथ लेकर जाते थे ताकि शोकाकुल परिजनों को भोजन करा सकें। इतनी सभ्य और सुसंस्कृत संस्कृति को भुलाकर अब हम रोटी खिलाने की जगह रोटी खाने वाले बन गए। समाज सदस्यों के ये छोटे–छोटे स्वार्थ समाज को खोखला तथा कमजोर करने लगे। हमें चाहिए हम खिलाने वाले न बन सके तो खाने वाले भी न बनें और मृत्यु भोज करने के स्थान पर उपवास करके आदर्श प्रस्तुत करें। समाज को आज एक और राजा भोज की जरूरत है और वह राजा भोज आप हैं। समाज आपका इंतजार कर रहा है। कृपया निःसंकोच अपना कर्त्तव्य निभाएं।

महाराणा प्रताप बनें न कि जयचंद

राजा विक्रमादित्य, राजा भ्रर्तहरि और राजा भोज की समृद्धशाली वंश परम्परा के अनुयायी पवारजन राज वंश एवं राज परिवार से सरोकार रखने वाले माने जाते हैं। राजा का व्यक्तित्व आम आदमी के व्यक्तित्व जैसा न होकर नए आयाम गढ़ने और छूने वाला होता है। अतः पवारजनों को अपने जीवन में आम आदमी की तरह व्यवहार न करके एक राजा की तरह व्यवहार करना सीखना चाहिए। पवारों को महाजन कहा जाता है। महाजन याने कि जनों में महान। पुराणों में उल्लेख है–महाजनों ऐन गतः स पंथाः। अर्थात महाजन जिस भी राह चले वह धर्म पथ बन जाता है। अतः आम आदमी की तरह खोदा–बीदी करने की अपेक्षा अपने वाले द्वारा निर्मित राह को धर्म पथ मानने में ही हमारी भलाई निहित होती है। राजा का काम ही होता है जातपॉत से ऊपर उठकर अपना कार्य करना, और प्रजा में जो अच्छा लगे उसे अपने राज दरबार में स्थान देना। राजा की कोई जात नहीं होती वह केवल राजा होता है। वह अपने राज दरबार की शोभा किसी भी समाज और जाति की लड़की से बढ़ा सकता है। राज दरबार की यही रीत होती है कि रानी बनाने और बनने में किसी को कोई ऐतराज नहीं होता।

हर इंसान में कुछ अच्छाइयॉ ंतो कुछ कमजोरियॉ होती हैं। परन्तु समझदारी इसी में होती है कि इंसान की अच्छाइयों को ध्यान में रखकर उसका भरपूर लाभ उठाया जाए न कि उसकी कमियों को गिनाकर उसकी अच्छाइयों की अनदेखी की जाए। विदेशियों ने हमपर 1000 साल से ज्यादा राज किया, अंग्रेजों ने हमपर 200 साल तक राज किया। आजादी के बाद बाहर के उम्मीदवारों ने आ–आकर हम पर राज किया और हम अभी तक अपनी शक्ति को पहचान नहीं सके हैं। हम राजा हैं। राजा का काम राज करना है। राजा पर राज नहीं किया जाता। पर अभी तक तो ऐसा ही होता आया है। राजा पर राज किया जाता रहा है। और हम राजा होकर भी प्रजा बन रहे हैं। अब तक जो

हुआ सो हुआ। जब जागो, तब सबेरा। अब तक हम बहुत सो लिये। अब सोना नहीं हैं। अब पुनः राजा बनकर राज करना है और यह तभी संभव है जब हम अपने राजा को राजा बनाने के लिए एकजुट हो जाएं। आज की राजनीति में राजा ही साम, दाम दंड, भेद की नीति अपनाकर अपने राजा बनने की राह आसान कर सकता है। यदि हम सभी आपस के तमाम मतभेद मिटाकर राजा को राजा बनाने के लिए कमर कस लें तो हम राजा बनेंगे भी और राजा बने भी रहेंगे। अपने पूर्वजों की परम्परा को कायम करने और अपना राजा बनाने व बनने के लिए यही एकमात्र रास्ता शेष है।

जंगल हो या जहॉन हर जगह राजा केवल एक ही शोभा देता है। जब आपस में ही राजा बनने की होड़ मच जाती है तो यह प्रकृति के उस नियम के विरूद्ध भी होता है जिसकी व्यवस्था उस ऊपर वाले ने पूर्व से ही निश्चित कर रखी है। आपस की लड़ाई किसी भी राज और राज के लोगों के हित में नहीं होती। एक तरह से यह स्वार्थ ही होता है जिसका जनता की सेवा से कोई सरोकार नहीं होता। आपस में होड़ मचा कर हम जो गड्ढा खोदते है उसमें कोई और नहीं हम स्वयं गिरते हैं। होड़ मचाकर सामने वाले को तोडने की जगह हम स्वयं टूट जाते हैं। सामने वाले को तोड़ने के लिए जरूरी है हम धैर्य से काम लें और समाज हित में केवल एक को ही राजा माने और उसका पूरा समर्थन करें। यदि समर्थन नहीं करें तो कम से कम समाज हित में चुप रहना सीखें। आपकी चुप भी समाज को मजबूती ही प्रदान करेगी। शेर को 5–6 सियार भी मिलकर नहीं हरा सकते। शेर को हराने के लिए सियार की नहीं शेर की जरूरत होती है और वह शेर राजा ही है। अतः समाज हित में राजा को आगे करके ही समाज हित साधने का सपना पूरा किया जा सकता है। जब कोई क्षेत्र प्रतिनिधि बनता है तो वह अपने वालों के लिए सौगात लेकर आता है। कम से कम 1000 सदस्य उसके सेवाकाल में रोजी रोटी से लगकर अपने परिवार का भरण पोषण करने योग्य बन जाते हैं। राजा को सहयोग करने का अर्थ है अपने 1000 सदस्यों को

रोजी रोटी दिलाना और लगभग 500 बहनों को नौकरी करने वाले जीवनसाथी दिलाना। इसके साथ ही क्षेत्र प्रतिनिधि अपने पंसदीदा गॉवों को स्कूल, अस्पताल तथा स्वास्थ्य सुविधाएँ दिला सकता है। राजा को सहयोग करने का अर्थ है अपने गॉवों में अधिक से अधिक स्कूल, अस्पताल और स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था करवाना। कुछ लोग "चित भी मेरी पट भी मेरी" की तर्ज पर अपने उम्मीदवार मैदान में उतारने को उतारू है। यह व्यूह रचना एकाधिकार स्थापित करने या क्षेत्र को अपनी जागीर बनाने के लिए की जा रही है, जिसे समय रहते समझने और विफल करने के लिए कमर कसने की जरूरत है। जयचंद बनकर हमने इस देश और समाज का बड़ा अहित किया है। अब इस समाज और देश को जयचंदों की नहीं महाराणा प्रतापों की जरूरत है और आपमें महाराणा प्रताप बनने के सारे गुण मौजूद है। बस, आप इसके लिए तैयार भर रहें। बाकी का काम राजा स्वयं संभाल लेंगे।

सतपुड़ा संस्कृति संस्थान
एच–6, सुखसागर विला, फेज–1, भेल, भोपाल द्वारा संचालित कार्य–

- समाज उपयोगी साहित्य का प्रकाशन
- भारत भर में रह रहे विवाह योग्य समाज सदस्यों की जानकारी का संकलन व प्रकाशन
- भारत भर में रह रहे समाज सदस्यों के पते व मोबाइल नं. का संकलन व प्रकाशन
- पवारी परम्परा का संवर्द्धन, संरक्षण व प्रकाशन
- पवारी लोक साहित्य का संवर्द्धन, संरक्षण व प्रकाशन
- पवारी बोली का संवर्द्धन व संरक्षण
- पवारी शब्दकोश का प्रकाशन
- पवारी लोकोक्ति–मुहावरें व पहेलियों का संकलन व प्रकाशन
- सुखवाड़ा मासिक का प्रकाशन व नियमित ई मेल पर प्रेषण
- कमजोर,गरीब बच्चों की परीक्षा व ट्यूशन फी भरने में सहयोग
- बिना दहेज लिए या मंदिर में विवाह करने वाले जोड़े को राशि रु 5000/– का सहयोग

–निवेदन–

अपने व परिचितों के नाम, पते, मोबा. नं. व विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी प्रकाशनार्थ इस मोबा. 09425392656 पर एसएमएस करें या ई मेल–vallabhdongre6@gmail.com पर भेजें।

आयोजनों की सार्थकता

एक किसान खेती–बाड़ी छोड़कर भगवान की आराधना हेतु हिमालय चला गया। गंगा किनारे उसने एक छोटी सी कुटिया उतार ली। वह भगवान के भजन–पूजन में रम गया। भूख लगने पर पास के गॉव में जाता और भिक्षा मॉग लाता। उसे इतनी भिक्षा मिल जाती कि उसके सप्ताह भर के भोजन की व्यवस्था हो जाती। उसकी कुटिया को देख साधु–संयासी भिक्षा मॉगने चले आते। वह उन्हें भी भिक्षा दे देता। पर इसके लिए उसे फिर भिक्षा मॉगने गॉव जाना पड़ता। इससे उसकी पूजा–आराधना में व्यवधान आता। उसने सोचा क्यों न अपनी कुटिया के पास थोड़े से बीज बो दूं इससे बार–बार भिक्षा मॉगने जाने से भी राहत मिलेगी और अधिक से अधिक समय भगवान की आराधना में बीतेगा। अब उसका ध्यान भगवान की भक्ति में कम और खेती –बाड़ी और उसकी रखवाली में ज्यादा लगने लगा। खेत देखकर भिक्षा मॉगने वालों की संख्या भी बढ़ने लगी। जमीन की कोई कमी नहीं थी। उसने अपनी खेती का रकबा और बढ़ा लिया। अब उसका ध्यान पूजा आराधना के स्थान पर खेती–बाड़ी में ही ज्यादा व्यतीत होने लगा। इस तरह वह हिमालय जाकर भी साधु सन्यासी बनने की जगह एक किसान बनकर ही रह गया। कहने का तात्पर्य यह है कि पवार गॉवों से शहरों में तो पहुॅच गये पर वे उस किसान की तरह किसान ही बने रहे। उचित शिक्षा और संस्कार के अभाव में वे दुनियादारी से कोसों दूर रहें। शहर में आकर वे पढ़लिखकर साक्षर तो हो गए पर उनके जीवन में, आचार–विचार में एवं व्यवहार में शिक्षा का कहीं कोई प्रभाव दिखाई नहीं देता। समाज में व्याप्त कुरीतियों से लड़ने का न तो उनमें माद्दा होता, न ही साहस होता। यही कारण है पढ़े लिखे और निरक्षर दोनों तरह के लोगों की सोच और जीवन शैली में कोई अंतर दिखाई नहीं देता। राजनीतिक क्षेत्र में भी इस क्षेत्र के साथ सदैव पक्षपात किया जाता रहा। अपनी स्वार्थ सिद्धि के लिए राजनेता क्षेत्र की जनता के साथ छल करते रहे और उन्हें अंधेरे में रखकर अपनी रोटियॉ सेंकते रहें।

छिंदवाड़ा, बैतूल पवार बहुल होते हुए भी राजनीति में अल्पसंख्यक बने हुए हैं। जहॉ से पवारों के एमपी एमएलए बनने चाहिए वहॉ से अल्पसंख्यक और बिना आधार वाले एमपी और एमएलए बन रहे हैं। पवारों के अशिक्षित होने और राजनीति हेतु एकजुट न हो पाने के कारण बाहर से आए उम्मीदवार भी यहॉ आसानी से सेंध लगाकर अपना उल्लू सीधा कर लेते हैं। पवारों से उधार लेकर अपनी रोजी रोटी चलाने वाले और दुकान शुरु करने वाले फिरस्ते आज अमीर बन बैठे हैं। सीधेसादे व दयालु पवारों को अपनी कूटनीति में फॉसकर और उन्हे दारु पिलाकर व उसकी लत लगाकर उन्हीं को उधार देकर बाद में उन्हीं की जमीन जायदाद गिरवी रखने और हड़पने वाले दरिंदे आज बनिये और सेठ बने बैठे हैं। जिन खेतों में पवारों की फसलें लहलहाया करती थी आज वहॉ सेठों बौर बनियों की बड़ी–बड़ी कोठी और दुकानें ऊग आई हैं। छिंदवाड़ा और बैतूल जैसे जिले से किसी भी विधानसभा क्षेत्र हेतु एक भी पवार को उम्मीदवार न बनाकर राजनीति के खिलाड़ी इसे अपनी जागीर समझने लगे हैं। पांढुर्णा को सामान्य के स्थान पर आदिवासी क्षेत्र बनाकर राजनेताओं ने पवारों के साथ छल किया है। मुलताई क्षेत्र को तोड़कर और उसमें प्रभातपटटन को जोड़कर राजनेताओं ने पवारों के साथ छल किया है। इस छल को पवार बल के द्वारा पवार हित में बदले बगैर पवारों का भला नहीं हो सकता। पवारों को राजनीति में आना ही होगा और अपने छोटे–छोटे स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज हित में सोचना व कार्य करना होगा। जयचंदों ने इस देश की लुटिया डुबो दी थी। जयचंदों ने इस समाज की भी लुटिया डुबो दी है। इन जयचंदों को सबक सिखाने का समय आ गया है। अब हर पवार को राणाप्रताप बनने की जरूरत है ताकि समाज के जयचंदों को सबक सिखाया जा सके और अल्पसंख्यक तथा बाहरी राजनेताओं को अपनी जमीन पर नेस्तनाबूद किया जा सके।

पांढुर्णा और सौसर में उत्पादित संतरे नागपुर संतरे के नाम से जाने व बेचे जाने लगे। बाजार की शक्ति के आगे आम आदमी की शक्ति

बेजार और लाचार हो गई। पांढुर्णा और सौसर के किसान मेहनत करते और नाम नागपुर का होता। इस तरह पांढुर्णा और सौसर के किसान भाइयों और बहनों के साथ अन्याय होता रहा और इस क्षेत्र की पहचान स्थापित न होने देने की एक सोची समझी साजिश चलती रही। ऐसा सामाजिक स्तर पर भी होता रहा। पांढुर्णा–सौसर जैसा समृद्ध क्षेत्र नागपुर पर आश्रित रहने को मजबूर हो गया और इसी कारण वह अभी तक अपनी पृथक पहचान स्थापित करने के लिए संघर्षरत है। अपनी शक्ति को पहचानने के लिए यहॉ एक कहानी का उल्लेख करना जरूरी है ताकि उससे कुछ प्रेरणा लेकर कुछ ऐसा किया जा सके कि आमूलचूल तस्वीर ही बदल जाए। एक साधु की कुटिया में कभी कोई चूहा आ गया। साधु के साथ वह घुलमिल गया। एक दिन बिल्ली को देखकर वह डरकर साधु की शरण में जा पहुॅचा। चूहे को डरा हुआ देख साधु ने उसे बिल्ली बना दिया। वह बिल्ली कुत्ते से डर गई तो उसे कुत्ता बना दिया गया। एक दिन उसे शेर ही बना दिया गया। शेर बनने पर वह चूहा साधु को ही खाने को दौड़ पड़ा। “मेरी बिल्ली मुझपर ही म्याऊ” कहावत को सही होता देख साधु ने उसे पुनः चूहा बना दिया। उस साधु की तरह आपको भी शेर बने चूहे को पुनः चूहा ही तो बनाना है। और वह आपके हाथ में है। कहते हैं, जो अन्याय सहता है वह भी उतना ही दोषी होता है जितना कि अन्याय करने वाला। अतः अब सहना नहीं ,सामना करना हैं, और सामना ही नहीं करना है, उसे सारना भी है। और अकेले नहीं, मिलजुलकर। आजादी के पूर्व धार्मिक त्योहारों पर एकत्रित सुधीजनों को नेता अपने बीज मंत्र दे आते थे। समाज के आयोजनों को भी उसी तरह के बीज मंत्रों के आदान–प्रदान का मंच बनाकर हम एकत्रित बंधुओं को अपने हक के प्रति जागरूक कर सकते हैं। सही मायने में, आयोजनों की सार्थकता भी तभी सिद्ध हो सकेगी।

तकदीर और तस्वीर बदलने के लिए सोच बदलने की जरूरत

सरकारी नौकरियों में सामान्यतः किसी अधिकारी का तबादला एक–दो वर्षों में इसलिए कर दिया जाता है कि उस विभाग के विकास और उन्नति के लिए जितने नवाचार उसके मन–मस्तिष्क में होते हैं सामान्यतः उन सबका वह उपयोग कर चुका होता है। नए विचारों के लिए नए व्यक्ति और नए नजरिए की जरूरत होती है। यही कारण है आईएएस, आईपीएस और आईएफएस अधिकारियों को सामान्यतः किसी जिले में एक–दो वर्षों से ज्यादा नहीं रहने दिया जाता। सच्चे लोकतंत्र की यह पहचान भी है और ताकत भी। राजतंत्र में सालों साल एक ही राजा राज किया करता था परन्तु लोकतंत्र में इसे शुभ नहीं माना जाता। सबको देश सेवा का अवसर मिले, देश के विकास में सबकी बराबर की भागीदारी रहे, इसलिए संविधान में सबको समान अवसर देने की व्यवस्था की गई है। आजादी के 65 वर्षों बाद भी यदि राजतंत्र से हमारा मोह भंग नहीं हुआ है तो इसमें हमारे संविधान और हमारे देश की गलती नहीं, अपितु हमारी अपनी गलती है। हम लोकतंत्र में भी राजा बनें रहने का मोह छोड़ पाने को तैयार नहीं है। हमारा यह मोह ही हमारे देश और समाज के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं है। हमारी भारतीय संस्कृति में माया–मोह से विरक्ति रखकर ही मुक्ति की बात की गई है। माया–मोह से आसक्ति रखकर हम अपना लोक तो बिगाड़ते ही हैं, साथ में अपने परलोक को भी बिगाड़ लेते हैं। समाज संगठनों में सालों से जमें लोग अपने को समाज के हितैषी कम ठेकेदार ही ज्यादा साबित करते हैं। समाजसेवा करने का उनका यह मंतव्य एक तरह से संगठन को अपनी जागीर समझने की मानसिकता का भी द्योतक है। अपने स्वयं को ही समाजसेवा हेतु योग्य मान लेने का इसमें दंभ भी समाया हुआ रहता है। दूसरों को योग्य समझने की वे भूल इसलिए भी नहीं करना चाहते क्योंकि वे जानते हैं उनसे बेहतर कोई कर जाएगा तो लोगों को

तुलना करने का अवसर मिल जाएगा। इसीलिए वे अतुलनीय ही बने रहने में अपना हित देखते हैं। कई बार लोगों की इच्छाशक्ति के अभाव के कारण भी ऐसी स्थिति निर्मित हो जाती है और लोकतंत्र के स्थान पर राजतंत्र ही चलते रहता है। यदि ऐसा है तो इसे भी किसी समाज के स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं कहा जा सकता। इस तरह के साहसहीन और नेतृत्व कलाहीन व्यक्तियों से एक उन्नत और विकसित समाज की अपेक्षा करना ही असंगत है। ऐसे लोग समाज की ताकत कम समाज की कमजोरी ज्यादा बन जाते हैं। जो साहस करते हैं, जीत उन्ही की होती है और साहसी ही जीवन भी जी पाते हैं। हमें यह नही भूलना चाहिए कि संगठन के पद पर आसीन होने भर से राजा भोज और राजा विक्रमादित्य नहीं बना जा सकता। इसके लिए उच्च चरित्र, उच्च शिक्षा, उच्च आचार–विचार की आवश्यकता होती है। इसके लिए मंच की नहीं मैदान की जरूरत है, अच्छे भाषण की नहीं, अच्छे–अच्छे काम करने की जरूरत है, अच्छे–अच्छे आदर्श प्रस्तुत करने की जरूरत हैं ताकि लोग आपको अपने दिलों से उतारने की जगह अपने दिलों में उतार सके।

नई तकनीक, नवाचार, नई विचारधारा को अपनाकर ही व्यक्ति समय के साथ चल पाने के लिए अपने को तैयार कर पाता है। पंजाब के किसानों ने वैज्ञानिक तकनीकी अपनाकर हरित क्रांति ला दी। पवारों में जिन लोगों ने वैज्ञानिक तकनीक का सहारा लिया वे आज समृद्ध किसान बन बैठे हैं। और जो पुराने और पारम्परिक तरीकों के आधार पर ही खेती कर रहे हैं वे आज भी गरीब ही बने हुए हैं। समय के साथ चलने के कारण ही अब हम अपने गॉव से शहर पैदल न जाकर किसी वाहन का सहारा लेते हैं। वाहन की सुविधा रहकर पैदल चलकर जाना कोई समझदारी की बात तो नहीं है। ऐसे ही हम इस आधुनिक युग में भी दकियानुसी परम्पराओं को अपनाकर दकियानुसी ही साबित हो रहे होते हैं। विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी समाज के प्रकाशित साहित्य में न देकर हम आधुनिक होने का दंभ नहीं भर सकते। ऐसे में आप अच्छे संबंध प्राप्त न हो पाने का समाज पर दोष मढ़ने का अधिकार

भी खो चुके होते हैं। दूर शहर या दूसरे स्थान से आने का बहाना करके हम यदि मृत्यु भोज करते हैं तो एक तरह से हम मृत्यु भोज को समाप्त करने के स्थान पर उसे बढ़ावा ही दे रहे होते हैं। मृत्यु भोज को बढ़ावा देकर मृत्यु भोज समाप्त करने का भाषण देने का कोई अर्थ नहीं है। समाज संगठनों के मंच पर मृत्यु भोज समाप्त करने का भाषण देने से कहीं अच्छा है मृत्यु भोज न करके आदर्श प्रस्तुत करना। एक तरफ हम आधुनिक होने का ढिंढोरा पीटते हैं और दूसरी तरफ अपने घर के विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी प्रकाशनार्थ देने से कतराते हैं। यह आधुनिक होने का नहीं, अपितु पुरातनपंथी होने का प्रमाण है।

किसी भी समाज की उन्नति उसके संगठनों से नहीं अपितु उसके अपने समाज सदस्यों से होती है। समाज सदस्य स्वार्थरहित होने पर ही समाज का हित साध पाने में सफल हो पाते हैं। स्वार्थ से नहीं, अपितु परमार्थ से समाज हित किया जाता है। अपनी दुकान के लिए समाज संगठन के आयोजन की तिथि तो बदली जा सकती है, पर ऐसा करके समाज की तकदीर नहीं बदली जा सकती। सालों साल संगठन के पद पर रहकर संगठन के निमंत्रण पत्रों में नाम और पत्रिकाओं में तस्वीर तो छपाई जा सकती है, पर इससे समाज की तकदीर और तस्वीर नहीं बदली जा सकती। तकदीर और तस्वीर बदलने के लिए पुरातनपंथी सोच को बदलने की जरूरत होती है, स्वार्थ के स्थान पर परमार्थ को गले लगाना पड़ता है, तब कहीं समाज गले लगा पाता है।

पवारों की प्रगति

प्रगति जीवन में सुख, समृद्धि, सम्पूर्णता और सम्पन्नता लाती है। जीवन का उद्देश्य जीवन को सम्पूर्णता प्रदान करना है। हम मुख्यतः किसान परिवार से सरोकार रखते हैं। किसानी हमारा पेशा है और हमारे जीवन का आधार है। किसानी जीवन का आधार होने के बावजूद हम उससे सबक नहीं लेते। अच्छी फसल के लिए अच्छे बीज का चुनाव करना होता है। केवल अच्छा बीज चुन लेने भर से अच्छी फसल नहीं हो जाती। बीज के साथ उगे खरपतवार को भी समय–समय पर उखाड़ फेंकना होता है। जैसे खरपतवार बीज को पनपने नहीं देता वैसे ही जीवन में हमारे आसपास उगे कुरीतियों और अंधविश्वासों के खरपतवार हमें पनपने नहीं देते। समय रहते हमें इन्हें चुनकर उखाड़ फेंकना होता है।

अपने जीवन की रक्षा हेतु पेड़ गर्मी में अपनी पत्तियॉ छोड़ देते हैं। पेड़ के लिए पत्तियों से ज्यादा अपना जीवन बचाना जरूरी होता है। जीवन रहने पर ही पेड़ अपनी छाया और अपने फल से दूसरों का उपकार कर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकता है। पत्तियों के मोह में पड़कर पेड़ अपने जीवन को दॉव पर नहीं लगाता। पेड़–पौधों के बीच रहने और उनके सहारे जीवन जीने वाले पवारजन पेड़–पौधों से सीखने की जहमत नहीं उठाना चाहते। हम कुरीतियों और अंधविश्वासों के मोह में अपने जीवन को तक दॉव पर लगा देते है, जो कि उचित नहीं है। हम उधार लेकर विवाह एवं मृत्यु भोज देकर एक तरह से अपने जीवन को दॉव पर ही लगाते हैं। फिर बाद का जीवन उस उधार को चुकाने में भेंट चढ़ जाता है। चुट्टी मनाने में कोई बुराई नहीं है। बुराई है चुट्टी मनाने के तरीके में। चुट्टी के नाम पर बलि देना आज के युग व समय के अनुरूप नहीं है। इसे परिवार पूजा व नारियल खारिक पूजा तक सीमित करने की जरूरत है। चुट्टी के नाम पर बलि देकर व सामूहिक भोज का आयोजन करके हम अपने को ही आर्थिक रूप से

विपन्न करते हैं। पूजा में आडम्बर नहीं श्रद्धा भावना प्रमुख है। परन्तु आज पूजा में श्रद्धा भावना कम आडम्बर का स्थान प्रमुख होता जा रहा है।

हमारी भारतीय संस्कृति में चार आश्रमों की व्यवस्था की गई है ताकि हम अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर सकें। ब्रह्मचर्य,गृहस्थ,सन्यास, और वानप्रस्थ। प्रथम आश्रम में शिक्षा दीक्षा की, द्वितीय में पारिवारिक व सामाजिक जीवन के सफलतापूर्वक निर्वहन की, तृतीय में सांसारिक माया मोह से मुक्ति की और चतुर्थ में वानप्रस्थ की व्यवस्था जीवन को सार्थकता प्रदान करने की संसार की सुंदरतम व्यवस्थाओं में से एक है। हम तृतीय और चतुर्थ आश्रम में होने पर भी अभी द्वितीय आश्रम पर ही अटके हुए हैं। रामनाम सत्य करने के समय हम युवाओं के अवसर छीनकर एक तरह से अनुभवहीन पीढ़ी समाज को देने जा रहे है,। हमें चाहिए कि हम युवाओं को अवसर दें ताकि वे संगठन और संगठन के संचालन के बारे में अनुभव अर्जित कर आने वाले समय में अपनी भूमिका का निर्वहन सफलतापूर्वक कर सके। ऐसा न करके हम एक तरह से समाज के प्रति अपने दायित्वों की अनदेखी ही करते है। हम आने वाली पीढ़ी को अनुभवी और गुणी युवाओं को देकर अपनी भावी पीढ़ी को एक अनुभवी और समझदार प्रतिनिधि ही देंगे जो कि आने वाले समय की जरूरत है। केवल अपने बारे में और केवल अपने समय तक की सीमित सोच रखकर हम अपने समाज और अपनी भावी पीढ़ी के साथ न्याय नहीं कर पायेंगे। अब हमें छत की ऊँचाई छूने की कोशिश छोड़कर सीढ़ी बनने की कोशिश करने की जरूरत है ताकि लोग हमारे सहारे छत की ऊँचाई छू सके, आसमान की ऊँचाई छू सके। यदि हम इस भूमिका में उतरने हेतु अपने को तैयार कर सके तो हम अपना लोक और परलोक दोनों ही सुधारने की भूमिका में होंगे।

दूसरों की योग्यता को सम्मान और महत्व देना लोकतंत्र को मजबूत करना है। दूसरों की योग्यता को महत्व और सम्मान देना समाज को मजबूत करना होता है। उसकी योग्यता को महत्व व सम्मान न देने

का मतलब है समाज को उस योग्यता से लाभांवित होने से वंचित करना। इससे समाज उन्नति और विकास के पथ पर अग्रसर होने के स्थान पर वहीं ठहरा हुआ रहता है, वह आगे नहीं बढ़ पाता है। समाज अपने समाज सदस्यों के गुणों से लाभांवित होकर ही उन्नति और विकास के नए आयाम स्थापित कर सकता है। नए विचारों से ही नई राह और नई दिशा मिलती है और वही जीवन को नई दिशा देकर नई दशा भी प्रदान करती है।

समाज सदस्यों के प्रति सम्मान की भावना की कमी से ही आज का युवा वर्ग समाज से कटने लगा है। हर व्यक्ति सम्मान प्राप्ति की अभिलाषा रखता है और जब उसे वह नहीं मिलता तो या तो वह बगावत कर बैठता है या फिर समाज से दूरी बना लेता है। युवाओं की इस मानसिकता को समय रहते पहचानने की जरूरत है और उसके अनुरूप आचरण करने की जरूरत है। कुछ युवा पढ़ लिखकर अपने अनपढ़ माता–पिता को निर्रथक मान बैठते हैं जबकि उनकी सूझबूझ और दूरदृष्टि के कारण ही युवा पढ़ने लिखने की जमीन पाते हैं। इस तरह की अपरिपक्व सोच भी कभी–कभी युवाओं को घर–परिवार और समाज से दूर करने का कारण बन जाती है।

छोटे–छोटे प्रयासों से बड़े–बड़े सामाजिक सुधार संभव

देश को आजाद हुए 65 साल हो गए है। और देश में लोकतंत्र आए 53 साल पूरे हो गए है। किसी भी देश के लिए इतने साल काफी मायने रखते हैं। लोकतंत्र याने जनता का राज। पर यहॉ की बैठक व्यवस्था देखकर तो ऐसा नहीं लगता कि यहॉ अभी लोकतंत्र आया है। मंच पर बैठे गणमान्य तो ऐसे लग रहे हैं जैसे वे इस धरती से नहीं अपितु किसी दूसरे ग्रह से आए हो, चन्द्रमा से, मंगल से। हम आप ही के बीच के व्यक्ति हैं, आप ही के बीच से निकले हैं और आप ही के बीच रहना चाहतें हैं। और आप ही के कंधों पर हमारी अपनी अंतिम यात्रा सम्पन्न होनी है। हमने इतने अच्छे कर्म नहीं किए है कि स्वर्ग से कोई यान उतरकर आ जाए और हमें ले जाए। यदि ऐसा हुआ भी तो ध्रुव की भांति हम भगवान से प्रार्थना करेंगे। कहते हैं, जब ध्रुव को लेने स्वर्ग से यान आया तो ध्रुव ने जाने से मना कर दिया। उसने साफ कह दिया कि मेरी मॉ भी मेरे साथ जाएगी तो ही मैं इसमें स्वर्ग जाऊंगा अन्यथा नहीं। आज मैं जो कुछ हूॅ अपनी मॉ के कारण हूॅ। अतः जहॉ मेरी मॉ है वहीं मेरे लिए स्वर्ग हैं। कहते हैं, वह यान ध्रुव की मॉ के लिए रूका रहा। यदि कहीं ऐसा कोई यान धरती पर आता है तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूॅ मैं आप सबको अपने साथ स्वर्ग लेकर जाऊंगा।

भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम की मान्यता एवं व्यवस्था है। यह पूरी वसुन्धरा ही एक कुटुम्ब की तरह है। जब हम सब एक ही कुटुम्ब के हैं फिर क्या छोटा और क्या बड़ा। क्या मंच और क्या मैदान। हम सब साथ बैठकर हिल मिलकर अपनी बात कहें और सुनें। यह जो मंच हैं वह राजतंत्र का प्रतीक है। यह लोकतंत्र का प्रतीक नहीं है। लोकतंत्र का प्रतीक है यह दरी जिसपर आम आदमी बैठा है। मंच खास होने का दंभ मन में भरता हैं। मैं अध्यक्ष हूॅं मैं लेखक हूॅ, मैं मंत्री हूॅ, मैं अधिकारी हूॅ। और यह मैं ही हमें अपनों के बीच जाने से रोकता है,

अपनों की अपनों के बीच दूरी बनाता है। यह कोई राजनीतिक कार्यक्रम नहीं हैं, यह सामाजिक कार्यक्रम हैं। जब हम अपने समाज में आते हैं तो हम सब समान हैं, सामाजिक बंधु हैं। यहॉ आने के पूर्व हमें अपने पद, अपनी प्रतिष्ठा को अपने घर पर रखकर आना होता हैं। और यदि सुखी रहना है तो इसे अपने कार्यालय में रखकर आना चाहिए। पद, प्रतिष्ठा साथ लेकर आना सामाजिकता नही हैं। यह हमें सामाजिक होने से रोकता है। भारत के राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह अपने राष्ट्रपतिकाल में जब भी स्वर्णमंदिर जाते थे तब कार सेवा करते थे, लोगों के जूते–चप्पल साफ करते थे। समाज में आने पर उस तरह के बड़प्पन और महानता की जरूरत होती है। मन में इस तरह के भाव रखकर ही हम अपने दंभ को विसर्जित कर सकते हैं। जब हम किसी धार्मिक स्थान या तीर्थ यात्रा पर जाते हैं तो अपने घर परिवार के सदस्यों और पास– पड़ोस के लोगों के लिए भी वहॉ का जल और प्रसाद अपने साथ लेकर आते हैं। केवल हम अपनी मुक्ति ही नहीं अपितु अपने वालों की भी मुक्ति चाहते हैं। यह भाव ही आपको सामाजिक बनाता है। अतिथि देवो भवः तो ठीक है पर अतिथि सिर पर बैठे यह ठीक नहीं है। संत ज्ञानेश्वर को तो आप जानते ही होंगे। संत ज्ञानेश्वर अपने माता–पिता की सेवा करते थे। इसे ही वे ईश सेवा मानते थे। संत ज्ञानेश्वर द्वारा की जा रही माता–पिता की सेवा से खुश होकर एक दिन भगवान उपस्थित हो गए। संत ज्ञानेश्वर ने भगवान के लिए ईंट खिसका दी और अपने माता–पिता की सेवा जारी रखी। मेहमान आए तो अपने हाथ का काम छोड़ने की जरूरत नहीं है। हम जैसे हैं वैसे ही रहें। दिखावा नहीं कि मटन–मुर्गी बन रही है, चाय में दूध ज्यादा डल रहा है, चादर टॉवेल साबुन बदले जा रहे है। पड़ोसी के घर का सोफा सेट और किचन सेट लाया जा रहा है। ये सब नौटंकी की जरूरत नहीं है। इन सबके लिए वह नहीं आया है। वह आया है अपनत्व आत्मीयता पाने जो वस्तुओं में नहीं दिल में होता हैं। संत ज्ञानेश्वर की सेवा भावना देखकर भगवान उन्हें आशीर्वाद देकर चले गए।

भगवान राम और कृष्ण के बाद राजा विक्रमादित्य ही इतने गुण सम्पन्न माने जाते हैं। कहते हैं, राजा विक्रमादित्य में 32 गुण विराजमान थे। उनके इन्हीं गुणों के कारण सिंहासन बत्तीसी नामक पुस्तक अस्तित्व में आई जिसमें बत्तीस पुतलियों द्वारा उनके 32 गुणों का बखान किया गया है। कहते हैं, उस सिंहासन पर जो भी बैठता था वह सच्चा न्याय करता था। परन्तु उस सिंहासन पर बैठने के पूर्व 32 पुतलियों के प्रश्नों का जवाब देना पड़ता था। मंच को मैं राजा विक्रमादित्य का सिंहासन मानता हूँ। और उनके 32 गुणों के अभाव में उसपर बैठना पाप समझता हूँ। हम राजा भोज और राजा विक्रमादित्य के वंशज हैं, उनकी तरह गुणी होना हम सबका धर्म हैं। और उनकी तरह गुणी होकर ही हम अपनी धरोहर, परम्परा और संस्कृति को समृद्ध कर सकते हैं, संजो सकते हैं और आगे बढ़ा सकते हैं। इसके लिए आपको बड़ा अधिकारी बनने या किसी बड़े पद पर आने की जरूरत नहीं है। आप जहॉ हैं जैसे हैं वहॉ से भी बड़ा काम कर सकते हैं, समाज सेवा कर सकते हैं। आप दहेज न लेकर न देकर, मृत्यु भोज न देकर और न करके, कुरीतियों ओर अंधविश्वासों को न मानकर, नए आचार–विचारों को अपने जीवन में अपनाकर, आधुनिक तकनीकी का उपयोग करके अपना जीवन संवारने के साथ–साथ एक तरह से समाज का ही जीवन संवारने का प्रयास कर रहे होते हैं। आपके द्वारा किए गए ये छोटे–छोटे प्रयास ही आगे चलकर एक बड़ा सामाजिक सुधार और परिवर्तन लाने की शक्ति और सामर्थ्य रखते हैं।

हमें अपनी संकुचित सोच से ऊपर उठने की जरूरत है जैसा कि हमारी बोली में कहा जाता है–जेना गॉव नी जानूं तेकी बाट नी पूछनूँ। अर्थात जिस गॉव जाना नहीं उसका रास्ता नहीं पूछना चाहिए। यह सोच हमें अपने ज्ञान को सीमित रखने और दूसरों के काम में आने से रोकती है। जबकि हमारी जिंदगी में तभी रौनकता आती है जब हम दूसरों के काम आते हैं। भले ही हमें उस गॉव जाना न पड़े पर यदि उस गॉव का रास्ता हमें मालूम है और कोई भूला–भटका व्यक्ति राह पूछ

बैठता है तो ऐसे में हम उसके काम आ सकते हैं। ज्ञान का होना जीवन में कभी व्यर्थ नहीं जाता। इसलिए जहॉ से भी मिले, जैसा भी मिले, ज्ञान अर्जित करते रहना चाहिए। हम दूसरों से सीखने में और दूसरों को सम्मान देने में काफी कोताही बरतते हैं। खासकर अपने ही वालों से सीखने में हम जरा भी रूचि नहीं दिखाते। इससे हम ज्ञान अर्जित करने से वंचित रह जाते हैं और पुनः अपने को अनावश्यक ही मुसीबतों में डालने का निर्णय ले लेते हैं। जबकि अपने वालों के अनुभवों का लाभ लेकर हम वहॉ तक का अपना रास्ता आसान कर सकते है। परन्तु हमारा अड़ियलपन और हमारा अहंकार हमें यह सब करने से रोकता है। और हम पुनः अपने को दिक्कत में ढकेल देते है। इससे यह होता है कि आगे जाने की जगह हम भी वहीं कहीं तक पहुॅच कर रह जाते हैं। इस तरह जीवन में ज्यादा कुछ विशेष कर पाने में हम सफल नहीं हो पाते। एक और कहावत है लड़कियों के संबंध में। पढ़ा–लिखा ख का कर्हे आखिर म चूल्हा ते फुकनूँ च हय। लड़कियों के प्रति इस तरह की सोच हमारी अज्ञानता और अप्रगतिशीलता का प्रतीक है। हमें यह समझना होगा कि लड़कियों को पढ़ाकर ही हम समाज को बेहतर सदस्य और देश को बेहतर नागरिक दे सकते हैं। इसीलिए कहा जाता है–मॉ के घर हो बेटी जब तक,गुण विद्या सीख ले तब तक।

विवाह संस्कार के समय हम विवाह मुहूर्त के लिए पंडितों के चक्कर लगाते हैं और उनपर पैसा भी खर्च करते हैं। परन्तु नाचने गाने और फिल्मी फूहड़ता के अंधानुकरण में विवाह के मुहूर्त को टालने में हम गर्व का अनुभव करते हैं और अपने खास होने का झूठा अहम् भी अपने मन में पालने में पीछे नहीं रहते। समय पर विवाह न करके और देर रात तक नाच गाना करके सैकड़ों समाज सदस्यों को परेशान होता देख हम खुश होते रहते हैं। देर रात तक विवाह संस्कार सम्पन्न न हो पाने के कारण दूल्हा–दुल्हन को आशीर्वाद देने आए सदस्य बिना आशीर्वाद दिए ही अपने घर लौटने को मजबूर हो जाते है। विवाह मुहुर्त टालकर और समाज सदस्यों का आशीर्वाद लिए बिना ही देर रात तक विवाह सम्पन्न

कराकर एक तरह से हम राक्षसीवृत्ति को ही बढ़ावा देते है। फिर वैवाहिक जीवन में आई दिक्कतों के लिए हम समाज को दोष देते फिरते रहते हैं। गलती करके भी हम गलती स्वीकार नहीं करके एक और गलती ही करते है जो जीवन को सफल होने से बाधित ही करता है। समय पर विवाह सम्पन्न कराकर हम न केवल सबका दिल जीतते है अपितु समाज को भी गौरवांवित करते है। यह अपने जीवनसाथी के प्रति सम्मान भावना का भी प्रतीक है। उल्लेखनीय है, अब विवाह संस्कार केवल समाज सदस्यों तक सीमित न रहकर एक वृहत लोकतांत्रिक स्वरूप ले चुका है। विवाह अवसर पर हमारे द्वारा किए गए आचार–विचार ही अन्य समाज सदस्यों के मन में समाज के प्रति अच्छी व बुरी धारणा बनाने में मदद करते है। हमें चाहिए कम से कम हम अन्य समाज सदस्यों की नजरों में अपने समाज की छवि सुधार न सके तो कम सम कम अन्य समाज सदस्यों की नजरों में इसे बिगाड़ने की कोशिश भी न करें।

सुख–दुख में अपनों का साथ देने में हमारा कोई सानी नहीं था। किसी की मृत्यु हो जाने पर मृतक के शोकाकुल परिजनों को पूरे 10 दिन तक सुबह–शाम भोजन कराया करते थे। दसवा में उपस्थित होते समय यथायोग्य दाल, चावल, आटा, नमक, मिर्च साथ लेकर जाया करते थे ताकि शोकाकुल परिजनों को भोजन कराया जा सके। इतनी सभ्य और सुसंस्कृत संस्कृति को भुलाकर हम अब रोटी खिलाने की जगह रोटी खाने वाले बन गए हैं। समाज सदस्यों के ये छोटे–छोटे स्वार्थ ही समाज को और खोखला तथा कमजोर करते जा रहे हैं। हमें चाहिए कि यदि हम खिलाने वाले न बन सके तो कम से कम खाने वाले भी न बनें और मृत्यु भोज करने के स्थान पर उपवास करके आदर्श प्रस्तुत करें ताकि हमारे इन छोटे–छोटे प्रयासों से ही सही समाज को इन कुरीतियों के बोझ तले दबने से बचाया जा सके ताकि वह अपनी गति से विकास पथ पर अग्रसर होता रहे।

समाज साहित्य से घबराते समाज संगठन

पौराणिक ग्रंथों में उल्लेख है कि जब भी कोई भक्त तपस्या करता तो इन्द्र को बड़ी चिंता सताने लगती कि कहीं भक्त की तपस्या से खुश होकर और उसके द्वारा वरदान मॉगने पर भगवान भक्त को कहीं इन्द्रासन वरदान में न दे दे। इसलिए किसी को भी तपस्यारत देखकर या किसी भी भक्त द्वारा तपस्या करने की भनक लगते ही इन्द्र उसकी तपस्या भंग करने के लिए साम,दाम,दंड,भेद की नीति अपनाने लगता था। यह इन्द्र की कमजोरी ही थी कि वह किसी भक्त को तपस्या करते देख घबरा जाता था और अपनी लकीर बड़ी करने के स्थान पर वह दूसरों की लकीर छोटी करने पर विश्वास करने लगता था और अपनी सारी ऊर्जा दूसरों की लकीर छोटी करने पर लगाने लगता था। एक तरह से इन्द्र अपने राजसिंहासन को अपनी जागीर समझता था जिसपर वह अन्य को बैठा हुआ देख नहीं सकता था। यही उसके दुख का प्रमुख कारण भी था। आज समाज संगठन में भी इन्द्र की मानसिकता वाले लोगों की कमी नहीं है। यही कारण है न तो वे समाज को कुछ दे पाने में सफल हो पा रहे हैं न ही किसी और को समाज को कुछ दे पाने का अवसर मिल पा रहा है। राजतंत्र की इसी कमजोरी के कारण हमारे देश में लोकतंत्र लाया गया पर आज भी समाज राजतंत्र की मानसिकता से मुक्त नहीं हो पाया है। यही कारण है उन्नति और विकास में हम दिन प्रतिदिन अन्य समाजों की अपेक्षा पिछड़ते जा रहे हैं।

आज से आठ सौ साल पहले जब तुलसीदासजी द्वारा रामचरित मानस लिखी गई तो तत्कालीन राजा द्वारा यह संदेश तुलसीदासजी को भिजवाया गया कि वह रामचरित मानस राजा के नाम कर दी जाए। तुलसीदासजी द्वारा मना करने पर वह कृति चुरा लेने की योजना राजा द्वारा बनाई गई और चोरों को भेजा भी गया पर द्वार पर राम लक्ष्मण को पहरा देते देखकर चोर भाग गए। इस घटना का जिक्र तुलसीदासजी द्वारा रामचरित मानस में किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त पंजाबी

साहित्यकार अमृता प्रीतम ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि उसका साहित्य पूरे संसार में चर्चित रहा और खरीदा भी गया, पर पंजाबियों द्वारा नहीं लिया गया। पंजाबियों के घर जीप, बस, ट्रेक्टर सब मिल जायेंगे, बस अमृता प्रीतम की किताबें नहीं मिलेगी। अमृता प्रीतम ने बड़े दुख के साथ लिखा है कि उसकी 100 रु की किताबें भी पंजाबियों द्वारा नहीं ली गई और न ही उसके जीते जी कभी उसका कोई सम्मान किया गया। कमोबेश हर साहित्यकार की अपने समाज में यही स्थिति होती है।

साहित्य से समाज सदैव घबराते रहे हैं। अंग्रेज भी साहित्य से घबराते थे और आजादी की लड़ाई के समय प्रकाशित होने वाले अखबारों और किताबों पर प्रतिबंद लगा दिया करते थे। परंतु प्रतिबंद के बावजूद वह लोगों तक पहुॅच ही जाता था। अंग्रेज तो चले गए पर उनकी मानसिकता अभी इस देश से नहीं गई है। आज भी साहित्य से समाज वैसा ही घबराता है जैसे इन्द्र किसी भक्त की तपस्या को देखकर घबराता था। समाज साहित्य होता ही समाज के लिए है। समाज के लिए लिखा गया समाज साहित्य समाज में नहीं जाएगा तो अन्यत्र उसकी क्या उपयोगिता है ? हम आजादी के बाद लोकतंत्र में जी रहे हैं। हमारे आचार विचार और व्यवहार में लोकतांत्रिक सोच झलकना चाहिए यही संविधान की अपेक्षा है और इस समाज और देश की उन्नति और विकास का आधार भी यही है। साहित्य से ही देश को आजाद कराने में मदद मिली है। साहित्य व्यक्ति के व्यक्तित्व को मांजता है। यदि हम पानी के बर्तन न मांजे तो वे गंदे हो जाते हैं और उनमें रखा पानी पीने की इच्छा तक नहीं होती। इसी तरह साहित्य ही समाज को भी मांजता है। जब समाज तक साहित्य नहीं पहुॅचेगा तो समाज कैसे मंजेगा? अतः समाज साहित्य को समाज तक पहुॅचाना हम सबका मुख्य दायित्व होना चाहिए।

समाज साहित्य का लेखन,संकलन एवं प्रकाशन सहज एवं सरल प्रक्रिया नहीं है। समाज में प्रचलित मुहावरें संकलित करने में वर्षों लग

जाते हैं। रीति रिवाज के संबंध में जानने–समझने ओर उन्हें आत्मसात करने में सालों लग जाते हैं, तब कहीं एक किताब आकार ले पाती है। समाज संगठन की वार्षिक पत्रिका या स्मारिका से समाज साहित्य की तुलना कदापि नहीं की जा सकती। संगठन की पत्रिका या स्मारिका स्थानीय विज्ञापन, संदेश, संगठन के चंद पदाधिकारियों और उनके द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की तस्वीरों का संकलन भर होती है जिसमें कभी–कभी इतनी भी पठनीय सामग्री नहीं होती जो 2 रुपये के अखबार में होती है। इस तरह से ये स्मारिका और पत्रिका अखबार से भी गरीब होती हैं जो एक तरह से समाज के साहित्य में गरीब होने को ही रेखांकित करती है। जिस प्रकार अखबार शाम तक बासी हो जाता है उसी तरह ये स्मारिका और पत्रिका भी शाम तक बासी होकर सत्यनारायण की कथा के प्रसाद की पुड़िया बनाने भर के काम की रह जाती है।

समाज साहित्य का संकलन और प्रकाशन श्रम, समय और समझ की अपेक्षा रखता है। जिस प्रकार सोना तपकर कंचन बनता है उसी प्रकार समाज साहित्य तप मॉगता है। समाज साहित्य पढ़कर ही समाज सदस्य समाज को गहराई तक जानने–समझने का प्रयास कर पाते हैं। आज के समय में जब बच्चे अपने माता–पिता और घर–परिवार से दूर रहकर शिक्षा–दीक्षा ग्रहण करते हैं, ऐसे समय में उनके लिए समाज साहित्य ही उन्हें समाज से जुड़ने और जोड़ने का एकमात्र विकल्प और साधन रह जाता है। यदि यह विकल्प और साधन भी उनके लिए शेष नहीं रखा जायेगा तो उनके बिगड़ने और पथ भ्रष्ट होने के अवसर ज्यादा बढ़ जायेंगे। अतः युवा पीढ़ी को अपनी जडों से जोड़ने के लिए समाज साहित्य की महती आवश्यकता है। और यह निर्विवाद सत्य है कि जो गन्ने के निचले हिस्से की तरह अपनी जड़ों से जुड़ा होता है वह ज्यादा मीठा व रसदार होता है और जो अपनी जड़ों से दूर होता है वह गन्ने के ऊपरी हिस्से की तरह फीका व फोसा ही रह जाता है। आज की युवा पीढ़ी को मीठा व रसदार बनाए रखने के लिए जरूरी है समाज साहित्य उन तक किसी भी माध्यम से पहुॅचाया जाए, अन्यथा उनके

फीका व फोसा रह जाने के लिए असली दोषी हम होंगे न कि युवा पीढ़ी।

अन्य समाज संगठनों के कार्यक्रमों में समाज साहित्य के स्टॉल लगाए जाते हैं। इन अवसरों पर प्रकाशकों को सादर आमंत्रित किया जाता है और उनसे ग्राहकों को विशेष छूट देने का अनुरोध किया जाता है। इस तरह अच्छा साहित्य समाज सदस्यों तक पहुँचाया जाता है ताकि वे इसे पढ़कर ज्ञानार्जन कर सके, संस्कारित हो सके और अच्छे नागरिक बन सके। कई समाजों में किसी के जन्मदिन या खुशी के अवसर पर किताबें उपहार स्वरूप दिए जाने का प्रचलन है। ऐसे में समाज साहित्य या किताबों का समाज के आयोजनों में स्टॉल लगाने की व्यवस्था की जानी चाहिए और समाज साहित्य लेकर पढ़ने के संस्कार बच्चों को दिए जाने चाहिए ताकि समाज सदस्य बेहतर सदस्य बन सके और अपने घर परिवार के साथ ही वे समाज और राष्ट्र की सेवा भी कर सके। समाज और राष्ट्र एक तरह से घर परिवार का ही वृहद स्वरूप है। हमारी भारतीय संस्कृति में इस सम्पूर्ण पृथ्वी को ही एक कुटुम्ब/परिवार की तरह माना गया है। वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा को मानकर एवं उसपर विश्वास करके हम हमारी सोच और हमारे व्यक्तित्व का असीमित विस्तार कर सम्पूर्णता की ओर अग्रसर हो सकते हैं। इस तरह हम अपने घर परिवार के सीमित दायरे से निकलकर देश और दुनिया के असीमित दायरे तक पहुँच सकते हैं।

वल्लभ डोंगरे

महाजनी मनोभूमि का प्रतीक मंडीदीप का मंदिर

पुराणों में उल्लेख है–महाजनों ऐन गतः स पंथाः अर्थात महाजन जिस भी राह जाए वह धर्म पथ बन जाता है। मंडीदीप के महाजन उसी मिट्टी के हैं जिस मिट्टी के अन्य महाजन हैं। अंतर केवल इतना सा है कि मंडीदीप के महाजनों द्वारा अपना महाजनीपन सदैव जीवित रखा गया और उसका मान बनाए रखा गया। महाजन होते हुए भी सभी के अंदर के महाजन को पहचानने का प्रयास किया गया और सबको यथायोग्य अवसर उपलब्ध कराकर उनकी प्रतिभा को समाज हित में साधने का प्रयास किया गया। महाजन होकर उनके द्वारा कभी भी किसी को कमतर नहीं आंका गया। यहॉ मनोहर कबाड़ी भी उतना ही महत्वपूर्ण रहा जितना कि बलराम डहारे। यहॉ धन और नाम मुख्य नहीं रहा, यहॉ मन और मान मुख्य रहा। यहॉ के आयोजनों में बड़े नाम का लोभ नहीं पाला गया और न ही इसपर संगठन की ऊर्जा का ह्रास किया गया। वे भलीभंति परिचित थे कि जहॉ भी बड़े नाम के लोभ में कार्यक्रम का आयोजन किया जाता रहा वहॉ केवल उनके आमंत्रण, आगमन और आवभगत तक ही कार्यक्रम सिमट कर रह जाता रहा। मंडीदीप के महाजनों में पद और प्रतिष्ठा को लेकर कभी भी लोभ लालच नहीं देखा गया। जैसे राम द्वारा भरत की ओर और भरत द्वारा राम की ओर राजपाट सरकाने की निश्छल भाव से कोशिश की जाती रही वैसी ही कोशिश यहॉ दुहराई जाती रही। यहॉ धूप में बाल पकाने वाले जैसे न तो जुमले गढ़े गए न ही उनपर विश्वास किया गया। यहॉ बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट का भेदभाव न कभी किया गया न ही कभी रहा। यहॉ पवार पवार एक रहे चाहे वे किसी भी क्षेत्र व सरनेम के क्यों न हो ? यहॉ बाहर गॉव के दोस्त की अपेक्षा गॉव के दुश्मन पर विश्वास किया जाता रहा यही कारण रहा कि वे भी दुश्मनी छोड़कर दोस्त बनते चले गए। यह स्वतंत्रता, सरलता और सहजता ही लोगों को एक दूसरे

के समीप लाने में सफल साबित हो गई। यहॉ अध्यक्ष होने के लिए अपने क्षेत्र का होने या दुकानदार होने पर जिस दिन उसकी दुकान बंद रहे उस दिन आयोजन करने की बाध्यता नहीं रही। यहॉ लिखित संविधान नहीं रहा पर अलिखित संविधान का पालन भी पूरी तन्मयता से किया जाता रहा। यहॉ संविधान और संवैधानिक प्रक्रिया के प्रति न तो अविश्वास रहा न ही कोई मतभेद। यहॉ लोकतंत्र में राजतंत्र नहीं, लोकतंत्र ही चलाया गया। यहॉ सालों तक हाथ पर हाथ रखे नहीं बैठा गया अपितु ठोस रणनीति पर काम किया गया।

मेरे बाप ने संगठन का गठन किया था तो यह मेरी जागीर है ऐसा कहने और करने वाला यहॉ कोई नहीं रहा। संगठन को अपनी जागीर समझने उसे चुना लगाने वाले भी यहॉ नहीं रहे। यहॉ मंच संचालन को अपनी बपौती मानने वाले और अपने को मंच संचालन में माहिर मानने वाले भी नहीं रहे। यहॉ सालों से चुनाव न कराकर अपने को समाज का सबसे समझदार सदस्य साबित करने का न तो प्रयास किया गया,न ही सदस्यों द्वारा किन्नरों की भांति तालियॉ ठोंकी जाती रही। यहॉ के महाजनों द्वारा सदैव ही इतना बड़प्पन और महानता का परिचय दिया जाता रहा कि दूसरों को आगे बढ़ाने के लिए उनके द्वारा स्वयं को सीढ़ी बनाने में सुख का अनुभव किया जाता रहा और अपनी छाती पर पैर रखकर दूसरों को छत की ऊंचाई तक पहुँचाने में गौरव का अनुभव किया जाता रहा। यहॉ न तो किसी की टॉग खींची गई, न ही किसी की टॉग में अपनी टॉग अड़ाने का प्रयास किया जाता रहा। यहॉ न तो कोई रावण बना, न ही किसी को विभीषण बनने की जरूरत ही पड़ी। यहॉ न तो किसी सदस्य की अच्छाइयों की अनदेखी की गई, न ही उसकी अच्छाइयों से जलकर उसके काम के प्रति दुर्भावना रखी गई। यहॉ साल भर में केवल एक बार आयोजन करने की न तो बात की गई न ही ऐसी रणनीति पर चला गया। यहॉ कोशिश की गई कि हर दिन आयोजन का दिन हो और यही कारण है आज मंडीदीप का हर दिन आयोजन का दिन हो गया है। यहॉ बैठकों भोजन या ईनाम को लेकर

न तो समय जाया किया गया न ही महीनों तक इसपर विचार किया जाता रहा। यहॉ ठोस लोगों द्वारा ठोस रणनीति बनाई गई और ठोस काम किया गया। यहॉ के समाज सदस्य अपने आचार–विचार दोनों में न तो अस्थिर और लुंजपुज दिखाई दिए न ही कभी रहे। यहॉ अपने समाज सदस्यों के सामर्थ्य पर विश्वास किया गया और अपने में कभी भी हीनता का बोध अनुभव नहीं किया गया। यहॉ कम पढ़े लिखे होने पर भी पढ़े लिखे व योग्य सदस्य को अध्यक्ष पद जैसी जवाबदारी देने का साहस दिखाया गया और उसपर विश्वास भी जताया गया। उनके वह साहस और विश्वास का ही प्रतीक है यह मंडीदीप का मंदिर। मंडीदीप के महाजन भलीभंति जानते थे, जहॉ के समाज सदस्य अपने योग्य सदस्यों से जलते हैं वहॉ के संगठन भी स्वयं जल जाते हैं, अतः इस जलने जलाने की प्रक्रिया से यहॉ सदैव दूरी बनाए रखी गई। यहॉ अधीनता को सर्वोपरि मानकर और रखकर अपने वालों को अपने अधीन कर लिया गया। यही कारण है अधीनी से आधा राज जैसी कहावत यहॉ चरितार्थ हो गई। मंडीदीप के महाजनों का यह सबक समाज का सबक बनेगा, ऐसी आशा की जानी चाहिए। वल्लभ डोंगरे

जज्बे,जोश और जुनून से बनते भवन और मंदिर

भवन और मंदिर संगठन के बल पर नहीं अपितु व्यक्ति के जज्बे,जोश और जुनून से बनते हैं। संगठन के बल पर यदि मंदिर और भवन बने होते तो समाज संगठन भवनविहीन और मंदिरविहीन नहीं होते। सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल द्वारा लगातार 15 वर्षो से जो समाज साहित्य प्रकाशित किया जा रहा है वह किसी संगठन के बल पर नहीं अपितु एक व्यक्ति के जज्बे, जोश और जुनून से प्रकाशित किया जा रहा है। संगठन तो अपने शहर में रहने वाले सदस्यों की जानकारी भी प्रकाशित करने में सफल नहीं हो पाते वहीं एक अकेला व्यक्ति पूरे जहॉन की जानकारी संकलित कर समाज को उपलब्ध करा देता है जो जज्बे, जोश और जुनून के बिना संभव नहीं है। मंडीदीप पवार राम मंदिर का निर्माण इसका दूसरा प्रमाण है जो संगठन का नहीं अपितु श्री बलराम डहारे के जज्बे,जोश और जुनून का परिणाम है जिसमें श्री घनश्याम कालभोर द्वारा कंधे से कंधा मिलाकर बराबर की भागीदारी की गई है। यदि संगठन के बल पर या सदस्य संख्या के बल पर इतिहास रचे जाते तो जीत रावण की होती राम की नहीं, जीत कौरवों की होती पांडवों की नहीं। राम और पांडव अपने जज्बे, जोश और जुनून के बल पर इतिहास रचने में कामयाब हुए न कि अपनी सैन्य शक्ति के बल पर।

दुकानदार द्वारा संगठन चलाने का दायित्व लेकर दुकान तो चलाई जा सकती है पर संगठन चलाना संभव नहीं है। संगठन में रहते हुए दुकान का किराना तो खपाया जा सकता है पर संगठन के लिए सिर खपाना आसान नहीं है। संगठन का उपाध्यक्ष रहकर अपनी जमीन तो बनाई जा सकती है पर संगठन जमीनविहीन हो जाता है। योग्य व्यक्ति को सहयोग न करके अयोग्य व्यक्ति को संगठन में जगह देना एक तरह से संगठन को योग्य नहीं अपितु अयोग्य बनाए रखना है। व्यक्ति का स्वार्थी होना और सदैव अपना हित साधना संगठन को कमजोर

करना है। अपने बहनोई के गलत को सही साबित करने में साला जो समय और साथ दे उससे बहनोई तो सध जाता है पर संगठन कहीं पीछे छूट जाता है। अपनी नपुंसकता छिपाने के लिए अपने को तीसमारखां साबित करने में व्यक्ति तो सफल हो जाता है पर संगठन नपुंसक हो जाता है। आयोजित प्रतियोगिता में अपनी पसंद के प्रतियोगियों को अंधे की भांति रेवड़ी देना व योग्य प्रतियोगी के साथ न्याय न करना पंच परमेश्वर की भावना को झुठलाना और संगठन को कमजोर करना है। अध्यक्ष के स्वार्थ में शामिल होकर या निर्धारित तिथि को आयोजन न कराकर, जिस दिन अध्यक्ष की दुकान बंद रहे उस दिन संगठन का वार्षिक कार्यक्रम कराना समाज सदस्यों को सत्तालोलुप बनाने और स्वार्थ साधने जैसे अवगुण उनमें विकसित करना है। इस तरह अध्यक्ष द्वारा अपना स्वार्थ साधकर समाज सदस्यों को स्वार्थ से ऊपर उठने की व समाज सेवा करने की अपेक्षा करना स्वयं भटे खाकर दूसरे को परहेज बताना है। क्षेत्रवाद के बल पर समाज को पदाधिकारी देना विकास का नहीं अपितु अपनी संकुचित सोच का परिचय देना है। वर्षो से बैठकों में काम के नाम पर आलोचना करना, नए इतिहास गढ़ना नहीं अपितु गड़े मुर्दे उखाड़ना है। कौए को सिंहासन पर बिठाकर हंस से आचरण की अपेक्षा करना बबूल बोकर आम चाहने जैसा है। एक अक्षर न लिख पाने वाले का साहित्य संजोने का दंभ भरना बरसने वाले नहीं अपितु गरजने वाले बादल होना है। पढ़े लिखे सदस्यों का ऐसे अध्यक्ष और संगठन को सहयोग करना संगठन को गर्त में ढकेलना है। और न केवल गर्त में ढकेलना अपितु जानबूझकर चुप्पी साधना और अपनी आवाज बुलंद न करना समाज को कमजोर करने पर आमादा होना है। संवैधानिक प्रक्रिया को ताक पर रखकर केवल एक सदस्य द्वारा तानाशाही करना समाज को भारत कम पाकिस्तान ज्यादा बनाना है। तानाशाही तो लोकतंत्र की दाल में कंकड़ की तरह होता है जो कभी गल नहीं पाता। तानाशाही के कारण ही आजकल बच्चे बाप के विरूद्ध जाकर अन्य समाज में अपना सुकून तलाशने लगे हैं। ऐसी तानाशाही जो बाप को

बेटे से जुदा करा दे किस काम की ? जिस बाप से घर नहीं संभले वह संगठन संभालने का दंभ पाले तो इसपर कौन यकीन करेगा ? परन्तु आश्यर्च, ऐसे भी लोग है जिनका अपना कोई जमीर नहीं है और ऐसे लोगों के कारण ही अक्सर समाज शर्मिंदा होते रहता हैं। रीढ़विहीन केचुए होते हैं, इंसानों का रीढ़विहीन होना शोभा नहीं देता। इंसानों का रीढ़विहीन होना समाज को केचुए की प्रजाति में ले जाना है जो भोज और विक्रम की गौरवशाली परम्परा को आगे बढ़ाने के स्थान पर कलंकित ही ज्यादा करेगी।

वल्लभ डोंगरे

व्यंग्य–

शिक्षा और संस्कारविहीन समाज का सच

आधुनिकता की दौड़ में शामिल होने योग्य अभी समाज बन नहीं सका है। 40 से ऊपर आयु वर्ग के समाज के 90 प्रतिशत सदस्य अनपढ़ एवं अशिक्षित हैं। समाज के 98 प्रतिशत सदस्य आज भी गॉवों में रहते हैं एवं बुनियादी सुविधाओं के अभाव में जीवन जीने को अभिशप्त हैं। समाज के 98 प्रतिशत सदस्य खेती कार्य से जुड़े हैं एवं 97 प्रतिशत सदस्य आज भी परम्परागत तरीके से ही खेती करते है। समाज के मात्र 2 प्रतिशत लोग शासकीय एवं गैर शासकीय सेवाओं में सेवारत हैं जिनमें भी 1.5 प्रतिशत अकुशल श्रमिक की श्रेणी में आते हैं। 0.5 प्रतिशत सदस्यों में भी 0.01 प्रतिशत प्रथम एवं द्वितीय श्रेणी के अधिकारी हैं एवं 0.4.9 प्रतिशत समाज सदस्य तृतीय एवं चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी हैं। इन 2 प्रतिशत शासकीय एवं गैर शासकीय सेवाओं में सेवारत सदस्यों की शिक्षा पर नजर डालें तो पायेंगे कि 1.5 प्रतिशत सदस्य हायर सेकेण्ड्री से भी कम शिक्षा ही पूरी कर पाएं हैं। 0.5 प्रतिशत सदस्यों में से भी मात्र 0.1 प्रतिशत सदस्य ही स्नातकोत्तर या उच्च शिक्षा प्राप्त कर सके हैं। 0.2 प्रतिशत सदस्य तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर पाएं हैं और चिकित्सा शिक्षा प्राप्त सदस्य तो उंगलियों पर गिने जा सकते हैं। बैतूल, छिंदवाड़ा, सिवनी, बालाघाट, नागपुर, वर्धा एवं अमरावती में निवासरत लगभग 5 लाख आबादी वाले समाज में अभी तक मात्र दो सदस्य डिप्टी कलेक्टर से कलेक्टर प्रमोट हो सके है। अखिल भारतीय सेवाओं में समाज की न के बराबर भागीदारी समाज की दयनीयता और निरीहता का बयान स्वयं कर देती है। समाज के पढे लिखे सदस्यों में 99.9 प्रतिशत सदस्य प्रथम पीढ़ी के पढ़ैया है। आज भी स्कूल कालेजों में पढ़ने वालों में प्रथम पीढ़ी के पढ़ैयों की संख्या ही ज्यादा है और यह संख्या आज भी 90 प्रतिशत से अधिक ही है। जिस समाज में प्रथम पीढ़ी के पढ़ैयों की संख्या इतनी विशाल हो उस समाज में शिक्षा और संस्कार की दयनीयता का पता लगाना कठिन नहीं है। जो 2 प्रतिशत सदस्य

शासकीय एवं गैर शासकीय सेवाओं में हैं उनकी शिक्षा और उनके संस्कार गर्व करने लायक नहीं है। वे शहर में होते हुए भी गॉव में ही है और पढ़े लिखे होते हुए भी अनपढ़ और अशिक्षित ही है। उनके आचार–विचार और व्यवहार में शिक्षा और संस्कार की झलक नही के बराबर मिलती है। यही कारण है उनके बच्चे भी एक तरह से उन्हीं के प्रतिनिधि भर बनकर रह जाते हैं। वही झिझक, वही साहसहीनता, वही कमजोर व्यक्तित्व, वही लिजलिजापन,वही अपरिपक्वता, वही जलन, ईर्ष्या–द्वेष, वही आत्मकेन्द्रियता, वही अमिलनसारिता, वही कमजोर शिक्षा और संस्कार जीवन पर्यन्त उनका साथ नहीं छोड़ पाते। समाज के पढ़े लिखे सदस्य भी अपने विवाह योग्य बच्चों की जानकारी प्रकाशनार्थ देने में ऐसे सकुचाते हैं मानो वे सदस्यों की जानकारी नहीं अपितु अपनी इज्जत ही सार्वजनिक कर रहे हो। घर में विवाह योग्य कन्या होने पर माता–पिता की सावधानी देखते ही बनती है। हर आने–जाने वालों पर उनकी पारखी नजर रहती है। और यदि घर में पर्दा होता है तो उनके हाथ कहीं भी व्यस्त क्यों न हो वे परदे पर जरूर पहुॅच जाते हैं ताकि उनकी लाड़ली बाहरी अलाय बलाय से सुरक्षित रहे। उनकी लाड़ली बाहर गुलछर्रे उड़ाए तो उड़ाए पर मॉ–बाप के सामने वह अपने को सती–सावित्री साबित करने का कोई मौका नहीं छोड़ती। यह बात अलग है कि एक दिन वह अपने ही मॉ–बाप की ऑखों में धूल झोंककर किसी ऐरे गैरे के साथ छूमंतर हो जाती है। मॉ–बाप इसे भी अपने आधुनिक होने का जामा पहनाने में कोई कोर कसर नहीं छोड़ते भले ही उनकी अपनी औलाद उनका साथ ही क्यो न छोड़ दे। हॉ, यदि कभी बेटे का विवाह करने का सुख मिल जाता है तो अच्छा खासा दहेज लेने में कोई कसर बाकी नहीं रखी जाती पर अपनी बेटी के विवाह का दायित्व निभाते वक्त उनके अंदर का आदमी और खुद का रवैया दोनों ही दहेज मॉगने वालों के विरूद्ध कुछ ज्यादा ही सख्त हो जाता है। इस समय वे बेटी के बाप कम, सामाजिक सुधार कार्यकर्त्ता ज्यादा लगने लगते हैं। आदमी में सुधार का कीड़ा बेटी के

विवाह अवसर पर कुछ ज्यादा ही सक्रिय होता प्रतीत होता है। मानो कई दिनों से सूखे खेत में पड़े बीज को बारिश की पहली फुहार के आते ही बरबराने का अवसर मिल गया हो।

समाज सदस्यों के पास मोबाइल है पर मोबाइल पर बात करने का सलीका नहीं है,बात करने का संस्कार नहीं है। उनके पास शिक्षा के नाम पर सर्टिफिकेट है पर शिक्षा का जीवन में कहीं प्रभाव परिलक्षित नहीं होता। न आचार–विचार में, न व्यवहार में। उनकी सोच में और अनपढ़ व अशिक्षित सदस्यों की सोच में कोई ज्यादा अंतर दिखाई नहीं देता। वे अपनी शादी में सूट लेना तो जानते हैं पर टाई किसी और से बॅधवाते हैं। वे शादी में मोटर सायकल तो मॉगते हैं पर मोटर सायकल किसी और से स्टार्ट करवाते हैं। उनके घरों में टीवी,फ्रीज,सोफा सेट तो मिल जाते हैं पर वे खरीदे वाले नहीं होते अपितु दहेज में लिए वाले होते हैं। स्वाभिमान के नाम पर उनके पास कुल जमा पूॅजी न के बराबर होती है, केवल शादी के सूट और दहेज के स्कूटर, मोटर सायकल में पूरी जिंदगी गुजारने में वे जिंदगी का सार और समझदारी दोनों देखते हैं। हर दिखावे के अवसर पर वे ससुराल पक्ष से मिले शादी के सूट में ही शोभायमान होना पसंद करते हैं। महिला शिक्षा के नाम पर आर्ट लेकर घर बैठे शिक्षा प्राप्त कर बहनजी टाइप का बाना लपेटने का उन्हे शौक होता हैं। उनके बदन पर पेटीकोट और साड़ी ऐसे विराजती हैं मानो उनमें छत्तीस का ऑकड़ा हो। मानो पेटीकोट और साड़ी बेमेल पति–पत्नी के जोड़े का प्रतिनिधित्व कर रहे हो। और कभी–कभी तो ऐसा लगता है, मानो दोनों आपस में पति–पत्नी की तरह खींचतान कर रहे हों। चोटी के नाम पर सुअर की पूॅछ की तरह उलझे बाल और कभी कभी चिड़िया के घोंसले की तरह तैयार बाल जुओं को अंडे रखने हेतु सुविधाजनक होते हैं। मेकअप के नाम पर राख की भांति चुपड़ा पावडर भरा चेहरा और गेहूॅ पीसने वाले के चेहरे पर जमे हुए आटे में अंतर करने में मुश्किल नहीं होगी। चाल उनकी ऐसी मानो चप्पल का उनके पैरों से बैर हो। वे ऐसे चटकाती है चप्पलें कि सोने वाला भी जाग जाए और

ऐसी डालती है टॉगे कि मानों दौड़कर किसी बस या ट्रेन को पकड़ना हो। होठों पर लिपिस्टिक ऐसा मानो अभी–अभी पान खाकर पिक से रंग लिए गए हो। ऑखों में काजल ऐसा मानो नाखूनों से उन्हें नोंच दिया गया हो। उनकी पायल की आवाज इतनी कि मानो पायल नहीं अपितु उनके बॉडी गार्ड हो जो रास्ते में आने–जाने वाले हर शख्स से कह रहे हो–दूर हटो ये दुनिया वालों। जब अपनी किसी परिचित से वे बात करती है तो लगता है मानो वे बात नहीं कर रही, लगभग चीख ही रही हैं। खाना ऐसे खाती हैं मानो उनके द्वारा चपड़–चपड़ का राग ही छेड दिया गया हो। और खाना खाते समय इतनी हिलती है कि मानों पेट को हलोसा मार–मारकर और ठूॅस– ठूॅसकर भरने का प्रयास किया जा रहा हो। वे कितनी भी पढ़ी लिखी हों वे अपने मर्द की छाती पर बैठकर ही मायके जाती और ससुराल आती हैं। यदि उनके साथ बस और ट्रेन में उनका मर्द या कोई मेल सदस्य हैं तो समझो यह कोई पढ़ी लिखी पवारन बाई ही है जो आत्मविश्वास से बेहद कमजोर है और किस्मत से गॉव से शहर में ब्याह दी गई है या नौकरी कर रहे अपने मर्द के साथ शहर में आ गई है। लड़कर तो वह लंका भी जीत लाए पर बस और ट्रेन में उसके लिए मर्द का साथ और हाथ दोनों जरूरी होता है।

मोबाइल पर मिस काल देकर सामने वाले से बेक काल की अपेक्षा करना उनकी आदतों में शुमार होता है। वे अपने काम के लिए भी सामने वाले से अपेक्षा करने मे पीछे नहीं रहते कि वे ही काम करके उन्हे सूचित कर दें। मोबाइल पर निरंतर कॉल आए तो समझ लो यह किसी पवार का ही है क्योंकि वह यह मानता है कि वह आपसे ज्यादा व्यस्त हैं और आपसे काम कराए बिना दम नहीं लेने वाला है। आप यदि किसी पवार से उसकी जानकारी लेना चाहे तो वह कभी यह बताने की जरूरत नहीं करेगा कि वह भी पवार ही है। वह पूरा सफर पूरा कर देगा, आपकी बात सुनकर आपको पहचान भी लेगा पर वह यह कभी यह बताने की जरूरत महसूस नहीं करेगा कि वह भी पवार ही है। कहते हैं, सॉप के दॉत टूट जाए तो वह जहर उगलना छोड़ देता है पर आदमी के दॉत

भी टूट जाए तो वह जहर उगलना नहीं छोड़ता और पवार नाम का प्राणी इसका अपवाद कैसे हो सकता है ? वह तो जहर उगलने के लिए सदा तैयार रहता है भले ही उसे जहर उधार ही क्यों न लेना पड़े? कुछ चीजों को जीवन में छोड़ना पड़ता है। मुर्दो को उखाड़कर देखा नहीं जाता और चिता की भस्म को पानी में बहा देना पड़ता है। पर पवार जहॉ भी एकत्रित हो जाएं वे गड़े मुर्दे उखाड़ने में ही अपनी आन, बान और शान समझते हैं। मूॅछ तो भोज और विक्रम के साथ ही दफन हो गई पर ताव देना अभी पवारों की आदत में है। कभी पड़ोस में भूल से भी पवार बस जाए तो उनसे मित्रता निभाना उतना ही मुश्किल है जितना कि किसी की बेटी को बहू के रूप में जिंदगी भर निभाना। अपनों से दुश्मनी मोल लेना उनके बाए हाथ का खेल है और दूसरों के आगे दुम हिलाने में उनका कोई सानी नहीं है। वे भले ही कुॅए के मेंढक क्यों न हो पर अपने को पूरी दुनिया का जानकार साबित करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखते।

राजा भोज और विक्रम को अपना पूर्वज मानने वाले पवार शिक्षा,स्वास्थ्य, संस्कार और आचार–विचार में इतने कमजोर हैं कि उन्हे देखकर यह यकीन ही नहीं होता कि वे कभी राजवंश से सरोकार भी रखते रहे हों। नाम से राजा और काम से रंक पवारों का अब अपनी ही रगों पर से विश्वास उठता जा रहा है जिसे उनके अपने जीवन के लिए ठीक नहीं कहा जा सकता। एक बार फिर उन्हें भोज और विक्रम की परम्परा को आगे बढ़ाने के लिए आगे आना होगा अन्यथा उनकी आने वाली पीढ़ी भी उन्हीं की तरह अकर्मण्य ही साबित होगी।

वल्लभ डोंगरे

विक्रम सा पराक्रम और भोज सा ओज जीवन में जरूरी

विक्रम सा पराक्रम और भोज सा ओज लाकर ही जीवन में कुछ महान् कार्य किया जा सकता है। पवार वंश के इन पराक्रमी और ओजस्वी राजाओं के वंशज होने के नाते हमारा दायित्व और बढ़ जाता है कि हम अपने इन पूर्वजों की परम्परा को अपने पराक्रम और ओज से आगे बढ़ाए ताकि आने वाली पीढ़ियॉ ंहम पर गर्व कर सके और स्वर्ग में रह रहे हमारे पूर्वजों की आत्माओं को शांति मिल सके।

राजस्थान के जैसलमेर जिले में बड़ी–बड़ी चट्टानें ही चट्टानें हैं। वहॉ एक रिवाज है। महिलाएं गीत गाती हैं और मुखिया अपने हाथ में घन लिए खड़ा रहता है। जैसे ही गीत खत्म होता है वैसे ही मुखिया अपना घन पूरी ताकत के साथ चट्टान पर दे मारता है और चट्टान टुकड़े–टुकड़े हो जाती हैं। गीत में गाया जाता है कि तुम्हारे पूर्वजों ने कई आक्रमणकारियों को धूल चटाई है, कई आततायियों को मौत के घाट उतारा है, उनकी उपस्थिति में बहन–बेटियों की आबरु सुरक्षित रहती थी, क्या मजाल कि कोई उनकी तरफ ऑख उठाकर भी देख लें। उन्होंने कभी अपनी मॉ का दूध नहीं लजाया। तुम्हारी रगों में भी तुम्हारे पूर्वजों का ही खून बह रहा है, तुम्हें भी उन्हीं के नक्शे कदम पर चलना है। और यह गीत सुनते–सुनते ही न जाने कहॉ से मुखिया के शरीर में अचानक शक्ति उतर आती है, जोश उतर आता कि यकायक ही घन पूरी ताकत से चट्टान पर चल जाता है और चट्टान टुकड़े–टुकड़े हो जाती है। इस तरह वे अपने पूर्वजों के मान–सम्मान का बराबर ख्याल रखकर, अपने प्रयासों से सदा उनके मान–सम्मान में इज़ाफा करने का प्रयास करते रहते हैं। इसी तरह अब पवारों की सभ्यता और संस्कृति की बागडोर इस वर्तमान पीढ़ी के हाथ में हैं। भगवान करें, आप सबको भी अपने दायित्व का बोध हो एवं उसे पूरा करने की भगवान आप सबको शक्ति एवं सामर्थ्य प्रदान करें।

एक समय था जब हम अपना गॉव छोड़कर नौकरी के लिए बाहर

निकलने का साहस नहीं कर पाते थे और जितनी चादर है उतने पॉव फैलाने के दर्शन को अपने जीवन का यथार्थ मान बैठते थे। इससे जाने–अनजाने हम जिंदगी में वह विकास और उन्नति नहीं कर पाते थे जो एक घर परिवार की उन्नति के लिए जरूरी होती थी। यही कारण है अधिकांश पवारजन गरीबी में जन्म लेते हैं, गरीबी में जीवन जीते हैं और गरीबी में ही मर जाते हैं। घर परिवार से दूर रहकर व्यक्ति को जो ज्ञान और अनुभव होता है उसी से उसका जीवन और परिपक्व होता है। दूर रहकर ही व्यक्ति अपने घर परिवार की अहमियत समझ पाता है और इससे परिवार के सदस्यों के बीच परस्पर प्रेम और प्रगाढ़ होता है। आज भी गॉवों की स्थिति में ज्यादा सुधार नहीं हुआ है। आजादी के इतने सालों बाद भी गॉव में शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति चिंताजनक ही बनी हुई है। गॉवों में ही बसने एवं आर्थिक स्थिति दयनीय होने के कारण उचित शिक्षा–दीक्षा प्राप्त न कर पाने से पवार जन जीवन के हर क्षेत्र में अपेक्षित प्रभाव नहीं जमा पाते और हर जगह उपेक्षित ही रह जाते हैं। गॉव से निकलकर शहर में शरण ले लेने भर से व्यक्ति विकास की ऊंचाइयॉ नहीं छू पाता, इसके लिए उसे अपने पुरुषार्थ के बल पर परिश्रम करने और जीवन में कुछ कर गुजरने के माद्दे से भरा होना पड़ता है। गिरने के भय से चलना प्रारंभ न करने वाले लोग कभी भी मंजिल तक नहीं पहुॅच पाते। चलना प्रारंभ करिए, भले ही गिर जाओ। पुनः उठकर चलने का प्रयास करिए। डरे नहीं, अपितु डर को इतना डरा दें कि फिर कभी वह आप तक फटक न पाए। अपने पूर्वजों को याद करिए उनके द्वारा किए गए अच्छे कार्यों को याद करिए और मन में उनसे बेहतर करने का संकल्प लीजिए तभी पूर्वजों का मान बनाए रखा जा सकता है और तभी मॉ के दूध की लाज रखी जा सकती है। विक्रम सा पराक्रम और भोज सा ओज लाकर ही जीवन में कुछ महान् कार्य किया जा सकता है और साधारण होते हुए भी कुछ असाधारण किया जाकर भोज और विक्रम की परम्परा को आगे बढ़ाया जा सकता है।सीमित से असीमित होने के लिए पराक्रम और ओज दोनों जरूरी है।

वल्लभ डोंगरे

जगदेव पवार का सिर दान

गढ़वाल गौरव गाथा में उल्लेख है कि देवसभा में एक दिन देवभूमि उत्तराखंड की देखभाल व प्रजा की रक्षा हेतु राजा के लिए सिर दान देने की कसौटी नियत की गई। अब ऐसे सिर देने वाले व्यक्ति की तलाश के लिए उपस्थित सभासदों द्वारा चंचू भाट साधारण बाप की असाधारण बेटी कैड़ी कंकाली को चुना गया। कैड़ी कंकाली बड़ी दयालु,सबका हित साधने वाली व सबके दुख हरने वाली थी, इसिलिए सबकी प्रिय और चहेती थी। उसे वरदान था कि वह जहॉ चाहे वहॉ पहुॅच जाती थी। भगवान शंकर द्वारा आदेश पाते ही कैड़ी कंकाली भगवान को हाथ जोड़ व शीश नवाकर उपयुक्त व्यक्ति की खोज में निकल पड़ी।

योगिनी का भेष धारण कर कैड़ी कंकाली देश देशांतर घूमते फिरते धारा नगरी पहुॅची जहॉ जयदेव व जगदेव दो भाई रहते थे। भिक्षुणी पहले जयदेव के घर पहुॅची। दान से बचने के लिए जयदेव द्वारा भिक्षुणी से यह कहलवा दिया गया कि–राजा शिकार पर गये हैं। जगदेव ने जब यह सुना तो वह अपने भाई के इस कृत्य पर बड़ा शर्मिन्दा हुआ। भाई द्वारा भिखारिन को घर से खाली हाथ लौटाना उसे अच्छा नहीं लगा। जगदेव ने भिखारिन को दान देने की इच्छा से अपने राजमहल में बुलाया। जगदेव की सात रानियॉ थी। जगदेव सोच में पड़ गया कि भिखारिन को दान में क्या व कितना दिया जाए ? वह एक–एक करके सब रानियों के पास गया। किसी ने धन धान्य देने की बात कही, किसी ने पशु धन तो किसी ने कपड़े–गहने तो किसी ने सोना–चॉदी देने की बात कही। अंत में, सबसे छोटी, सबसे कम प्रिय चौहानवंशीय रानी के पास पहुॅचा। अचानक राजा को अपने कमरे में पाकर रानी अत्यधिक प्रसन्न हुई व आने का प्रयोजन जानना चाहा। राजा द्वारा वही सवाल करने पर रानी द्वारा कहा गया कि दान करना ही है तो सिर दान में दिया जाए, वस्तुओं में क्या रखा है ? अन्य रानियों को जब यह पता

लगा तो उन्होंने एक स्वर में कहा कि भिखारिन को सिर दान देना उचित नहीं है। तब तक चौहान रानी सजधज कर व आरती में तलवार लेकर राजा के सम्मुख उपस्थित हो गई और बोली कि आप आज्ञा दे तो मैं इसी क्षण अपना सिर काटकर चरणों में चढ़ा दूं। राजा अपनी रानी का यह क्षत्रियाना स्वरूप देखकर रोमांचित हो गया और वह अपना सिर दान देने के लिए उद्धत हो गया। राजा जगदेव तलवार उठाकर भिखारिन के सम्मुख जाकर खड़ा हो गया और एक ही वार में अपना सिर काटकर भिखारिन के कमंडल में दान स्वरूप अर्पित कर दिया। कैडी कंकाली सिर लेकर तत्काल देवभूमि की ओर उड़ चली। सिर देखकर भगवान शंकर बड़े प्रसन्न हुए । वे देवों को साथ लेकर धारानगरी पहुॅचे एवं राजा का सिर उनके धड़ पर रखकर उसे पुनः जीवित करने लगे। यह देखकर चौहान रानी बोली– भगवन, दिया हुआ दान वापस नहीं लिया जाता। मेरे पति अपना सिर दान कर चुके हैं अतः वापस लेना अब संभव नहीं है। सभी देवता दान की इस उच्च भावना से अत्यधिक प्रभावित हुए । बिना समय गवाएं उनके द्वारा नया सिर लाया गया और जगदेव को जीवित कर दिया गया। देवों द्वारा इस उच्च दानी राजा जगदेव को देवभूमि का राज्य सौंप दिया गया। इस तरह उत्तराखंड में भी पवारों का राज्य स्थापित हो गया। जगदेव पवार का सिरदान यही संदेश देता है कि संसार में साहस दिखाए बिना कुछ भी प्राप्त करना संभव नहीं। साहस के बिना तो यश की कल्पना भी नहीं की जा सकती। अपने पूर्वज जगदेव की राह पर चलकर पवारजन न केवल उनकी आत्मा को शांति प्रदान कर सकते हैं अपितु अपना भाग्य भी अपने हाथों लिख सकते हैं। आशा की जानी चाहिए कि अपनी गौरवमयी परम्परा को पवारजन जारी रखने में सदैव तत्पर रहेंगे।

प्रकाशक–सिद्ध,हेजलवुड,मसूरी द्वारा प्रकाशित पुस्तक "गढ़वाल गौरव गाथा" में प्रकाशित कहानी के आधार पर लिखी गई कहानी।

आकलन में अंदाजा लगाकर अंधा आकलन करते पवार

मिट्टी का बर्तन लेते वक्त भी उसे ठोक बजाकर देख लिया जाता है। दो रुपये का धनिया लेते वक्त भी उसका हरापन व उसकी गंध देख ली जाती है। बीज बोने के पूर्व बीज की प्रामाणिकता और उसके उगने की संभावना पर विचार कर लिया जाता है। इस तरह आकलन का जीवन में महत्वपूर्ण स्थान होता है पर पवार आकलन में ही सबसे ज्यादा अगंभीर होते देखे गए हैं। यही कारण है, जीवनसाथी ढूँढते वक्त भी वे गंभीर नहीं होते और "चट शादी पट तलाक" के शिकार हो जाते है। अदालतों में जितने भी मामले दर्ज होते हैं उनमें 60 प्रतिशत मामले पवारों के तलाक संबंधी होते हैं। तलाक संबंधी मामलों की इतनी बड़ी संख्या विवाह पूर्व आकलन की कमी का परिणाम होते हैं।

सही आकलन न कर पाने और नदी पर कोई जानवर पानी पीने आया होगा जानकर राजा दशरथ द्वारा शब्दभेदी बाण छोड़ देने से राजा दशरथ के हाथों अपने अंधे माता–पिता के लिए पानी लेने आए श्रवण का वध हो जाता है और राजा दशरथ पाप के भागीदार बन जाते हैं तथा श्रवण के माता–पिता द्वारा दिए गए शाप के कारण उन्हें अपने पुत्र राम के वियोग में प्राण त्यागना पड़ता है। एक थोड़ी सी भूल, कि कोई जानवर पानी पीने आया होगा, एक व्यक्ति के वध का कारण बन जाती है। आकलन सही न कर पाने के कारण व्यक्ति को होने वाले दुख के संबंध में कहा जाता है कि सब्जी बिगड़ने से दिन बिगड़ता है, अचार बिगड़ने से साल बिगड़ता है और विवाह बिगड़ने से पूरी जिंदगी बिगड़ जाती है। विवाह और युद्ध दोनों में आकलन और सावधानी जरूरी है क्योंकि इनमें की गई गलती को सुधारने का फिर कभी मौका नहीं मिलता। फिर पवारों द्वारा सबसे ज्यादा गलती तो विवाह में की जा रही है और एक तरह से पवारों में विवाह बेमेल ही हो रहे हैं। इन बेमेल विवाहों में मेल बिठाने में ही उनका अधिकांश समय और ऊर्जा व्यय हो

जाती है तथा अन्य क्षेत्रों में उन्नति करने के लिए उनके पास न तो ऊर्जा होती है, न समय, न ही इच्छाशक्ति। इस तरह विरासत में मिली एक एकड़ जमीन आधा एकड़ ही रह जाती है वह डेढ़ एकड़ नहीं हो पाती। उन्नति तो तब मानी जाएगी जब एक की डेढ़ हो जाए, दो हो जाए, तीन हो जाए।

यदि हम जीव जगत पर नजर डाले तो पायेंगे कि उनके जीवन में भी आकलन का उतना ही महत्व है जितना कि मानव जीवन में। मधुमक्खी अपना छत्ता मानव की पहुँच से दूर बनाती है। पक्षी अपने घोंसले किसी झुरमुट या सुरक्षित स्थान पर बनाना ही पसंद करते हैं। बकरी, कुत्ता भी बैठने के पूर्व जमीन को अपने खुर और पंजे से खरोंचकर ही बैठते हैं। आदमी के झुकते ही कुत्ता दुम उठाकर भाग लेता है कि कहीं पत्थर उठाकर वह उसपर न दे मारें। एक साल भर का शिशु भी अपने पिता को गुस्से में देखकर उसके समीप आने का साहस नहीं जुटा पाता। कहने का तात्पर्य यह है कि हर व्यक्ति अपने जीवन भर में आकलन का किसी न किसी रूप में सहारा लेता है।

भुजलिया का त्योहार एक तरह से गेहूं के बीजों के उगने की स्थिति के आकलन के लिए उपयुक्त त्योहार है।बलि देने के पूर्व बकरे पर पानी डालकर परखा जाता है कि वह बलि के लिए तैयार है या नहीं। उसके द्वारा अपने शरीर को झटक लेने को उसकी सहमति माना जाता है और तभी उसकी बलि दी जाती है। पवारी बोली में आकलन को ताड़ना कहा जाता है। किसी के उपयोग के पूर्व उसको ताड़ना एक तरह से आकलन कहलाता है। पहले शादी विवाह के अवसर पर सम्मिलित बहन बेटियों के आचार विचार व व्यवहार देखकर विवाह संबंध तय किए जाते थे, जिससे उनमें स्थायीत्व व प्रगाढ़ता होती थी। अब ऐसे अवसरों पर उनके सम्मिलित होने के अवसर घट जाने से घर परिवार के लिए उपयुक्त बहू खोजने और उपयुक्त बहू प्राप्त करने के अवसर भी घट गए हैं। एक झलक भर पा लेने और संभावित बहू के हाथ से चाय नाश्ता भर कर लेने से उसे उपयुक्त मान लेने में खतरे ही होते

हैं। और पवारों में यही हो रहा है। यही कारण है आज पवारों का वैवाहिक जीवन अन्य समाजों के जोड़े की अपेक्षा कमतर सफल व सुखी होता है। आकलन में अंदाजा लगाकर हम अंधा आकलन ही करते हैं। अंधा सदैव उजला जीवन ही दे, जरूरी नहीं। खुली ऑखों से किया गया आकलन कभी भी बंद ऑखों से किए गए आकलन की अपेक्षा बेहतर ही होता है, अतः पवार अपनी ऑखें खुली रखना सीखें ताकि उनका जीवन पूर्णतः खिल सके। अधखिला फूल और अधखिला जीवन दोनों ठीक नही होते। पूर्णता ही जीवन का उद्देश्य हैं जिसे पाना ही जीवन को सफल बनाना है। आकलन की उपेक्षा आदमी को कही का नहीं रखती। आकलन को अपने व्यवहार का अभिन्न अंग बनाकर ही हम सुखी जीवन की नींव रख सकते हैं। आकलन को नजरअंदाज कर हम हर बार राजा दशरथ द्वारा की गई भूल को ही दोहराते रहेंगे और आए दिन जाने अनजाने हमारे हाथों कई श्रवणों का वध ही होते रहेगा।

वल्लभ डोंगरे, भोपाल

समाज का अध्यक्ष अपने लिए नहीं समाज के लिए बनाएं

समाज का अध्यक्ष समाज के लिए बनाया जाना चाहिए पर पवारों में समाज का अध्यक्ष अपने लिए, अपने क्षेत्र के लिए और अपने जैसा बनाया जाता है। जब तक हम समाज का अध्यक्ष अपने लिए और अपने जैसा बनाते रहेंगे तब तक समाज का विकास संभव नहीं है। समाज के लिए अध्यक्ष बनाने के लिए अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचना होगा तभी हम समाज के लिए समाज जैसा अध्यक्ष दे पाने में सफल हो सकेंगे। अखिल भारतीय पवार महासभा का चुनाव पिछले दिनों बैतूल में हुआ था जिसमें पहली बार बैतूल जिले के उम्मीदवार को अध्यक्ष बनाने की सहमति बनी थी परन्तु कुछ गोत्र विशेष के लोगों के बहकावे में आकर बैतूल में कुछ गोत्र विशेष के लोगों द्वारा अपने गोत्र के व्यक्ति को ऐन वक्त पर खड़ा कर सारा समीकरण बिगाड़ दिया गया जिससे सालों की अपेक्षा पर पानी फिर गया। भोपाल में तत्तकालीन अध्यक्ष और उपाध्यक्ष द्वारा सचिव उसे बनाया गया था जिसका भाई विवाह योग्य था ताकि अध्यक्ष या उपाध्यक्ष किसी भी एक की विवाह योग्य बेटी उस घर में खपाई जा सके। यह बात अलग है कि तथाकथित व्यक्ति द्वारा अपने भाई के नाम पर पद तो पा लिया गया पर अध्यक्ष–उपाध्यक्ष को बहती गंगा में हाथ साफ करने के स्थान पर हाथ मलते ही रह जाना पडा। यदि समाज के लिए सचिव बनाया गया होता तो तथाकथित व्यक्ति में कोई और गुण देखे जाते जिसकी की समाज को जरूरत थी पर यहॉ तो सारा माजरा ही अलग है। जब हम अध्यक्ष और उपाध्यक्ष जैसे पदों का उपयोग अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिए करने लगेंगे तो समाज का विकास कैसे संभव हो सकेगा ? चुनाव करते समय यह ध्यान रखा जाना जरूरी है कि अध्यक्ष और उपाध्यक्ष ऐसे न हो जो समाज को भूखा रखकर स्वयं अपने लिए रोटी सेंकते रहें। अध्यक्ष–उपाध्यक्ष तो ऐसे होना चाहिए जो स्वयं भूखे रहकर समाज को खिलाने का माद्दा रख सकें।

अशिक्षा और अनपढ़ता के कारण हम निज स्वार्थ से ऊपर उठकर काम करने का कभी न तो सोच पाते हैं, न ही कभी उससे ऊपर उठकर काम ही कर पाते हैं। हम अध्यक्ष भी बनते हैं तो पहले अपने लिए बनते हैं फिर बाद में समाज के लिए। समाज हमारी प्राथमिकता कभी नहीं रहता। हमारी प्राथमिकता सदा हम ही रहते हैं। समाज के लिए अध्यक्ष बनने वाले लोग विरले होते हैं जिन्हें भीड़ में से नहीं खोजा जा सकता। ऐसे लोग भीड़ में नहीं, भीड़ से बाहर होते हैं। हम भीड़ में से अपना विकल्प तलाशते हैं इसीलिए हमेशा अच्छा विकल्प छूट जाता है और बार–बार वही हाथ लग जाता है जो हमारे हाथों की पहुॅंच में होता है। दायरे में बंधकर अच्छा विकल्प खोजना उतना ही कठिन है जितना कि पानी से मक्खन निकालनां। भोज और विक्रम के वंशज अपने लिए भोज और विक्रम की भांति विकल्प खोजे तो समझ में आता है पर जब गंगू तेली को पद पर बिठाया जाता है तो भोज और विक्रम की तरह उससे ओज और पराक्रम की अपेक्षा करना वैसे ही है जैसे सियार से शेर की तरह आचरण की अपेक्षा करना। सियार तो सियार है उसे आप शेर मान रहे हैं या बनाना चाह रहे हैं तो इसमें आपकी गलती है न कि सियार की। सियार तो सियार की भांति ही आचरण करेगा, इसमें उसका क्या दोष ?

व्यक्ति के पढ़े लिखे होने और उच्च पद पर होने भर से आप प्रभावित न हों जाएं। यह भी देखे कि उसके संबंध किसके साथ हैं और समाज में उनका वजूद क्या है। वह कहीं गो़त्रवाद और क्षे़त्रवाद तक अपने को सीमित रखने वाला और संकुचित मानसिकता वाला तो नहीं है। यह भी देखा जाना उचित होगा कि वह स्वयं दकियानुसी सोच से ऊपर उठा हुआ हो और उसमें समय के साथ चलने का साहस भी हो। यदि ऐसे व्यक्ति अध्यक्ष पद पर विराजमान हो जाते हैं तो राजा की कम और मंत्रियों की ज्यादा चलेगी जो समाज हित में नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि अध्यक्ष का अपना स्वयं का विजन होना चाहिए अपनी स्वयं की स्वतंत्र सोच होनी चाहिए और दूसरों के बहकावे में न आने का

साहस और संबल होना चाहिए। तभी समाज को वह कुछ दे सकने योग्य बन सकेगा और तभी समाज का विकास संभव हो सकेगा।

समाज का विकास करने के लिए आपको ऐसे अध्यक्ष को आगे लाने की हिम्मत दिखाना होगा जो पवार कम है पर किसी पवार से कम नहीं हैं। हम अंदर तो स्वार्थ पालें और बाहर यह दिखावा करें कि हम स्वार्थ से ऊपर उठकर काम कर रहे हैं तो इससे समाज हित नहीं सधने का। समाज हित साधने के लिए जो अंदर है वही बाहर भी दिखाना होगा या लाना होगा। हम बुरा सोचकर या मन में बुरे विचार रखकर समाज का भला करना चाहें तो यह संभव नहीं हैं। हमारे बुरे विचार या हमारा बुरापन ऑखों से भले ही दिखाई न दे पर बीज जब अंकुरित होता है तो वह अपना ही प्रतिरूप संसार में लाता है। वह अपने जैसा ही एक नया सृजन करता है। यही कारण है किसान अपने खेत के लिए उच्च गुणवत्ता वाले बीज का ही चुनाव करता है क्योंकि बीज के चुनाव पर ही फसल की पैदावार और आवक निर्धारित होती है। हम जिस तरह अपने खेत के लिए बीजों का चयन करते समय खराब और सड़े गले बीजों के स्थान पर अच्छे बीजों का चयन करते हैं उसी तरह समाज के लिए अध्यक्ष या अन्य पदों पर चुनाव करने के पूर्व समाज के अच्छे सदस्यों में से ही उन्हें चुनने की कोशिश की जानी चाहिए। अध्यक्ष ऐसा नही होना चाहिए जो अंधे की भांति फिर फिर अपनों को ही रेवड़ी बॉटें या आयोजनों में अपने ही साढू भाइयों को आमंत्रित कर श्रीफल और शाल भेंट करें ताकि वे भी अपने यहॉ के आयोजनों में आमंत्रित कर श्रीफल और शाल भेंट कर सकें ताकि थोड़ी देर ही सही सम्मान से सिर तो उठाया जा सकें क्योंकि बाकी तो सब काम ऐसे ही है कि जहॉ शर्म से सिर झुकना ही झुकना है। केवल सालों तक पद पर बने रहने को ही योग्यता न मानें अपितु यह भी देखें कि समाज हित में क्या किया गया है। हम अपना उल्लू सीधा करने के लिए अपना अध्यक्ष न बनाएं न ही ऐसे के पक्ष में खडें हो जाएं कि अब देखते हैं सामने वाला क्या करता है। अपना अहम् शांत करने के लिए अध्यक्ष जैसे पदों का उपयोग

करने से हरसंभव बचा जाना चाहिए। इससे आपका अहम् तो शांत हो जाएगा पर इससे समाज का जो अहित होगा वह अपूरणीय होगा। अध्यक्ष जैसे पदों पर योग्य को बिठाया जाना चाहिए न कि अपने मनपसंद व्यक्ति को। समाज सदस्यों द्वारा अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर चुना गया अध्यक्ष ही अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर समाज के लिए काम कर सकेगा। अपने स्वार्थपूर्ति के लिए बनाए गए अध्यक्ष से स्वार्थ रहित काम करने की अपेक्षा करना बेमानी है। कीचड़ में कमल तो खिलाया जा सकता है पर कीचड़ में व्यक्ति नहीं खिलाया जा सकता। व्यक्ति तो कीचड़ में खिलने के स्थान पर स्वयं सड़ने लगेगा। मेरा बव्हनय कहकर उसके हर गलत को साला द्वारा सही तो साबित किया जा सकता है पर इससे समाज में जो संदेश जाता है वह न तो समाज के लिए हितकर होता है, न ही साले बव्हनय के लिए। समाज केवल देखता है और उसका देखना ही आपको अपनी जिंदगी से खारिज करना होता है। समाज समय आने पर मारता है। वह सबके सामने भले ही वार न करें पर उसका वार ऐसा होता है कि आप हर बार अपनी बेटी का रिश्ता लेकर समाज में जायेंगे और हर बार खाली हाथ लौट आयेंगे। आपका बुरापन आज आपको कितना ही सुख दे पर कल में यही बुरापन आपको और तकलीफदेह महसूस होंगा जब आप लोगों के सामने गिड़गिड़ायेंगे और लोग आप पर हॅसेंगे। अपने कार्यकाल में यह सब करके आप न केवल अपना अहित करेंगे अपितु इससे समाज का जो अहित होगा उसका न तो आकलन संभव है न ही उसकी भरपाई। अध्यक्ष बनाते समय कम से कम ऐसे लोगो से दूरी बनाए रखने की जरूरत है।

ऐसा कहा जाता है कि सब्जी बिगड़ने से दिन बिगड़ता है, अचार बिगड़ने से साल बिगड़ता है और विवाह बिगड़ने से पूरी जिंदगी बिगड़ जाती है, उसी तरह एक अध्यक्ष बिगड़ जाने से पूरे समाज का विकास बिगड़ जाता है। एक विवाह के बिगड़ने से एक घर–परिवार ही बिगड़ता है पर एक अध्यक्ष के बिगड़ने से तो पूरा का पूरा समाज ही बिगड़ जाता है। एक लापरवाही से समाज को दॉव पर लगा देना समाज के सच्चे

हितैषी कभी स्वीकार नहीं करेंगे ऐसी आशा की जानी चाहिए। अध्यक्ष के चुनाव के समय सहयोग असहयोग अपने स्वार्थ के लिए नहीं अपितु समाज उद्धार के लिए किया जाना चाहिए। आप अपनी शक्ति को पहचानें और उसका उपयोग करें, केवल ताली बजाने वाले बनकर न रहें। ताली बजाने वालों का भोपाल में एक पूरा का पूरा मोहल्ला ही है। अब एक नया मोहल्ला बनाने की जरूरत नहीं है। ताली बजाने से बेहतर है ताल ठोंकना। हो सके तो ताल ठोंके।

वल्लभ डोंगरे, भोपाल, मोबा. 9425392656

बलि के नाम पर बलि चढ़ते पवार

चुट्टी के नाम पर बकरे की बलि देकर हम 21 वीं सदी में विज्ञान और आधुनिकता की बलि दे रहे हैं। राजा भोज के राज दरबार के एक प्रसिद्ध जैन विद्वान धनपाल द्वारा उल्लेख किया गया है कि राजा भोज द्वारा अपने शासनकाल में बलि प्रथा और जानवरों के शिकार पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। 11 वीं सदी के प्रारंभ में राजा भोज द्वारा मालवा प्रांत के राज्य की बागडोर अपने हाथ में ली गई थी। आज से एक हजार 13 साल पहले बलि प्रथा पर रोक लगा दी गई थी परंतु राजा भोज के वंशज ही आज इस विज्ञान के युग में इस प्रथा को गले लगाकर न केवल राजा भोज के निर्णय की अवहेलना कर रहे हैं अपितु अपनी अज्ञानता और अनपढ़ होने का प्रमाण भी खुद ही दे रहे हैं। चुट्टी एक तरह से उपनयन संस्कार होता था जिसके बाद बच्चे को पढ़ने भेजा जाता था। चुट्टी निकालना तो हमने जारी रखा पर पढ़ने भेजना हमने जरूरी नहीं समझा। श्रृद्धा भाव से की गई पूजा आराधना ही सच्ची व सफल होती है। बलि तो महज माध्यम होता है। अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए बकरे के स्थान पर नीबू , छुआरे, किसी की भी बलि दी जा सकती है। हर प्राणी परम पिता परमेश्वर का प्रतिनिधि होता है। ऐसे में बलि के नाम पर उसका असमय वध करना न्यायोचित प्रतीत नहीं होता है।

ऐसा माना जाता है कि पवार क्षत्रिय होने के नाते जनायु धारण किया करते थे, नियमित पूजन हवन किया करते थे, और मॉस मदिरा का कभी सेवन नहीं किया करते थे परन्तु सतपुड़ा के घने जंगलों में जीवित रहने और आदिवासियों के सम्पर्क में आने पर आदिवासियों के रीति रिवाज जाने अनजाने अपनाए जाने लगे और आगे चलकर वे प्रथा में परिवर्तित हो गए। बलि प्रथा भी आदिवासियों द्वारा अपनाई जाने वाली प्रमुख कुरीतियों में से एक है। परन्तु आदिवासियों द्वारा अपनी आर्थिक स्थिति के मद्देनजर इन प्रथाओं को परिसीमित किया जाता रहा पर

पवारों द्वारा यह साहस नहीं दिखाया जा सका और वे उधार लेकर भी इन प्रथाओं के दास बनते चले गए और इनपर अंधाधुंध खर्च करके दूसरों के गुलाम बनते चले गए। उल्लेखनीय है बलि देने पर पूरे गॉव को भोज देने की प्रथा होने से एक तरह से विवाह पर होने वाले खर्च के बराबर ही इसमें व्यय हो जाता है। इन प्रथाओं के पीछे पवार इतने पागल हैं कि वे इसके लिए पागलपन की हद तक उधार लेने से भी नहीं हिचकिचाते। इस पागलपन का आलम यह है कि उनकी जमीन और घर गिरवी रखे जाने लगे, धीरे–धीरे पवार जमीनविहीन होने लगे और बलि के नाम पर पवार ही अप्रत्यक्ष रूप से बलि चढ़ने लगे। समृद्ध और महाजन पवार अज्ञानता और अशिक्षा के कारण दूसरों के घरों में नौकर रहने लगे और नौकर के रूप में आए शिक्षित और पढ़े–लिखे मारवाड़ी और बनिया आज सेठ बन बैठे हैं। इसी तरह विवाह के बाद किया जाने वाला नागदेव भी काफी खर्चीला होता है जिसमें भी पूरे गॉव के लोगों को भोज दिया जाता है। महाजन के नाम पर अपनी महाजनी दिखाने के चक्कर में पवार गरीब से गरीब होता चला जा रहा है। जिसके पास गॉव की सबसे बढ़िया जमीन हुआ करती थी वही पवार अब उसी गॉव में जमीन के लिए मोहताज बना फिर रहा है। पढ़े लिखे पवारों के आचार–विचार भी बिना पढ़े लिखे पवार से ज्यादा भिन्न नहीं हैं। उनके पास डिग्री डिप्लोमा आ गया है, उन्हें नौकरी मिल गई है पर व्यवहार और आचार विचार में नयापन नहीं हैं। अभी भी उनकी सोच गॉव वालों की सोच से ऊपर नहीं उठ सकी है। संस्कार की बेहद कमी होने के कारण संस्कारविहीन पवार शिक्षा पाने पर भी संस्कारों की कमी का त्रास झेलते रहते हैं। उनके व्यवहार से न शिक्षा झलकती है न संस्कार। एक अलग ही तरह का व्यक्तित्व आकार ले लेता है जो समय के साथ चलने हेतु न तो अनुकूल होता है न ही अनुकूलन कर पाता है। राजधानी में रहकर भी गंगू तेली ही बना रह जाता है जबकि राजा भोज जैसे व्यक्तित्व की समाज उससे अपेक्षा करता है।

वल्लभ डोंगरे,भोपाल

जीवन को संस्कारित करती पुस्तकें

राहू दानव था। उसमें दानवी संस्कृति भरी पड़ी थी। अमृतपान करने से उसे देवता का दर्जा प्राप्त हो गया था। वह देवताओं की भांति पूजा जाने लगा था। उसका सिर वाला हिस्सा राहू और धड़ वाला हिस्सा केतु के नाम से पुकारा जाने लगा था। इसके बावजूद उसके अंदर की दानवी संस्कृति उसका पीछा नहीं छोड़ पा रही थी। दूसरों को दुख पहुँचाने में उसे आनंद आता था। पवार शिक्षा और संस्कृति में अत्यंत गरीब है। वे पढ़ लिख कर शिक्षा तो प्राप्त करने में सफल हो पा रहे हैं परन्तु उनकी संस्कृति में अभी भी ईर्ष्या, द्वेष, जलन का ही शुमार है। अच्छी शिक्षा और पद प्राप्त कर लेने पर भी राहू की तरह जब तब उनके अंदर की संस्कृति अपना प्रभाव दिखा ही देती है। यही कारण है उनके अंदर की ईर्ष्या, द्वेष, जलन उनके बच्चों में हस्तांतरित होकर उन्हें एक नेक इंसान बनने से सदैव रोकते रहती है। दूसरों के बारे में बुरा सोचकर और अपने मन में बुरे विचार रखकर अपने बच्चों से अच्छा इंसान बनने की अपेक्षा करना वैसे ही है जैसे एक वैश्या सें पतिव्रता बने रहने की अपेक्षा करना। जिस तरह राहू दानव से देवता जरूर बन गया पर उसका मूल स्वभाव दानव का ही रह गया उसी तरह पवार पढ़ लिख कर पद प्राप्त करने में तो सफल हो गए पर उनका मूल स्वभाव पवारी नहीं छूट पा रहा है। वे ईर्ष्या, द्वेष, जलन को अपने अंदर से नहीं निकाल पा रहे हैं। इस तरह पढ़ लिखकर भी वे अनपढ़ की भांति ही हैं और पद पाकर भी बिना पद के ही हैं।

विभीषण राक्षस था और राम का सानिध्य पाकर वह लंका का राजा बन गया था। राम के सानिध्य में रहने पर विभीषण द्वारा सुधरने के प्रयास जरूर किए गए पर उसके अंदर का राक्षस कभी कभार अपना सिर उठा ही लेता था। एक बार विभीषण वन भ्रमण पर निकला तो राह भटक गया। राह में ब्राह्मण दिखाई देने पर विभीषण ने राह के बारे में जानना चाहा पर बाह्मण का मौन व्रत होने के कारण वह कुछ बोल न

सका। अपनी अवहेलना समझकर विभीषण द्वारा उसपर लात से प्रहार करने पर वह ब्राह्मण वहीं स्वर्ग सिधार गया। यह देख आश्रम के ब्राह्मणों द्वारा विभीषण को बंदी बना लिया गया। भगवान राम द्वारा विनती करने पर विभीषण को मुक्त कराया जा सका। तात्पर्य यह है कि राम का सानिध्य पा लेने पर भी विभीषण अपने अंदर के राक्षस को निकाल नहीं पाए थे। केवल राम का सानिध्य पा लेने भर से ही व्यक्ति संस्कारित नहीं हो जाता अपितु बचपन से उसके मन मस्तिष्क में पल पोष रहे संस्कार ही उसे अच्छा व बुरा बनाता है। इसलिए गर्भ धारण करने पर माता को अच्छा अच्छा साहित्य पढ़ने को दिया जाता है ताकि अच्छे साहित्य का प्रभाव उस आने वाली संतान पर पड़े और वह एक सुसंस्कारित संतान के रूप में जन्म लें।

अच्छा साहित्य खरीदने और भेंट करने में बंगाली अभी सबसे आगे हैं। चाहे जन्मदिन हों या विवाह का अवसर अच्छी पुस्तकें भेंट करना बंगालियों की आदत में शुमार है। इसके उलट पवारों के घरों में किताब छोड़ हर चीज मिल जायेगी। कभी भूल से कहीं किताब मिल भी जाए तो उसे पढ़ने की न तो कभी कोशिश की जाती है न ही घरों में पढ़ने के संस्कार ही है। जब घरों में पढ़ने का संस्कार ही नही तो व्यक्ति अच्छे इंसान कैसे बन सकेंगे। उत्कृष्ट साहित्य या अच्छी पुस्तकों के पाठ से मनुष्य की चेतना, बुद्धि और संस्कार परिष्कृत होते हैं। किसी न किसी उत्कृष्ट साहित्य के दो–चार पृष्ठ भी नित्य पढ़ लेने की आदत एक ऐसी निधि देती है जो अनगिनत रूपों में व्यक्ति के लिए लाभप्रद है। पुस्तक पढ़ना एक ऐसा सत्संग है जिससे सदैव लाभ ही मिलता है। इससे व्यक्ति में कल्पनाशक्ति, अभिव्यक्ति के लिए सही शब्दों की समझ और भाषा ज्ञान बढ़ाने के प्रति रूचि सहज रूप से बढ़ती जाती है। ये सब व्यक्तित्व विकास हेतु अनमोल वस्तुएँ हैं। किसी भी देश के नैतिक मूल्यों पर राजनीति से ज्यादा एक अच्छी किताब का प्रभाव पड़ता है। परन्तु इसे दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि पवारों में पुस्तक पढ़ने का और कुछ सीखने का जरा भी माद्दा नहीं होता है। वे यदि पढ़ते भी हैं तो

रामायण के अखंड पाठ की तरह घास काटकर अपने दायित्वों की इतिश्री मान लेते हैं जिसमें सीखने के लिए कम और अपनी गीत संगीत की प्रतिभा दिखाने के अवसर ज्यादा होते हैं। चौबीस घंटे के बाद न रामायण होती है न उसकी गूंज ही सुनाई देती है। केवल होती है तो किताब और साहित्यविहीन घर की चारदिवारें जिसके बारे में कहा जाता है कि बिना किताब के घर बिना आत्मा के शरीर के समान होता है। यही कारण है कि पवारों के घर में केवल शरीर बसते हैं आत्मा नहीं। आत्मा तभी बसेगी जब घरों में किताबों के लिए सम्मानजनक स्थान होगा और उनके प्रति घर के सदस्यों के मन में पढ़ने की रूचि और उनसे सीखने की ललक होगी।

वल्लभ डोंगरे

छोटे–छोटे प्रयासों से बड़ी–बड़ी खुशियाँ बाँटता जीवन

आप जहाँ भी हैं, जैसे भी हैं, वहीं रहकर अपने जीवन को सार्थकता प्रदान कर नई ऊंचाइयाँ दे सकते हैं। इसके लिए आपको किसी बड़े पद पर रहने या किसी संस्था–संगठन से जुड़े रहने की भी जरूरत नहीं है। जरूरत है तो केवल जज्बे,जोश और जुनून की जिसके बल पर आप वह कर सकते हैं जो बड़े पद पर रहकर भी नहीं किया जा सकता या किसी संस्था–संगठन से जुड़े रहकर भी नहीं किया जा सकता। जानिए, ऐसी ही कुछ छोटी–छोटी बातें जो लोगों को बड़ी–बड़ी खुशियाँ देकर आपके पूरे व्यक्तित्व को ही साधारण के स्थान पर असाधारण बना देती हैं।

सन् 1970 के दशक में गाँवों में छुआछूत की भावना चरम पर थी। गाँव के लोहार की मृत्यु हो जाने पर गाँव के लोग छुआछूत के चलते उसके अंतिम संस्कार को तैयार नहीं थे। लोहार के छोटे–छोटे बच्चों को देख पिताजी द्वारा लोगों से अनुरोध किया गया पर इसका किसी पर कोई असर न देख उन्होंने स्वयं बैलगाड़ी जोतकर व उसमें इंधन भरकर श्मशान पहुँचाया और उसी गाड़ी में मृतक लोहार के शव को लादकर ले जाकर अकेले ही अंतिम संस्कार कर दिया गया। इसी तरह एक बार नागपंचमी पर सांईखेड़ा का वृद्ध ढीमर लाही चने बाँटने व जाल दरवाजे पर लगाने आया हुआ था। इसके बदले में गाँव के लोग उसे अनाज दे दिया करते थे। लौटते वक्त वह रास्ते में गिरकर बेहोश हो गया एवं वहीं स्वर्ग सिधार गया।पिताजी द्वारा शीघ्र ही सांईखेड़ा खबर की गई पर कोई उस शव को लेने नहीं आया। रात में शव को कोई जानवर नुकसान न पहुँचा पाएं इस हेतु पिताजी द्वारा उसकी रखवाली के लिए लोगों से विनती की पर छुआछूत के चलते कोई भी इसके लिए तैयार नहीं हुआ। पिताजी द्वारा अकेले ही उस शव की रात भर रखवाली की गई और अगले दिन अकेले ही उसका अंतिम संस्कार करना पड़ा।

गॉव में उन दिनों रात्रि विश्राम के लिए कोई साधन नहीं हुआ करता था। ऐसे में मॉ–पिताजी अपने घर में ही दुकानदार, वैद्य, खरीदार या राहगीरों को रात्रि विश्राम की सुविधा मुहैया करा दिया करते थे। खेत से आने पर मॉ अपने लिए जो भोजन पकाती वह ही रात्रि विश्राम कर रहे लोगों को खिलाती थी। हमारा काम उनको भोजन परोसने का होता था। इस तरह कई सालों तक यह सिलसिला चलता रहा। इस तरह अनजान व राहगीरों को शरण देना भी लोगों को भाता नहीं था और तरह–तरह की बातें की जाती थी। बचपन से ही मैं यह सीख गया था कि लोग न तो स्वयं अच्छा काम करते हैं न ही दूसरे द्वारा किया जा रहा अच्छा काम उन्हें अच्छा लगता है।

मार्च से मई तक गर्मी के तीन माह गॉव के पालतू जानवरों का पिताजी हमारे कुएं पर पानी पिलाने की व्यवस्था करते थे। अमराई की घनी छॉव में पूरी दोपहरी गॉव के सैकड़ों पशु सुस्ताया करते थे। हम पूरी दोपहरी उनपर नजर रखा करते थे और आम के पेड़ों पर डाब–डुबेली खेला करते थे। जानवरों को पानी पिलाने पर भी लोगों को अच्छा नहीं लगता था। लोग कहते थे हम पिलायेंगे पानी और स्वयं कोई व्यवस्था नहीं कर पाते थे। आखिरकार, हमें ही पानी पिलाने की व्यवस्था करनी पड़ती थी। अपने माता–पिता से विरासत में मिले सेवा के इन संस्कारों को मैंने अपने जीवन में भी जारी रखने का प्रयास किया है।

बैतूल पढ़ने आए तो एक कमरे की क्वाटर में भी गॉव वालों का तॉता लगा रहता। कभी कोई बीमार है तो कभी कोई । बीमार व्यक्ति के घर से कोई न कोई क्वाटर पर बना ही रहता। हमें अपना, बीमार व्यक्ति और ऐसे लोगों का भी खाना बनाना पड़ता। कई बार पोस्टमार्टम के लिए पहुॅचे गॉव के 50–60 लोगों का भी खाना बनाना पड़ता था। हम पढ़ाई के साथ यह सब किया कते थे। शायद ही कोई सप्ताह सुना जाता रहा हो जब हमारे क्वाटर पर कोई मेहमान न रूकता रहा हो।

पढ़ने के साथ–साथ मुझे पत्र लिखने का बेहद शौक था। मैं जब भी पत्र–पत्रिकाओं में कोई विज्ञापन देखता तो अपने परिचितों को पत्र के माध्यम से इसकी सूचना दे दिया करता था और वे आवेदन कर दिया करते थे। इस तरह गॉव व शहर में रह रहे कई समाज सदस्य इससे लाभांवित हुए और आज वे कहीं न कहीं नौकरी कर रहे है। पत्र का मैंने विभिन्न कामों के लिए उपयोग किया। अपने घर से दूर रह रहे मित्रों को पत्र भेजकर व उनका मनोबल बढ़ाकर उनका दिल जीता। पोस्टकार्ड/जवाबी पोस्टकार्ड के माध्यम से फोन नं. व पते की जानकारी संकलित की गई। पोस्ट कार्ड का उपयोग विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी संकलित करने में भी खूब किया गया। मैं एक बार में 1000–1000 पोस्ट कार्ड खरीदता था। पोस्ट आफिस वाले मुझे व्यक्तिगत रूप से जानने लगे थे। किसी के घर डाक आए न आए मेरे घर रोज डाक जरूर आया करती थी।

पोस्ट कार्ड का उपयोग मैंने विवाह पर बधाई देने, बड़ों को तीज त्योहार व उनकी विवाह वषगॉठ पर बधाई देने तथा बच्चों को उनके जन्मदिन पर बधाई देने में भी खूब किया। पोस्ट कार्ड पर दी जाने वाली बधाई का इतना व्यापक असर होता कि हर कोई उसे पढ़ता और कार्ड एक हाथ से दूसरे हाथ गुजरकर अंततः एलबम के प्रथम फ्लेप पर स्थान पाता। जन्मदिन पर प्रेषित बधाई भरा पोस्टकार्ड बच्चे अपनी कक्षा के बच्चों को दिखाने ले जाते और वह कार्ड पूरी कक्षा में बड़े चाव से पढ़ा जाता। अपनी खुशी दूसरों में बॉटने का सलीका मैंने इन्हीं बच्चों से सीखा। सुख–दुख के प्रत्येक अवसर पर व्यक्तिशः उपस्थित न रहकर पोस्टकार्ड के जरिए मेरे द्वारा अपनी अनुपस्थिति को भी सार्थक उपस्थिति में परिणत करने का प्रयास किया जाता रहा। मेरा कार्ड उनके लिए मेरी उपस्थिति बने सदैव यही प्रयास किया जाता रहा। और होता भी यही रहा कि मैं अपने विचारों को पोस्ट कार्ड के जरिए प्रेषित करता और वे सबके हाथों से गुजरते हुए उनके मन–मस्तिष्क तक पहुॅच जाते।

एक बार एक मैडम अपनी दो–तीन साल की बिटिया के साथ अपने

पति से दूर दूसरे शहर में रह रही थी। उन दिनों पति–पत्नी के बीच संवाद का जरिया केवल पत्र ही था। फोन व मोबाइल का प्रचलन नहीं था। उनकी बेटी बोली–मम्मा, हर कोई आपको ही पत्र भेजता है मुझे तो कोई भेजता ही नहीं। और ऐसा कहकर वह बड़ी मायूस और उदास हो गई। श्रीमती के माध्यम से मुझे पता चला तो मैंने मेरी श्रीमती के माध्यम से उसका पता ज्ञात किया और उस बिटिया के नाम पत्र लिख दिया। अपने नाम का पहला खत पाकर वह इतनी अभिभूत हुई कि उसके पैर जमीन पर पड़ ही नहीं रहे थे। उसकी खुशी के बारे में जानकर मुझे भी बेहद खुशी हुई और तबसे ऐसे नन्हे–मुन्नों को भी पत्र लिखने का सिलसिला चल पड़ा। इसने मुझे सबका चहेता बना दिया। बच्चे अपने जन्मदिन पर मेरे पत्र का बेसब्री से इंतजार करने लगे।

पत्रों द्वारा न जाने कितने जान–अनजान लोगों को संजीवनी प्राप्त हुई होगी इसकी तो कोई प्रामाणिक जानकारी नही है। परन्तु इन ज्ञात–अज्ञात लोगों द्वारा दी गई दुआओं ने मेरी जिंदगी को काफी खुशनुमा बनाया है। इस संबंध में यही कहा जा सकता है–

न जाने कौन मेरे हक में दुआ करता है
डूबते को हर बार दरिया उछाल देता है।

सुबह 4–5 बजे घूमने निकलता तो तीज त्योहार पर रास्ते भर सैकड़ों हस्तलिखित बधाई व शुभकामना पत्र बॉटते चलता। घर के मेन गेट पर मैं उन्हें लगा दिया करता। जब लोगों की नींद खुलती और वे अपना गेट खोलते तो तीज त्योहार पर बधाई व शुभकामना पाकर उनका मन प्रसन्न हो जाता। इस तरह न जाने कितने जान–अनजान लोगों की दुआएं मिलती और दिन खुशी–खुशी बीत जाता।

पत्र–पत्रिकाओं से जुड़ा होने के कारण बच्चों के साक्षात्कार लेकर प्रकाशित करवाता या उनकी कोई रचना किसी पत्र पत्रिका में प्रकाशित करवा देता जिससे उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। वे दिल से मुझे चाहने लगते। कई बच्चों द्वारा आज दिनॉक तक उनके प्रकाशित उन

कविता–कहानी या साक्षात्कार को सुरक्षित रखा गया है तथा उन्हें देखकर वे समय–समय पर खुश हो लिया करते हैं।

कार्यालय में सेवारत सैकड़ों अधिकारी–कर्मचारी व उनके परिजनों को उनके जन्मदिन पर बधाई देने का सिलसिला पूरे साल ही जारी रहता। तीज त्योहार पर भी यह सिलसिला जारी रहता। उन्हें पत्र–पत्रिकाओं में लिखने हेतु उकसाता और वे लिखते भी और छपते भी। उन्हें अपनी छपी रचना का पारिश्रमिक जब मनीआर्डर या चेक के माध्यम से मिलता तो उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता। इस तरह अपने छोटे–छोटे प्रयासों के माध्यम से लोगों को बड़ी–बड़ी खुशियॉ देता रहा।

एक बार किसी अनजान बच्चे की 10 वीं कक्षा की मूल अंकसूची बस स्टाप पर पड़ी मिली जहॉ से इंजीनियरिंग के बच्चे अपनी बस में बैठते थे।उसमें अंकित स्कूल की सील के आधार पर जवाबी पोस्टकार्ड भेजकर संबंधित बच्चे का शाला रिकार्ड में दर्ज पता भेजने का अनुरोध किया गया। पता मिलते ही संबंधित बच्चे को पुनः पत्र भेजकर अंकसूची प्राप्त करने संबंधी अनुरोध किया गया। सुविधा की दृष्टि से पत्र में पता एवं फोन न. दिया गया था ताकि बच्चो को घर ढूँढने में असुविधा न हो। वह बच्चा आया और अपनी अंकसूची सुरक्षित पाकर दुआएं देते हुए चला गया। आज वह बच्चा इंजीनियर है।

मोहल्ले की सड़क मुख्यतः बारीश के दिनों में पानी से भर जाया करती थी। सभी को आने जाने में परेशानी हुआ करती थी, पर कोई कुछ करना नहीं चाहता था। एक दिन सुबह घूमने के स्थान पर दो घंटे उसकी मरम्मत में देने का विचार आया और फावड़ा तथा तसला लेकर जुट गया। लोग सोकर उठ पाते उसके पूर्व ही सड़क सुविधाजनक रूप से आने जाने के लिए तैयार थी। लोग आते जाते उस अनजान फरिश्ते को दुआएं देते जा रहे थे। उस दिन लगा मानो आज का दिन सार्थक हो गया। पूरे दिन मन प्रसन्न रहा। ऐसे फिर न जाने कितने स्थानों के

के गड्ढे व नालियों की मरम्मत करने का सुख मिला है और लोगो की दुआएं मिली है।

सन् 1984 की बात है। श्रीमती इंदिरा गॉधी की हत्या हो जाने से पूरा शहर आगजनी, हत्या और मारकाट में डूबा था। उन दिनों मैं भोपाल में ही था। 10–15 दिनों तक कर्फ्यू लगा था। खाने–पीने का सामान नहीं था। घर परिवार और गॉव के लोग चिंतित थे। उसी वर्ष भोपाल में गैस त्रासदी भी हुई। हजारों लोगों की जाने गई। इसने पूरे भोपाल को झकझोर कर रख दिया। गैस त्रासदी के बाद लूटपाट ,अत्याचार अनाचार की घटनाएं बढ़ गई जिससे पूरे शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया। इस समय भी 10–15 दिन तक लोगों को घर से बाहर निकलने पर प्रतिबंध था। मृतक संख्या हजारों में होने से घर परिवार और गॉव के लोग घबरा गए। उन दिनों फोन एवं मोबाइल की सुविधा नही थी। कर्फ्यू समाप्त होते ही अपने क्षेत्र से लोग भोपाल अपने परिजनों की खोज में आ गए। कुछ लोग अपनों की खोज में मुझ तक भी पहुॅच गए और अपने परिजनों के बारे में जानकारी लेने लगे। मैं उनके किसी परिजन को नहीं जानता था। उस दिन पहली बार मुझे आभास हुआ कि काश मेरे पास इनके परिजनों के नाम–पते होते तो मैं पराए परदेश में इनके काम आ जाता। उसी दिन मैंने अपने मन में संकल्प लिया था कि मैं भोपाल में रहने वाले समाज सदस्यों के नाम पते एकत्रित कर सभी को उपलब्ध कराऊंगा ताकि सुख–दुख के अवसर पर हम एक–दूसरे के काम आ सके। इसी तरह श्री बीजी पवार के देहावसान की सूचना कार्यालय के फोन पर मिली। मैं उनके घर पर पहुॅचा तो पता चला कि उन्होंने तो घर बदल दिया है। मैं और मेरे जैसे कई लोग उनके अंतिम संस्कार में शामिल नहीं हो पाए थे। उसमें कुछ चुनिंदा सदस्य ही पहॅच पाए थे। इस घटना से मैं अंदर तक हिल गया और मैंने नाम–पते एकत्रित करने का काम बिना विलम्ब किए प्रारंभ कर दिया। 1985 में ही भोपाल में रह रहे समाज सदस्यों के नाम–पते वाली डायरेक्ट्री के साथ कुछ उपयोगी सामग्री प्रकाशित कर उसे लोगों को

उपलब्ध करा दी गई। उसका यह लाभ हुआ कि अपने क्षेत्र से भोपाल आने वाले सदस्य उसे अपने साथ लेकर आते थे। रोजगार एवं शिक्षा से संबंधित उपयोगी जानकारी होने से बैतूल के हर समाज में उसको काफी सराहा गया था। इसी काम को विस्तार देने की मन में प्रबल इच्छा के चलते मैं गॉव गॉव व शहर–शहर में रह रहे समाज सदस्यों के नाम पते एकत्रित करने लगा और लगभग 15 वर्षों में पूरे भारत भर में रहने वाले समाज सदस्यों के नाम पते एकत्रित कर सन् 2000 के प्रारंभ में ही सम्पर्क शीर्षक से एक डायरेक्ट्री प्रकाशित की जिसमें बैतूल, छिंदवाड़ा, वर्धा,नागपुर ,अमरावती,आदि जिलों के अधिकांश गॉवों में रह रहे समाज सदस्यों के नाम पते शामिल किए गए थे। इसके साथ–साथ भारत भर के शहरों में रह रहे व विदेशों में रह रहे समाज सदस्यों के नाम पते भी इसमें शामिल किए गए थे। इसके प्रकाशन से पहली बार लोगों को महसूस हुआ कि समाज के सदस्य न केवल भारत भर में अपितु विदेशों में भी रह रहे हैं। इसके प्रकाशन से लोगों को सुख–दुख में परस्पर सम्पर्क करने में सुविधा होने लगी। उल्लेखनीय है कि इस समय तक समाज सदस्यों के घर फोन की सुविधा उपलब्ध नहीं थी। विवाह आदि के निमंत्रण पत्र इन प्रकाशित नाम–पते के आधार पर भेजने में लोगों को काफी सुविधा होने लगी थी। इसके प्रकाशन से हम 20 वीं सदी में ही जागरूक बन सके थे और कुछ न कर पाने के कलंक से बच सके थे अन्यथा एक पूरी की पूरी सदी हमें हमारी निष्क्रियता और आलसीपन के लिए कोसती रहती।

इसके बाद विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी वाली पुस्तक जीवनसाथी का प्रकाशन नवम्बर 2000 तक करके समाज के विवाह योग्य सदस्यों के माता–पिता के लिए रिश्तों की इतनी सारी पुस्तक के प्रकाशन से समाज में साहस और हिम्मत की भावना का संचार भी हुआ था। लोग अब पुरातनपंथी सोच से उबरकर नई सोच की ओर बढ़ने लगे थे। इसके प्रकाशन से लोगों को समझ में आने लगा था कि समय के साथ चलने में ही हमारी और हमारे समाज की भलाई है। लोग हिचक

छोड़कर अपने घर परिवार के विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी देने लगे थे। जिन सदस्यों द्वारा अपने घर परिवार के विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी नहीं दी गई थी उनके घर विवाह हेतु कोई रिश्ते नहीं आ पा रहे थे। इस तरह उन्हें विवाह हेतु काफी इंतजार व परिश्रम करना पड़ा था। उस वर्ष जीवनसाथी के माध्यम से सैकड़ों रिश्ते हुए थे और मेरे घर विवाह के निमंत्रण पत्रों का अम्बार लग गया था।

सन् 2002 तक अधिकांश समाज सदस्यों के घर फोन की सुविधा उपलब्ध हो गई थी। इसे देखते हुए परस्पर सम्पर्क हेतु हॅलो पापा नामक पॉकेट फोन डायरेक्ट्री प्रकाशित की गई जिसमें पूरे भारत भर व विदेशों में रह रहे समाज सदस्यों के फोन नं संकलित किए गए थे। इसकी लोकप्रियता को देखते हुए वर्ष 2003 में ही इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित करना पड़ा था। समाज सदस्य इसे अपने साथ रखने में गौरव का अनुभव करते थे। हॅलो पापा ने गॉव और शहर के बीच और समाज सदस्यों के बीच की दूरी कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। इसकी उपयोगिता और सार्थकता के बारे में जानने के लिए एक उदाहरण ही पर्याप्त होगा। भोपाल में रह रहे सिवनी, पांढुर्णा के देशमुख परिवार के वृद्ध पिताश्री का देहावसान हो गया। उनके रिश्तेदार सिवनी, पांढुर्णा और छिंदवाड़ा में रहते थे। उनके समक्ष उन सबको सूचना देने का संकट उठ खड़ा हुआ। तभी उन्हें याद आया कि उनके पास हॅलो पापा रखी हुई है। वे तत्काल एसटीडी पर गए और उनमें संकलित फोन नम्बर पर अपने रिश्तेदारों को देहावसान की सूचना दे दी। अगले दिन सुबह तक सभी रिश्तेदार अंतिम संस्कार में शामिल हो गए। मैं भी अंतिम संस्कार में उपस्थित था। उस समय श्री देशमुखजी द्वारा सभी समाज सदस्यों को बताया गया कि श्री डोंगरे जी द्वारा प्रकाशित हॅलो पापा के कारण ही आप सब आज अंतिम संस्कार में शामिल हो पाए हैं। उनके इन शब्दों से मुझे लगा जैसे मेरा श्रम सार्थक हो गया और मैं हॅलो पापा के माध्यम से उनके काम आ सका।

इसके पूर्व मैं 3 वर्ष यूनिसेफ ,1 वर्ष यूएनओ व 1 वर्ष यूनेस्को

जैसी अंतर्राष्ट्रीय स्तर की संस्थाओं में सेवाएं देता रहा। वहॉ मानवता की भलाई के लिए काम करते हुए मन में यह विचार आया कि हमारे समाज में भी काफी पिछड़ापन, गरीबी, अज्ञानता और निरक्षरता है, क्यों न अपने समाज के लिए ही अपने स्तर से कुछ सेवा कार्य किया जाएं। अखबारों ,पत्र–पत्रिकाओं में मैंने खूब लिखा और खूब धन भी कमाया पर उसमें वह शांति और सुकून नहीं मिला जो समाज साहित्य के प्रकाशन के बाद मिला। इस तरह मैं समाज के लिए कार्य करने का विचार लेकर समाज के लिए कुछ कर गुजरने की भावना से समाज हित में अपने स्तर से कुछ कार्य करने लगा जिनमें से कुछ के बारे में मैं आपको पूर्व में ही बता चुका हूॅ। यह बात सही है कि किसी संगठन विशेष तक सीमित न रहकर मेरा प्रयास पूरे समाज को समाहित किए हुए है। ऐसा समाज जिसकी कल्पना भारतीय संस्कृति में वसुधैव कुटुम्बकम् के रूप में की गई है।कहने का तात्पर्य यह है कि–क्या चिंता धरती पर छूटी उड़ने को आकाश बहुत है। करने के लिए काम की कमी नहीं है। काम करने के लिए दृष्टि चाहिए।

मै सूरज हूॅ जिंदगी की रमक छोड़ जाऊंगा
'गर डूब भी गया तो शफक छोड़ जाऊंगा ।

वल्लभ डोंगरे,
एच–6, सुखसागर विला,फेज–1,
नरेला, भोपाल–462022, मोबा. 09425392656

समाज सदस्य को सहयोग : समाज और संसार को सहयोग

एक समाज सदस्य को किया गया सहयोग उस सदस्य विशेष तक सीमित न रहकर वह परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र व संसार तक पहुॅचता है। आजादी की जंग में गॉधीजी को किया गया सहयोग पूरे देश को आजाद कराने में काम आता है। कण–कण में भगवान होने की बात स्वीकारने और मानने वाले देश में व्यक्ति में भगवान देखने और स्वीकारने की हिम्मत जुटाने की अभी और जरूरत है। पत्थर को भगवान मानने में हमें कोई दिक्कत महसूस नहीं होती पर जब किसी इंसान को भगवान मानने की बात आती है तो हमारा अंहकार आड़े आ जाता है। किसी की अच्छाइयॉ भी हमें हजम नहीं हो पाती। किसी का बिना दहेज लिए विवाह करना भी हमें फूटी आँखों नहीं सुहाता क्योंकि वैसा साहस दिखा पाने का या तो हम अवसर खो चुके होते हैं या फिर वैसा साहस दिखाने का हममें दमखम नहीं होता हैं, और वैसा साहस दिखाने के स्थान पर उसका विरोध करना हमें ज्यादा आसान और फायदेमंद लगता है। इसी तरह एक समाज सदस्य को किया गया असहयोग उस सदस्य विशेष तक सीमित न रहकर वह परिवार, समुदाय, समाज, राष्ट्र व संसार के लिए असहयोग हो जाता है और इससे केवल उस सदस्य विशेष का ही नहीं अपितु पूरे परिवार, पूरे समुदाय, पूरे समाज, पूरे राष्ट्र और पूरे संसार का विकास अवरूद्ध हो जाता है। जिस तरह व्यक्ति–व्यक्ति की आय जुड़कर राष्ट्र की आय बनती है, उसी तरह व्यक्ति–व्यक्ति का कार्य जुड़कर समाज का कार्य बनता है। वसुधैव कुटुम्बकम् की संस्कृति वाले समाज और देश में कुटुम्ब के लोगों को ही सहयोग न करके हम वसुधैव कुटुम्बकम् की महान् संस्कृति को केवल बातों के बल पर न तो जिंदा रख सकते हैं न ही आगे बढ़ा सकते हैं।

बोहरा समाज में अपने समाज सदस्य को हर तरह का सहयोग किया जाता है ताकि वह समाज की मुख्य धारा से जुड़ सके। बोहरा समाज में अपने समाज सदस्य को दुकान खोलने हेतु न केवल आर्थिक सहयोग दिया जाता है अपितु उसी की दुकान से सामान खरीदने हेतु समाज सदस्यों को फरमान भी जारी किया जाता है। इस तरह लिए गए निर्णय का हर सदस्य सम्मान के साथ पालन करता है। यही कारण है बोहरा समाज में सर्वत्र सम्पन्नता नजर आती है। भारत के हर शहर में बोहरा समाज के अतिथि गृह बने हुए मिल जायेंगे जिनमें बोहरा समाज के हर वर्ग के लोग जाकर रूक सकते हैं। इन अतिथि गृहों में निःशुल्क भोजन एवं आवास की व्यवस्था होती है। पवार समाज सदस्यों में परस्पर प्रेम और आदर भावना की बेहद कमी होती है। यही कारण है मू अउर मरी माय मंढा म नी समाय की तर्ज पर वे किसी में भी सपात नहीं पाते और अंततः अपने झूठे अहम् एवं अंहकार में अपने साथ–साथ समाज का भी अहित ही करते हैं। पवारों में एक कमी और उल्लेखनीय है वह यह कि वे अपने समाज सदस्य की प्रतिभा को स्वीकारने और सम्मान देने में बेहद कृपण हैं। वे उसे स्वीकारने और सम्मानित करने की अपेक्षा उसकी टॉग खींचने और उसे अपमानित करने में धरती पाताल एक करने में कोई कोर कसर बाकी नहीं रखते। यही कारण है समाज की विकास और उन्नति के शिखर पर पहुँचने की कभी कल्पना भी नहीं की जा सकती। यह उनकी अज्ञानता और अनपढ़ता ही है पर इसे वे कभी भी स्वीकारना पसंद नहीं करते। यह हठ और जिद ही पवारों का असली दुश्मन है जिसे और कोई नहीं अपितु संबंधित व्यक्ति स्वयं ही मार सकता है।

हम अपनों से सीखने की बजाय उसके किए कराए पर पानी फेरने में ज्यादा रूचि लेते है। यह हद दर्जे का ईर्ष्या, द्वेष करके हम अपने ही समाज के विकास एवं उन्नति के मार्ग में स्वयं सबसे बड़े रोड़े एवं बाधक बन बैठे हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का दुनिया को संदेश देने वाले देश में ही घर परिवार में परस्पर प्रेम नहीं है ऐसे में पूरी वसुधा को कुटुम्ब

मानने वाली उनकी बात बेमानी ही लगती है। पवारों का बेवकूफी भरा पराक्रम बंदर के हाथों उस्तरा लगने जैसा है।यही करण है पढ़े लिखे पवार भी पवार कम गंवार ज्यादा लगते हैं। उनके किसी भी उपक्रम में परिपक्वता या सम्पूर्णता जैसी कोई बात नजर नहीं आती है। उनका हर कदम अधूरेपन का अधिक और सम्पूर्णता का सीमित आभास ही कराता है। उन्हें अब यह समझना ही होगा कि समाज सदस्यों को किया गया सहयोग ही समाज के विकास एवं उन्नति की नींव रखने में सहायक होगा और उन्हें किया गया हर असहयोग समाज की कब्र खोदने में ही मदद करेगा। अब निर्णय हमें ही करना है कि हम अपने समाज सदस्य को अपेक्षित सहयोग करके समाज को विकास और उन्नति के पथ पर अग्रसर करना चाहते हैं या अपने ही समाज सदस्य को असहयोग करके हम अपने ही समाज के विकास और उन्नति को अवरूद्ध करना चाहते हैं।

समाज साहित्य के माध्यम से जनजागृति लाता सतपुड़ा संस्कृति संस्थान

शिक्षा समाज की ऑख होती है। शिक्षा से व्यक्तित्व परिष्कृत होता है। पर यदि समाज शिक्षा विहीन हो तब उसकी दीनहीनता का पता लगाना कठिन नहीं होता। एक बार एक समाज सेवी डॉक्टर समाज सुधार पर भाषण दे रहा था। वह बता रहा था कि दारू पीना शरीर के लिए कितना नुकसानदायक होता है। शराब की सारी बुराइयों को बता चुकने के बाद डॉक्टर ने दो कॉच के ग्लास मॅगाए। एक में पानी व दूसरे में शराब भरने के बाद उनमें केचुए डाल दिए गए। थोड़ी देर बाद शराब के ग्लास वाला केंचुआ मर गया व पानी के ग्लास वाला केंचुआ जिंदा निकला। इस पर डॉक्टर ने उपस्थित लोगों से पूछा–इससे आप क्या समझते हैं? तो एक शराबी बोला– दारू पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। यदि गंभीर शिक्षा देने पर भी हम इस तरह अगंभीर ही बने रहे तो कभी भी जीवन में कुछ सीख नहीं पायेंगे।

पंचतंत्र में एक कहानी का उल्लेख है। कहानी चिड़िया और बंदर पर केन्द्रित है। ठंड की ऋतु में बंदर पेड़ के नीचे बैठा ठिठुर रहा था, जिसे देख चिड़िया बोली–तुम्हारे तो इंसानों की तरह हाथ–पैर हैं फिर भी अपना कोई घर नहीं बना पाए। मेरे तो हाथ भी नहीं है फिर भी मैंने अपना घर बना लिया है। चिड़िया की बातें सुनकर बंदर को गुस्सा आ गया। वह पेड़ पर चढ़ा और चिड़िया के घोसले को नोंच कर जमीन पर फेंक दिया। चिड़िया के अंडे–बच्चे मर गए और चिड़िया पल भर में घरविहीन हो गई। किसी को शिक्षा देने के पहले यह जानना जरूरी है कि वह पात्र है भी या नहीं। जिस तरह कुपात्र को दिया गया दान दान नहीं कहलाता उसी तरह कुपात्र को दी गई शिक्षा शिक्षा नहीं कहलाती।

कुपात्र को दी गई शिक्षा के अपने खतरे हैं। परन्तु इन खतरों को उठाए बिना समाज को शिक्षित कर पाना संभव भी नहीं है। किसी भी

व्यक्ति के जीवन में दो विकल्प रहते हैं। एक विकल्प उसे सामान्य व दूसरा विकल्प उसे महान बनाता है। दूसरा विकल्प चुनने वाले लोग विरले ही होते हैं। इसलिए महान बनने वाले लोग भी विरले ही होते हैं। दूसरा विकल्प चुनने वाले हट कर करने और हटकर देने वाले होते हैं इसलिए समाज इन्हें सदैव याद रखता है।

एक जापानी कम्पनी ने अपने दो आदमियों को अफ्रीका में जूतों की बिक्री हेतु बाजार की संभावनाओं को तलाशने हेतु भेजा। एक आदमी ने तीन दिन में कम्पनी को रिपोर्ट भेजी कि यहॉ कोई जूते ही नहीं पहनता, अतः यहॉ जूतों की बिक्री की कल्पना करना भी बेकार है।दूसरे आदमी ने एक माह तक बाजार की संभावनाओं को लेकर अपनी तलाश जारी रखी और अंततः रिपोर्ट भेजी कि यहॉ कोई जूते नहीं पहनता अतः यहॉ तो बाजार ही बाजार है। दूसरे आदमी की तरह सतपुड़ा संस्कृति संस्थान,भोपाल ने भी अपना कार्य जारी रखा और अशिक्षित और अनपढ़ पवारों में समाज साहित्य के माध्यम से जनजागृति लाने का प्रयास जारी रखा। जो कार्य कोई संगठन नहीं कर सका उस कार्य को करने का बीड़ा उठाकर सतपुड़ा संस्कृति संस्थान ने जापानी कम्पनी के दूसरे व्यक्ति की तरह ही धैर्य का परिचय दिया है। 21 वीं सदी में भी इस समाज में करने को इतना कुछ है कि एक पूरी की पूरी सदी इसके विकास और उन्नति के लिए कम पड़ जाएगी।

पिछले दिनों मंडीदीप श्रीराम मंदिर में प्राणप्रतिष्ठा कार्यक्रम व भंडारे का आयोजन था जिसमें सहभागिता करने हेतु 15,000 से ज्यादा समाज सदस्यों को एसएमएस के माध्यम से अनुरोध किया गया था जिसमें से 15 लोगों ने भी जवाब देना उचित नहीं समझा।राजधानी में ही समाज के लगभग 2000 सदस्य हैं जिनमें से 200 सदस्यों का भी कार्यक्रम में नहीं पहुॅचना हमारी घृणित सोच और गंदी मानसिकता का प्रतीक है। इसी तरह विवाह योग्य सदस्यों की जानकारी संकलित करने हेतु 200 लोगों को फोन करने पर मात्र 1 या 2 सदस्यों से जानकारी प्राप्त हो पाती है। इसी बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि

जानकारी संकलित करना कितना दुरूह कार्य है। सुखवाड़ा ई मासिक पत्रिका लोग नेट से डाउनलोड करके उसमें संकलित जानकारी के आधार पर अपना स्वार्थ साध लेते हैं पर कभी धन्यवाद देने की जहमत नहीं उठाते। 24 अक्टूबर को पूरे विश्व में माफी दिवस मनाया जाता है। जैन धर्म में तो एक क्षमा पर्व ही है। हम कम से कम साल में एक बार इस तरह की सुविधा मुहैया कराने वालों के प्रति अपनी कृतज्ञता तो ज्ञापित कर ही सकते हैं। पर हममें ये संस्कार ही नहीं है वरना इस तरह के कार्य करने वालों के प्रति सम्मान और प्रेम की गंगा बहाने में कोई भी समाज कोताही नहीं बरतता। आज भी समाज संगठनों के निमंत्रण पत्रों में इस तरह के लोगों के लिए स्थान सुरक्षित न रखना एक तरह से समाज की सड़ी गली मानसिकता का ही प्रमाण है।

पांडवों की तरह कौरवों की हर अनीतिपूर्ण चुनौती स्वाकारते पवार

क्रोध घृणा, प्रतिशोध स्वाभाविक प्रतिक्रियाएं हैं जो हमसे हमारी खुशियॉ छीन लेती हैं। हमारे मन में दूसरों की जितनी बड़ी विकृत छवि बनती है हम खुद उतने ही छोटे हो जाते है। मन की परतों पर जमा क्रोध, घृणा, प्रतिशोध हमारे शरीर और मस्तिष्क को ध्वस्त कर देता है। कहते हैं, कैंसर हमारे भीतर छिपे क्रोध, घृणा, प्रतिशोध का प्रतिफल है जो अव्यक्त रह जाने के कारण कैंसर में परिणित हो जाता है। क्षमा न करना धीमा जहर है जो धीरे–धीरे हमारे जीवन को लील जाता है। जब तक प्रतिशोध का विचार जिंदा रहता है, तब तक दर्द और टीस बनी रहती है। क्षमा से आंतरिकता कायम होती है और एक रिश्ता बनता है। क्षमा करने की शक्ति भीतर से गहरा बल देती है। भूल जाना मानवीयता है और क्षमा कर देना उदात्तता।

क्रोध सुख के सारे दरवाजे बंद कर देता है। क्रोध जब वाणी में आता है तो गाली बनता है और हाथ में आता है तो मारने का कारण बनता है। क्रोध में किसी को घूंसा भी मारा नहीं जाता। क्रोध में बल नहीं रहता। लड़ने के लिए धैर्य जरूरी है। क्रोध करने से बली भी निर्बल हों जाता है। क्रोध में इंसान की ऑखों में पशु प्रकट हो जाता है। क्रोध भीतर जलाता है। कोई आग इतना नहीं जलाती है। क्रोध भीतर राख कर देता है। क्रोध में व्यक्ति के दिल की दूरी बढ़ जाती है। इसलिए व्यक्ति चीखता–चिल्लाता है और जोर से डॉटता है। प्रेम में दिल करीब आ जाते हैं। फुसफुसाहट से भी बात समझ में आ जाती है। इशारे इशारों में या ऑखों–ऑखों में भी बात हो जाती है। अपनी बात दिल तक पहुँचाने के लिए किसी क्रोधी व्यक्ति की तरह चीखना चिल्लाना नहीं पड़ता। कहते हैं, प्रेम में अपनी ऊर्जा का अपव्यव नहीं होता जबकि क्रोध में अपव्यव होता है। इसीलिए विश्व में भी 24 अक्टूबर को विश्व माफी दिवस के रूप में मनाया जाता है। माफी अतीत को तो नहीं बदल

सकती पर यह भविष्य को विस्तार जरूर दे सकती है। माफी वह तोहफा है जो बोझिल क्षणों को खुशी के पलों में तब्दील कर देता है। बाइबिल कें कहा गया है–यदि व्यक्ति किसी से प्रेम करता है तो वह उसकी बुराइयॉ ढॉक लेता है। माफ करने से आपस के गिले शिकवे तो दूर होते ही है मन का बोझ भी हल्का हो जाता है। कहते हैं, माफ करना महानतम बदला है।

जैन धर्म के 10 आधारों पर केन्द्रित पर्यूषण पर्व पूरे 10 दिनों तक चलता है। अंत में, क्षमा पर्व मनाया जाता है। इसमें ज्ञात–अज्ञात, जाने–अनजाने कटु वचन कह देने, दुख देने आदि के पश्चाताप स्वरूप क्षमा मॉगी जाती है। क्षमा मॉगना और क्षमा करना दोनों ही साहस का काम है। जो व्यक्ति अपने जीवन में यह साहस दिखा जाता है वह जीवन में सफल हो जाता है। पवारों में क्षमा मॉगने और क्षमा करने दोनों ही साहस की बेहद कमी है। यही कारण है जितने प्रकरण कोर्ट कचहरी में दर्ज हैं उनमें से 50 प्रतिशत मामले केवल पवारों के हैं। क्षमा करके और क्षमा मॉगके हम अपने जीवन को बेहतर काम में लगा सकते हैं और बेहतर सृजन में लगाकर जीवन को और अधिक सार्थक व अर्थवान बना सकते हैं। परन्तु अज्ञानता और नासमझी के कारण और दूसरों की बात में आकर हम कोर्ट कचहरी के झमेले में उलझ कर अपने सीधे सादे जीवन को स्वयं उलझन भरा बना देते हैं। इसके लिए लोग हमें उधार देने के लिए भी उधार बैठे रहते हैं ताकि कोर्ट कचहरी में हल्के होकर अपनी जमीन जायजाद गिरवी रखने हेतु मजबूर हो जाए और वे अपने उधार के बदले आपकी जमीन जायजाद हड़प सके। पवारों की जमीन जायजाद हड़पने का यह हथकंडा बरसों से चला आ रहा है। कभी कोई सेठ साहूकार के रूप में, कभी कोई बनिया मारवाड़ी के रूप में तो कभी कोई नकली हितैषी के रूप में आकर हमें कोटे कचहरी करने हेतु उकसाता है और हम उसे अपना हितैषी समझ अपनी जमीन जायजाद उसके सुपुर्द करते जाते हैं।

लड़ने भिड़ने या झगड़ने में समझदारी नहीं, समझदारी समस्या के

शांतिपूर्वक समाधान में है। लड़ने भिड़ने से समाधान नहीं निकलता, इससे तो समाधान और पेचीदा होता जाता है और सुलह के सारे रास्ते स्वतः ही बंद होते चले जाते हैं। पवार ढोर जानवरों के बीच रहकर उन्हीं की तरह व्यवहार करने के आदि हो गए हैं। वे हर समस्या का समाधान ढोर जानवरों की तरह लड़ झगड़कर ही निकालने में विश्वास करते हैं। यही कारण है शिक्षा से उनका दूर दूर तक सरोकार न होने से वे आज भी पुरातनपंथी ही बने हुए हैं। वे आज भी लड़ लड़कर पैदा होते हैं,लड़ लड़कर जीते हैं और लड़ लड़कर ही मरते हैं। उनको विरासत में जमीन जायजाद की तरह लड़ाई मिलती है। वे लड़ाई करते हैं, जिंदगी भर करते हैं और लड़ाई करते करते ही स्वर्ग सिधार जाते हैं। लोकतंत्रीय व्यवस्था में भी पवार अपने झूठे क्षत्रियपन की आड़ में पांडवों की तरह द्युतक्रीड़ा में अपना सबकुछ दॉव पर लगाने को आमादा है और पांडवों की तरह वनवास भोगने को अभिशप्त हैं। क्षत्रिय होने का यह कदापि मतलब नहीं कि पांडवों की तरह कौरवों की हर अनीतिपूर्ण चुनौती को स्वीकार कर अपने जीवन को ही दॉव पर लगा दिया जाए।

भीड़ में भेड़ बनते या भेड़ चाल चलते समाजजन

महापुरुष सदा एकांत में पैदा होता है, वह कभी भीड़ में पैदा नहीं होता। भीड़ एक तरह की रूकावट डालती है कि कोई पैदा न हो जाएं। भीड़ लंगर की तरह है जो नाव को समुद्र में जाने से रोकती है। भीड़ हमेशा सत्य में बाधा डालती है। वह कभी नहीं चाहती कि कोई व्यक्ति सत्य तक पहुॅच जाएं क्योंकि यदि कोई सत्य तक पहुॅच गया तो इससे भीड़ का अपमान हो जाता है। इसीलिए जीसस को सूली पर चढ़ाया जाता है, सुकरात को जहर पिलाया जाता है, मीरा को जहर भिजवाया जाता है, मोहम्मद को पत्थर मारे जाते हैं, बुद्ध को गालियॉ दी जाती है और गॉधी को गोली दी जाती है।

महापुरुष हमेशा एकांत खोजते हैं। भीड़ में भेड़ बनना या भेड़ चाल चलना उन्हें पसंद नहीं आता। वे भेड़िया धसान हो भी नहीं सकते। उनकी अपनी राह होती है, उनकी अपनी चाल होती है। आम राह से अलग, एकदम अलग। वे पूर्व से बनी बनाई राह पर नहीं चलते। वे अपनी राह खुद बनाते हैं। इसीलिए तो राम को वनवास जाना पड़ता है, महावीर को जंगल में जाना पड़ता है, बुद्ध को एकांत चुनना पड़ता है और मोहम्मद व मूसा को पहाड़—रेगिस्तान में जाना पड़ता है।

समाजजनों में अभी राम, महावीर, बुद्ध, सुकरात, मीरा, मोहम्मद और मूसा को समझने और जानने का माद्दा ही नहीं है। वे अभी भीड़ से मुक्त नहीं हो पाएं है। वे भेड़ की तरह भेड़ चाल के आदि हैं। उन्हें भेड़ियाधसान बनना मंजूर है पर उनमें भीड़ से अलग हटने का साहस नहीं है। शिक्षा के अभाव में वे भीड़ को ही सत्य मान बैठे हैं। और उनकी जिंदगी भी भीड़ में शामिल होकर गुम हो जाती है। उनकी अपनी कोई जिंदगी नहीं होती जिसे अलग से रेखाकिंत किया जा सके। बरसों से चले आ रहे सड़े गले रीति रिवाजों को वे ढो रहे हैं बैल की तरह अपनी

गर्दन पर जुओं की भांति रखकर। उनकी जिंदगी उस रेलगाड़ी की तरह है जो केवल अपनी पटरियों पर चलती है। जरा भी इधर–उधर होने की गुंजाइश नहीं। इधर–उधर हुई कि खतरा ही खतरा। जिंदगी को रेल की पटरी पर चलने के लिए बाध्य करने के लिए और कोई नहीं अपितु हम स्वयं जिम्मेदार है। हममें वो साहस नहीं है जिसकी कि दरकार होती है सफल जीवन जीने के लिए। हम जीते हैं केवल जीने के लिए। हमें नहीं मालूम कि हमारा जीना कितना सार्थक है। बस, जी रहे हैं जैसे अन्य लोग जी रहे हैं। न कोई उद्देश्य, न कोई लक्ष्य, न कोई दिशा, न कोई गन्तव्य। जैसे लाश को पानी बहा ले जाता है वह उस ओर चली जाती है, वैसे ही जिंदगी बही जा रही है दिशाहीन, मंजिलविहीन। जीवन को दिशा और दशा देती है शिक्षा और शिक्षा की ही बेहद कमी के कारण समाजजन दिशाहीन, मंजिलविहीन जंदगी जीने को अभिशप्त हैं। जिनके पास शिक्षा है वह शिक्षा नहीं केवल जानकारियों की डिग्रियॉ भर हैं। उससे दो जून की रोटियॉ तो बटोरी जा सकती है जिंदगी नहीं।

भीड़ से अलग दिखने और अलग करने के लिए नैतिक साहस की जरूरत होती है। ऐसा व्यक्ति परिवार में रहते हुए भी एकदम अकेला निस्संग हो जाता है जिसे समझने वाला कोई नहीं होता। उसके दुख दर्द को बूझने, जख्मों को सहलाने और उत्साह को दुलारने वाला कोई नहीं होता वहॉ आदमी भरी पूरी भीड़ में होते हुए भी एकदम तन्हा हो जाता है। गृहस्थी अनगिनत छेदों वाला एक झमेला होता है। जब तक एक को भरने की सोचते हैं तब तक दूसरा मुॅह बाएं खड़ा हो जाता है। ऐसा व्यक्ति कभी परिवार में शक्कर की तरह घुलमिल नहीं पाता वह हमेशा चाय की तरह अनछना ही रह जाता है। दीया तले अंधेरा दीया का दर्द होता है। दीये का अंधेरा ही दीये की शक्ति होती है। उसी अंधेरे से दीया प्रकाश संजोता है और अंधेरे को दूर भगाता है। इस तरह के नैतिक साहस दिखाने वाले व्यक्ति विरले होते हैं। ऐसे व्यक्ति के नैतिक साहस की सबसे बड़ी परीक्षा तो तब होती है जब उसके अपने निकट के लोग ही उससे सहमत नहीं होते हैं। अपने प्रियजनों को पीड़ा

पहुॅचाकर किसी रास्ते पर चलना, फिर चाहे वह रास्ता कितना ही उचित क्यो न हो, सबसे अधिक नैतिक साहस मॉगता है। व्यक्ति दूसरों से तो लड़ सकता है पर अपनों के आगे वह अधीर हो जाता है। उसका अपना साहस उसका साथ देने को तैयार नहीं रहता। यह घर की लड़ाई मैदान की लड़ाई से बड़ी होती है। मैदान तो मारने के लिए ही होते हैं, पर घर मारने के लिए नहीं, मरने के लिए होते हैं। और घर को मारने के लिए नैतिक साहस जुटाए बिना भीड़ से अलग नहीं हुआ जा सकता। गॉधी घर को बिगाड़कर ही बाहर को संवार सका था। आज गॉधी के घर में ऐसा कोई नहीं है जिसका नाम लिया जा सके। गॉधी सदियों में एक होता है सदा नहीं होता।

लड़ना परिपक्वता नहीं लड़कपन है

क्षत्रिय होने का प्रभाव पवारों के जीवन में पग–पग पर परिलक्षित हो जाता है। पवारों के घरों में नए शिशु को जन्म ही बदला लेने के उद्देश्य से दिया जाता है। पूरी की पूरी टीम इसीलिए तैयार की जाती है कि वक्त आने पर इन शेरों को सामने वालों पर छोड़ा जा सके। मॉ झूले में सो रहे बेटे को लोरी भी सुनाती है तो लड़ने लड़ाने की, फुर्सत में बैठे–बैठे कहानी भी सुनाती है तो मारने काटने की और कहीं भी भेजने की बारी आती है तो मॉ बेटे को यह कहकर ही भेजती है कि आज ओख देखज लेजो, आज ओख बनायच लेजो। बेटा खेत पर जाता है तो खेत पर कम धूरे–बंधारे पर ज्यादा जाता है। खेत में कम धूरे बंधारे में अपना नागर ज्यादा गड़ाता है। वह खेत में कम धूरे–बंधारे पर ज्यादा खेती करता है। विवाह में भी मॉ भेजती है तो अपने दूध की लाज रखने का कहती है और बेटा दुल्हन के घर पहुँचकर अपनी मॉ के दूध की लाज जरूर रखता है और झगड़ा किए बिना विवाह नहीं करता है। पवारों के बचपन की शुरुआत लड़ने से ही होती है। लड़कर ही वो अपनी जवानी में प्रवेश पाते हैं और लड़कर ही वे रोटी हजम कर पाते हैं। जन्मदिन हो या विवाह का अवसर हर अवसर उनके लिए लड़ाई का मैदान होता है। जहॉ लड़ाई नहीं होती वहॉ पवार नहीं होते। और जहॉ पवार नहीं होते वहॉ लड़ाई नहीं होती । फिर वे पढ़े लिखे हों या अनपढ़। कोई रस्म, कोई कार्यक्रम बिना लड़ाई के सम्पन्न हो जाए तो लगता है पवार कब से समझदार हो गए। लड़ाई से ही उनका दिन निकलता है और लड़ाई से ही उनका दिन डूबता है। दिन और रात लड़ाई ही लड़ाई। लड़ाई की बात सुनते सुनते ही वे बड़े होते हैं, बूढ़े होते हैं और बढ़ लेते हैं। लड़ना उनका जन्म सिद्ध अधिकार है। पड़ोस में पड़ोसी से दोस्ती होगी तो समझ लो वे पवार नहीं है। पड़ोस में गोंड भी होगा तो उससे बड़े मधुर और आत्मीयता भरे संबंध होंगे पर यदि संयोग से पड़ोसी कोई पवार हो गया तो उसके साथ मधुर संबंध हो जाना किसी आठवें आश्चर्य की तरह ही होगा। हम दूसरों के लिए बड़े

आज्ञाकारी और ईमानदार हो जाते हैं पर जब मामला समाज का हो तो हम न आज्ञाकारी होते हैं न ईमानदार। हम अपनों के साथ लड़ते ही हैं चाहे घर हो या बाहर। हम 21 वीं सदी में भी यह नहीं समझ पाए कि लड़ना परिपक्वता नहीं लड़कपन है, लड़ना क्षत्रियता नहीं लड़कपन है।

स्वयं अर्जुन स्वयं कृष्ण

जीवन में व्यक्ति को न जाने कितने घोषित और अघोषित युद्धों से लड़ना पड़ता है। युद्ध जब स्वयं द्वारा घोषित किया गया हो तो लड़ाई और भी दिलचस्प हो जाती है। दुश्मनों के विरूद्ध तो अकेले युद्ध लड़ा जा सकता है पर अपनों के विरूद्ध अकेले खड़ा होना बड़ा कठिन होता है। माता–पिता, भाई–बहन, काका–काकी, मामा–मामी और तमाम रिश्तेदारों के विरूद्ध खड़ा होना बड़ा नैतिक साहस मॉगता है। महाभारत युद्ध में अर्जुन के साथ तो कृष्ण खड़े थे वहॉ अपनों के विरूद्ध युद्ध लड़ने के लिए अर्जुन अकेला नहीं था। पर वास्तविक जीवन में कई बार ऐसी स्थितियॉ आ जाती है जब व्यक्ति को स्वयं अर्जुन स्वयं कृष्ण बनना पड़ता है। बिना दहेज का विवाह करना भी किसी युद्ध में उतरने से कम नहीं होता। मुश्किल तब और बढ़ जाती है जब बिना लड़ाई के लड़ाई लड़नी पड़ती है। लीक से हटकर कुछ करना लड़ाई नहीं होती पर यह लीक से हटकर लड़ाई करना किसी लड़ाई जीतने से कम भी नहीं होती। ऐसी लड़ाई विचारों की होती है जिसमें अस्त्र शस्त्र नहीं होते। केवल होते हैं तो अपने–अपने अहम् और अपने–अपने अहंकार। ऑखों का आक्रमण, मन की मन से दूरी, अपनों के छोटे–छोटे स्वार्थ देखे नहीं जाते। ऐसे समय में बाण शब्दों के चले या विचारधाराओं के सीधे दिल तक पहॅुचते हैं। अस्त्र–शस्त्र से तो निपटा जा सकता है पर इनसे निपटना आसान नहीं होता।

घर परिवार में सबकी अपनी–अपनी अपेक्षाएं होती हैं जायज और नाजायज दोनों। और वे अपेक्षाएं जब पूरी नहीं होती तो तन और मन दोनों आहत होते हैं और लहुलहान होती हैं सबकी भावनाएं । इन सबके बीच बिना दहेज के विवाह करके घर में बहू ले आना किसी युद्ध के जीतने से कम नहीं होता। घर वाले इसे अपनी हार से कम नहीं मानते और उन्हें ऐसे खेत रह जाने का गम सदैव सताते रहता है। जाने–अनजाने उनके मन में उनकी न चल पाने की टीस बनी रह जाती है। बिना दहेज

का विवाह तो बेटा कर लेता है पर इसके लिए सदा बहू को कसूरवार ठहराया जाता है, जबकि इसमें बहू की नहीं अपितु बेटे की चाहना होती है। इतना सब होते हुए भी घर वालों द्वारा अपनी बहू को घर में ससम्मान अपना लेना उनका बड़प्पन होता है। बहू को क्या चाहिए अपनों का प्यार और सम्मान। इतने भर से तो वह जी लेती है अपनी जिंदगी जी भरकर। बिना दहेज के विवाह पर भाषण देने और बिना दहेज के विवाह करने में जमीन आसमान का अंतर होता है। भाषण देने के लिए नैतिक साहस की जरूरत नहीं होती पर बिना दहेज के विवाह करने के लिए नैतिक साहस की बेहद जरूरत पड़ती है जो सबमें नहीं होता। यदि नैतिक साहस सबमें होता तो फिर दहेज के लिए किसी के घर नहीं उजाड़े जाते।

कुत्तों को चौक पर बिठाता समाज

पवारी बोली में एक कहावत है–कुत्ता ख चउक प बिठावय ते उ चउक चाटय। पवार यह भलीभांति जानते हुए भी सालों से कुत्तों को ही चउक पर बिठाते आ रहे हैं। और पवार शिकायत करते आ रहे हैं कि हमारा चउक चाट लिया गया। अरे भाई, कुत्तों का स्वभाव ही होता है चउक चाटना तो वे चाटेंगे ही। फिर पवारों में चउक आटे का डाला जाता है न। रांगोली का डाला जाता तो वह बच भी जाता। जहॉ खाने को परोसा गया हो तो खाया तो उसे ही जाएगा न, जो परोसा गया है। इसमें कुत्ते की गलती कहीं भी नहीं है। गलती तो हमारी है कि हमने कुत्ते को चउक पर बिठाया। चउक पर दूल्हे को बिठाया जाता है, दुल्हन को बिठाया जाता है, देवी देवताओं को बिठाया जाता है या फिर पितरो को बिठाया जाता है। इन सबको छोड़कर क्या पड़ी थी भैया कुत्तों को बिठाने की। जब बिठा ही दिया तो अब रोना कैसा और किसलिए। इसलिए कि चउक चाट लिया ? आटा ही तो था न। कोई 56 भोग तो रखे नहीं थे। बेचारे कुत्ते ने चउक क्या चाट लिया मानों पूरा जहॉन ही चाट लिया हो। चिमटी भर आटा ही तो था न। उसके जाने का इतना बड़ा दुख। चिमटी भर आटा ही तो था। कोई कोठी और मेंदरी तो चट नहीं कर दी है जो इतना रोना रो रहे हो। आटा ही चाटा है कुत्ता जो ठहरा। भला हो उस कुत्ते का जिसने चउक ही चाटा, नहीं तो कुछ और चाट जाता तो उसे रोकने वाला कौन था ? सबेरे–सबेरे गॉव के गोठ्यान तरफ झॉक कर देख लो, कुत्ते क्या–क्या चाटते मिल जायेंगें। गॉव में सुअर न हो तो गॉव की गंदगी बेचारे कुत्तों के हिस्से ही तो आती है। फिर उन कुत्तों ने तो अपने बेटे–बेटियों की जिंदगी चट कर डाली और आप चउक का रोना रो रहे हो, आटे का रोना रो रहे हो।

हमने बचपन में मिट्ठू तोते की कहानी पढ़ी थी। वे बोलते हैं–शिकारी आता है, चुग्गा डालता है, जाल फैलाता है, उसके झॉसे में

मत आना। सालों से शिकारी आ रहे हैं, जाल फैला रहे हैं, चुग्गा डाल रहे हैं और मिट्ठू तोते फॅसते आ रहे हैं और जाल में फॅसे–फॅसे भी मिट्ठू तोते गाते जा रहे हैं–शिकारी आता है, चुग्गा डालता है, जाल फैलाता है, उसके झॉसे में मत आना। मिट्ठू तोते की तरह रट लेने भर से काम नहीं चलेगा। उस पर जीवन में अमल भी करना पड़ेगा। हम रट रहे हैं और उगल रहे हैं। जीवन में न रटने का अर्थ है, न उगलने का। वास्तविक जीवन में जब तक उसका उपयोग नहीं किया जाता तब तक उसकी कोई उपयोगिता नहीं। सब व्यर्थ है। चउक देवी देवताओं को बिठाने के लिए पूरा जाता है, कुत्तों को बिठाने के लिए नहीं। देवी देवताओं को न बिठा सके तो मेहमानों को बिठाओ, उनके जैसे इंसानों को बिठाओ। कम से कम कुत्तों को तो मत बिठाओ कि वे चउक चाटते रहे और हमारी सारी ऊर्जा चउक डालते रहने और चउक चाट डालने पर रोना रोते रहने में ही जाया होती रहें। चउक डालने के बाद भी बहुत से काम है। पूजा–अर्चना करना है, आरती करना है, प्रसाद वितरित करना है। पर यहॉ चउक से फुर्सत तो मिले, यहॉ तो हाथ से आटा ही नहीं छूट पा रहा है। चउक डाला न डाला कि कुत्ते ने चट कर डाला। ऐसे में कैसे करें पूजा अर्चना, आरती और प्रसाद वितरण। यहॉ तक तो पहुॅच ही नहीं पा रहे है। और यहॉ तक पहुॅच पाना भी मुश्किल ही है। क्योंकि कुत्तों को जब तक चउक पर बिठाया जाता रहेगा तब तक चउक चाटा जाता ही रहेगा। हमें चउक पर किसी और को बिठाने का प्रबंध करना होगा, अन्यथा हमारी यह कहावत ऐसी ही युगों तक कही जाती रहेगी।

किसी और को चउक पर बिठाने के पूर्व उसके गुण धर्म भी जानना जरूरी है। अन्यथा फिर कोई कहावत चल पड़ेगी। बछड़ा छोटा होता है तब तक दूध पीता है और बड़ा होते ही चढ़ने दौड़ता है। सॉप दॉत टूटने पर जहर उगलना छोड़ देता है पर इंसान दॉत टूटने पर भी जहर उगलना नहीं छोड़ता। बच्चा दो साल में बोलना सीख जाता है पर कब क्या बोलना है यह सीखने के लिए इंसान को पूरी जिंदगी भी कम

पड़ जाती है। सॉप अपनी केचुली जरा में उतार देता है पर इंसान अपनी केचुली उतारने को कभी तैयार नहीं होता। कौओं को हंस और कोयल दोनों पसंद नहीं होते। जब तक कौए रहेंगे तब तक हंस और कोयल सदैव उपेक्षित रहेंगे। नाथ दो तो सांड भी नीची गर्दन करके रहने लगता है और कूट दो तो चढ़ने लायक नहीं रह जाता। सांड का उपयोग तभी किया जा सकता है जब उसे नाथा व कूटा जाए। बिना नाथे और कूटे वह किसी काम का नहीं। चउक पर अब किसको बिठाना है ताकि वह चाटा न जा सके इसका फैसला अब आपको करना है। कुछ के गुण धर्म तो अब आप जान ही गए हैं कुछ के और जान लीजिए। इसके लिए आपको थोड़ी मेहनत मशक्कत करनी पड़ेगी। वरना आ रे बड़ा मुॅह में पड़ा जैसी कहावत फिर चल पड़ेगी। समय के साथ कहावतें बदलती जाती है और नई कहावतें आकार लेते रहती हैं।जो समाज अपनी नई कहावत गढ़ने का सामर्थ्य रखता है वही समाज समय के साथ चलने में समर्थ हो पाता है, अन्यथा वह पिछड़ जाता है। आशा है, समाज नई कहावत गढ़ने का साहस जरूर करेगा।

सुविधा नहीं संघर्ष में पलते पवार

बगीचे में पौधे रोपे जाते हैं उनकी परवरिश की जाती है, देखरेख की जाती है। समय –समय पर खाद पानी दिया जाता है। निंदाई–गुड़ाई की जाती है। कॉटा–छॉटा जाता है। पौधे पनपते हैं, पर उन्हें माली की दरकार होती है। बगीचे में सुविधा है। जंगल में पौधे अपने आप उगते हैं। अपने आप बढ़ते हैं। यहॉ जीवन के लिए सतत् संघर्ष है। सुविधाओं का सर्वत्र अभाव है। जंगल में अभाव में भाव पैदा करना होता है। जंगल में दुविधा है। दुख–दर्द है। यहॉ पौधा स्वयं संघर्ष करता है और पनपता है। बिना संघर्ष के पौधे का पनपना संभव नहीं। यहॉ बिना माली के ही पोधों को पनपना होता है। बगीचे में साल, सागौन, बबूल नहीं होते। बगीचे में गुलाब, कनेर, गुलदाउदी, चंपा, गेंदा, चमेली होते हैं। जंगल में शक्तिशाली जीता है, कमजोर मर जाता है। कमजोर को बगीचा चाहिए, माली चाहिए, खाद–पानी चाहिए। शक्तिशाली को इनकी दरकार नहीं होती। वह स्वयं संघर्ष करता है, पनपता है, बढ़ता है, शक्तिशाली होता है और जीता है।

जितने कष्ट कंटकों में हैं जिनका जीवन सुमन खिला,
गौरव गंध उन्हें उतना ही यत्र तत्र सर्वत्र मिला।

जीवन में कष्ट जरूरी है। कष्ट के बिना जीवन खिल नहीं पाता, पूर्णता नहीं ला पाता। संघर्षों से प्राप्त उपलब्धि ज्यादा महान और मीठी होती है। तभी तो कहते हैं, फूल काटों में खिला था सेज पर मुरझा गया। फूलों के लिए सेज नहीं कॉटे चाहिए।

वही समाज उन्नति करता है जिसके सदस्य परस्पर एक दूसरे को सम्मान करते हैं और एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना रखते हैं। जहॉ छोटों द्वारा बड़ों की बात नहीं मानी जाती वहॉ केवल बड़ों का ही असम्मान नहीं होता, अनुभवों और ज्ञान का भी असम्मान होता है। जहॉ प्रतिभा का सम्मान नहीं किया जाता वहॉ कभी राजा भोज और विक्रम हो ही नहीं सकते। प्रतिभा का सम्मान करके ही राजा भोज और विक्रम के अनुयायी बना जा सकता है और समाज को नई दिशा और दशा प्रदान की जा सकती है। जब–जब प्रतिभा का असम्मान हुआ है तब–तब समाज को रावण और हिरण्यकश्यप के अंहकार का शिकार होना पड़ता है।

दूसरे की लकीर को छोटा करके बड़े बनने का भ्रम पालते पवार

जब हम बड़ी लकीर नहीं खींच पाते तो सामने वाले की लकीर को मिटाकर अपनी लकीर बड़ी करने में विश्वास करने लगते हैं और ऐसा ही करते रहते है। जिस किसी भी समाज में प्रतिभा का उचित सम्मान नहीं किया जाता है वहाँ प्रतिभाओं का अकाल पड़ जाता है। हमारे इस स्वभाव के कारण हम स्वयं भी कुछ सीखने के स्थान पर अपनी सारी ऊर्जा प्रतिभा को कैसे नुकसान पहुँचाये ऐसा सोचने और नुकसान पहुँचाने में व्यर्थ करते रहते हैं। इस तरह पूरा समाज ही प्रतिभा विरोधी बनकर रह जाता है। हम अपने स्वयं के बच्चों को किसी प्रतिभा से कुछ सीखने देने की बजाय उसकी प्रतिभा से ईर्ष्या द्वेष करना सिखाते हैं। यही कारण है हमार अपना बच्चा भी वह मुकाम हासिल नहीं कर पाता जो उसकी उम्र के अन्य बच्चे कर लेते हैं। इतिहास गवाह है, विभीषण का सम्मान न करके रावण अपना और अपने समाज का हित न कर सका। प्रहलाद का सम्मान न करके हिरण्यकश्यप अपना और समाज का हित न कर सका। फिर भी हम प्रतिभा का सम्मान करना नहीं सीख पाए।आज भी हमारे लिए प्रतिभा को पचा पाना संभव नहीं होता है। इसमें हमारा अंहकार सबसे बड़ा बाधक होता है। हम अपने से बड़े को कभी पद प्रतिष्ठा में बढ़कर देखना पसंद नहीं करते। हमारा स्वभाव ही आगे चलकर हमारा आचरण बन जाता है और हम अपने आसपास हमसे कम गुणी या कमतर व्यक्तियों की भीड़ जमा करना शुरू कर देते हैं ताकि उनके बीच हम चमकते रहें, वे हमारी जय जयकार करते रहें और हम अंधों में काना राजा कहलाते रहे। हम कभी भी अच्छों में राजा बनने का प्रयास करने में विश्वास नहीं करते क्योंकि हम जानते हैं अच्छा बनने में लम्बी यात्रा से गुजरना पड़ता है और उसके लिए जिस धैर्य और साहस की जरूरत होती है उसका हममें नितांत अभाव होता है।

कृषि का पहला नियम है बीज उपयुक्त हो तभी अच्छी फसल खेतों में उतर पाती है। हम खेती से जुड़े रहने और उसकी नस–नस से वाकिफ होने के बावजूद बीज चुनने में सदैव सावधानी नहीं रख पाते और हर साल अपनी फसल कम होने का दुख उठाते रहते हैं। संगठन के पदों पर भी खेती के बीज की तरह ही अच्छे पदाधिकारियों को चुनने की जरूरत पड़ती है। संगठन के पदों पर कमतर चुनकर या हमसे कम गुणी रखकर उनसे अच्छे कामों की अपेक्षा करना वैसा ही है जैसे खराब बीज का चयन कर अच्छी फसल का ख्वाब देखना।समाज सबकी सम्पत्ति है वह किसी व्यक्ति विशेष की जागीर नहीं होती। जब समाज किसी व्यक्ति विशेष की जागीर बन जाती है तब समाज उन्नति और विकास के समस्त दरवाजे अपने हाथों स्वयं बंद कर लेता है। इसके लिए सरकार या और कोई उत्तरदायी नहीं होता अपितु हम स्वयं होते हैं। जो समाज इस तरह का खेल खेलते देख अपनी ऑखें बंद कर लेता है या अपने सदस्यों की इस साजिश को प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से समर्थन करता है वह समाज कभी भी समय के साथ चलने में सफल नहीं हो पाता है।

साहसी समाज के साहसहीन सदस्य

जो समय के साथ चलते हैं वो विकास की मंजिल पाते हैं। बोहरा समाज द्वारा समय के साथ चलने और फिजूलखर्ची रोकने हेतु समाज सदस्यों से निमंत्रण पत्र न छपाकर मोबाइल पर एसएमएस करने व भोज में विभिन्न प्रकार की मिठाइयों के स्थान पर केवल दो मिठाइयॉ रखने हेतु सर्व सम्मति से निर्णय लिया गया है। इस तरह के निर्णय लेने हेतु जिस तरह के साहस की जरूरत होती है उस तरह के साहस की प्रायः समाज संगठन के पदाधिकारियों में बेहद कमी होती है। आन्ध्रप्रदेश में शादी विवाह के निमंत्रण प्रकाशित कर वितरित करने हेतु घर–घर जाने के दिन लद गए है। निमंत्रण पत्र लेकर जाने के अपने खतरे भी थे जिसे भॉपकर ही वहॉ इस तरह के कदम उठाए गए हैं जिसकी सर्वत्र सराहना की गई है। वहॉ यह देखा जाता था कि निमंत्रण पत्र माता–पिता स्वयं लेकर आए हैं या अपने बेटों के हाथ भिजवा दिए गए हैं।निमंत्रण पत्र कैसे छपा है बड़ा या छोटा, किस रंग में छपा है,किस किस के नाम छपे हैं, इसकी लागत क्या होगी, निमंत्रण पत्र किस दिन लेकर आए हैं, किस समय लेकर आए हैं, किस हाथ से दिए गए हैं, घर के किस सदस्य को दिए गए हैं। अपने मन माफिक पाए जाने पर ही आन्ध्र के लोग शादी विवाह में जाना पसंद करते थे। इन सब संभावित खतरों से निजात पाने के लिए ही आन्ध्रप्रदेश में अब निमंत्रण पत्र प्रकाशित न करके संबंधितों को मोबाइल पर एसएमएस करने का प्रचलन बढ़ चला है। एसएमएस में भी केवल दिन, दिनॉक, स्थान, समय व कार्यक्रम का उद्देश्य लिखा होता है। आन्ध्रा में दिन में ही विवाह की अनुमति है। रात में बिजली की फिजुलखर्ची रोकने हेतु सरकार द्वारा उठाया गया यह कदम स्वागत योग्य है।

महाराष्ट्र में सामान्यतः दिन में ही शादी विवाह सम्पन्न कराने पर बल दिया जाता है। समय की बड़ी पाबंदी रखी जाती है। एक ही मेरिज गार्डन या मेरिज हॉल में एक–एक दिन में दो–दो तीन–तीन

शादियॉ सम्पन्न करा दी जाती है।सुबह 11 बजे विवाह है तो बारात 10:50 पर लग जाएगी और करेक्ट 11 बजे विवाह सम्पन्न। 12 बजे तक भोजन सम्पन्न, और 1 बजे से दूसरी शादी के लिए हॉल या गार्डन तैयार। समय का तालमेल इस कदर से किया जाता है कि निर्धारित समय में ही शादी सम्पन्न कराकर अगली शादी के लिए तत्काल उसे तैयार करा दिया जाता है। व्यवस्था देखकर ऐसा नहीं लगता कि यहॉ एक विवाह कार्यक्रम सम्पन्न हो चुका है।न बाराती, न घराती, न दूल्हा–दुल्हन। सब कुछ ऐसा साफसुथरा मानो इसी विवाह के लिए सब तैयारियॉ की जा रही हों। मुम्बई तो भागमभाग भरी जिंदगी के लिए जानी जाती है। मुम्बई में विवाह तो महज 1 घंटे की रस्म अदायगी बन कर रह गया है। विवाह के सम्पन्न होते ही वर–वधू को लिफाफा थमाओं और काउंटर से पैक भोजन का एक पैकेट व पीने के पानी का एक पाऊच थामों और आगे बढ़ो। आपको जहॉ खाना है खाओ गाड़ी में, दफ्तर में या सफर में। मुम्बई में गणेशजी भी 1 दिन से लेकर 10 दिन तक अपनी सुविधानुसार बिठाए जाते हैं। नौकरी पेशा होने व 10 दिनों तक आरती–सेवा संभव न हो पाने के कारण सामान्यतः 1 दिन बाद ही गणेशजी का विसर्जन वहॉ कर दिया जाता है। केवल सार्वजनिक स्थानों पर ही 10 दिनों तक गणेशजी विराजते हैं। धर्म का पालन भी अपनी सुविधानुसार करने का साहसपूर्ण निर्णय लेने वालों में मुम्बईकरों का जवाब नहीं है। साहसपूर्ण निर्णय लेकर ही मुम्बईकर समय के साथ अपनी जिदंगी जी पाने में सफल हो पाते हैं।

ठीक इसके इतर, पवार समाज के निमंत्रण पत्रों में पाणिग्रहण का समय सायं 6 बजे लिखा होता है तो प्रायः 12 बजे रात तक ही विवाह सम्पन्न हो पाता है। मेहमानों को रात 9 बजे वाले विवाह में पाणिग्रहण के लिए कम से कम 6 से लेकर 9 घंटे तक का इंतजार करना पड़ता है। कई बार लिफाफा देकर बिना कुछ खाए पिए लौटने को मजबूर होना पड़ता है। निमंत्रण पत्रों में छपाया जाता है स्वरूचि भोज आपके आगमन तक ऐसे ही पवारों के निमंत्रण पत्रों में अब यह छपाया जाना चाहिए कि

पाणिग्रहण का समय दुल्हे के आगमन पर। और यह भी छपाया जा सकता है कि पाणिग्रहण का समय दुल्हे के दोस्तों का नाच से पेट भरने पर। पवारों में निर्धारित समय पर विवाह सम्पन्न कराने का साहस नहीं रहा तो उन्हें अपने निमंत्रण पत्रों का स्वरूप उपर्युक्तानुसार बदलने का साहस दिखाना चाहिए ताकि लोगों को अपना समय, श्रम और पैसा बर्बाद करने से कुछ तो राहत मिल सकेगी। हर क्षेत्र में पिछड़े पवार शादी विवाह में भी समय से पिछड़कर अपने पिछड़ेपन को बनाए रखने का भरपूर प्रयास कर रहे हैं। पिछड़ा कभी अगड़ा नहीं हो सकता कम से कम पवार तो इसे ही परम सत्य मानकर पीढ़ी दर पीढ़ी पिछड़ने में ही अपनी शान समझ रहे हैं। कभी साहसी रहे पवार अब साहसहीन हो गए हैं। उनके अंदर का डर अभी भी निडर नहीं हो सका है। युगों बाद भी उनके व्यक्तित्व में अभी भी डर का साया मंडराते हुए साफ देखा जा सकता है।

वल्लभ डोंगरे

साहस के बिना तो शिव भी शव

महाभारत काल में भरी सभा में जब द्रौपदी का चीरहरण किया जा रहा था तब सभी सभासद मौन धारण किए हुए थे। उस समय के मौन ने महाभारत की नींव रखने में महती भूमिका निभाई थी। अपनों द्वारा किए जा रहे हर अनैतिक कार्यों का समय रहते विरोध न किए जाने से समस्या और भी बढ़ जाती है और समाधान के लिए केवल एक ही रास्ता शेष रह जाता है और वह होता है युद्ध। युद्ध की स्थिति तक पहुँचना कोई गौरव की बात नहीं अपितु नासमझी और नालायकी की बात होती है। यदि समय रहते प्रयास किए जाते तो संभव था कि समस्या इतनी बढ़ ही नहीं पाती और शांतिपूर्वक ढंग से बिना किसी हिंसा के ही समस्या का समाधान हो जाता। पर लगता है, इतने सालों बाद भी महाभारत से हमने कुछ भी नहीं सीखा। मौन रहकर हम नर नहीं नपुंसक ज्यादा साबित होते हैं। अत्याचार, अनाचार के विरूद्ध जब व्यक्ति आवाज उठाने में असमर्थ होता है तो वह समाज व देश के लिए कुछ कर पाने में समर्थ नहीं हो पाता। केवल तलवार रख लेने भर से क्षत्रिय नहीं हो जाते। क्षत्रिय होने के लिए दिल में क्षत्रिय जैसा जोश,जज्बा,जवानी और मर्दांगिनी चाहिए ताकि समाज में अनैतिक, अत्याचार और अनाचार को होने ही न दिया जाए। रोकने की बात तो बहुत बाद में आती है। क्षत्रिय के होते यदि समाज में वह सब कुछ होता रहे जो उचित नहीं है तो फिर ऐसे क्षत्रिय होने से न होना अच्छा है।

किसी समाज संगठन में 16 साल तक चुनाव न हो और बिना किसी विरोध के समाज सदस्य तालियॉ ठोंकते रहे और उनकी हर हॉ में हॉ मिलाते रहे तो यह क्षत्रियपन नहीं हमारा निकम्मापन ज्यादा है। निकम्मे होकर जीना जीना नहीं, हिम्मत के साथ जीना जीना है। 16 साल के निकम्मेपन ने समाज का जो अहित किया उसे कभी पूरा नहीं किया जा सकता। इसी समाज संगठन द्वारा एक समय अपने बरोजगार सदस्यों को रोजगार हेतु दुकान व पर्याप्त पैसे की व्यवस्था कराई गई

है। इसी समाज संगठन द्वारा एक समय अपनी विधवा समाज सदस्या को एक घर लेकर दिया गया है ताकि वह शेष जीवन सम्मान के साथ व्यतीत कर सके। पर ऐसे सदस्यों को कभी समाज संगठन में सम्मानजनक ढंग से आमंत्रित नहीं किया गया न ही उनसे कभी विचार विमर्श कर उनके अनुभवों का लाभ लेने का प्रयास ही किया गया। जिस संगठन में अपने योग्य सदस्यों के अनुभवों से कुछ सीखा न जाए तो ऐसा संगठन समय के साथ चल पाने में समर्थ नहीं हो पाता।

मॉ द्वारा अपने बेटे को एक मामूली सी सुई की चोरी करने से रोक दिया जाए तो उसके अंदर का चोर मर जाता है। परंतु चोरी रोकने के स्थान पर मॉ के मन का यह भाव कि एक सुई ही तो है बच्चे को चोर बनने की ओर अग्रसर कर देता है। बच्चा जब सुई से और बड़ी बड़ी चीजें चुराना शुरू करता है तो उसमें उस बच्चे की मौं का स्वार्थ भी शामिल होता है। एक तरह से बच्चे के चोर बनने में मॉ का भी पूरा हाथ होता है। इसी तरह किसी संगठन द्वारा 16 साल तक असंवैधानिक रूप से अपने को सर्वेसर्वा मानकर समाज के साथ जो छल किया जाता रहा उसमें केवल चुनिंदा पदाधिकारी ही उत्तरदायी नहीं है अपितु उस संगठन से जुड़ा प्रत्येक सदस्य भी इसके लिए उतना ही उत्तरदायी है। समय रहते समाज सदस्यों द्वारा आवाज न उठाने से उन चुनिंदा पदाधिकारियों का मनोबल बढ़ता चला गया और वह सब होता चला गया जो नहीं होना चाहिए था। यदि समय रहते समाज सदस्यों द्वारा विरोध किया जाता तो उनको शह नहीं मिलती और समाज को 16 साल का अविकास और अवनति का दुख नहीं झेलना पड़ता। यदि संगठन के चार पदाधिकारी 400 से ज्यादा परिवारों की ऑखों में धूल झोंकने में सफल हो जाए तो 400 परिवारों की तो यह विफलता ही कहलाएगी। थोड़ी देर के लिए इसे विफलता न भी मानें तो भी यह हमारा निकम्मापन, हमारी निष्क्रियता ही तो कहलाएगी। यदि एक व्यक्ति उचित नहीं कर रहा है तो शेष समाज सदस्यों में उसे अनुचित ठहराने का साहस भी तो होना चाहिए। यदि यह साहस नहीं है तो वह समाज कभी विकास

नहीं कर सकता। समाज सदस्यों द्वारा साहस न दिखा पाने के कारण ही चंद स्वार्थी तत्व साहस दिखाने लगते हैं और उस साहस से वे वह सब कर पाने में सफल हो जाते हैं जो किसी भी समाज के लिए उचित नहीं कहा जा सकता । साहसहीन सदस्य किसी भी युग में अपने समाज को कुछ ऐसा दे पाने में कभी भी सफल नहीं हो पाते जिसपर आने वाली पीढ़ियॉ गर्व कर सकें। जीवन हो या समाज दोनों में साहस के बल पर ही उन्नति और विकास संभव है। साहसहीन उस शव की तरह होते हैं जिन्हें पानी की धारा मनचाहे दिशा में बहा ले जाती है। साहस के बिना तो शिव भी शव ही है। जीवन में कुछ सार्थक करने और बनने के लिए शव नहीं शिव बनना पड़ता है। और शिव बनकर ही समाज की सार्थक और सच्ची सेवा संभव है।

पापा पापा पाटकड़ी

पापा पापा पाटकड़ी
देखो देखो खाट खड़ी

गिनती पढ़ी, अक्षर पढ़या
अऊर पढ़ी खूब बाराखड़ी
जोड़ लगायो,भाग कर्‌यो
गुणा कर्‌यो ते मार पड़ी।

पापा पापा पाटकड़ी
देखो देखो खाट खड़ी।

गुरजी बोल्यो मुरगा बन्जा
तोरी पढाई हय खोटी
पक्का पहाड़ा याद कर्‌या बिन
खाजो मत तू रोटी।
लगा दबकड़ी भागण लाग्यो
ओन लगादी टंगड़ी।
चारों खाना चित्त पड़ गयो
टूट गई दतकड़ी।

पापा पापा पाटकड़ी
देखो देखो खाट खड़ी।

गोर गड़ी भई गोर गड़ी

गोर गड़ी भई गोर गड़ी
सासू छोटी बहु बड़ी।
गोर गड़ी..........
झाडू पोछा सासू करी
देखे बहु खड़ी–खड़ी।
गोर गड़ी............
इधर काम सासू का हुआ
उधर काम ले बहु खड़ी।
गोर गड़ी...........
जिस दिन सासू खाट पड़ी
उस दिन बहु खूब लड़ी।
गोर गड़ी............
पानी लेने सासू चली
लड्डू खाते बहु खड़ी।
गोर गड़ी.............
बाप न ज्यादा तीसरी पेढ़ी
घोड़ा प बठी ते घिसर पड़ी।
गोर गड़ी................
सासू का सौसार गया
बहु बड़ी की शान बड़ी।
गोर गड़ी.........................

ए ख् तुम नंदानूँ

तुमी जवाई अवल आ गया, चिन्धी ख् ले जानूँ,
मरो सुखवाड़ा भी समधिन ख्, जा ख् तुम्न बतानूँ।
नौ–नौ बजे यहाँ उठत रह्ये,तुम्न धान दरानूँ,
कोदो कुटकी फटकानूँ ए सी, चाऊर भी कुटानूँ।
रोज खेत म ए ख भेजनूँ,सारो काम करानूँ,
नींदनो–काटनो सी ले ख् बोझा भी ए सी उठानूँ।
गधा साई रोज रबानूँ,हाथी साई खिलानूँ,
नखर्‌या यदि कर्‌हे या ते,खूब कान खिचनूँ।
स्नो पावडर ए न खूब लगाया,गोबर ए सी करानूँ,
पाव भर तेल माथा म् डालय,खाली बाल बिचरानूँ।
मेटरिक पास करी हय ए न, मन म् मत तुम लानूँ,
शाम सबेरे घर का बर्तन ए सी खूब मंजानूँ।
नाम चिन्धी पन चतरी हय,एका चक्कर म् मत आनूँ,
लाड़ प्यार म् या बिगड़ी हय,ए ख् लाड़ नी लगानूँ।
डोरा दिखावत रह्यनूँ ए ख्, मुंढा सी नी लगानूँ,
एत्ता प भी नी सुधरे ते, ज्यू चाहे त्यू करनूँ।
बेटी हम्न दे दी तुम्ख,ए ख् तुम्न नंदानूँ,
हमरी इज्जत तुमरा हाथ हय,तुम्न ए ख् बचानूँ।
हाट बजार म् मिलय जसा कुई,राम रूमाई करनूँ,
अच्छा भला की खबर मात,उन्का ज घ् भिजानूँ।

बनन चल्या तुम लाड़ा

बनन चल्या तुम लाड़ा, भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
बीस बरस की उमर तुम्हारी,चाबत फिरय पान सुपारी
नांगर की मुट्ठी नी पकड़ी, कर्‌यो नी बिक्रा भाड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
सूट–बूट अउर कोट पैह्‌रयो,बांधी तुम्न एक टाई,
डोरा म काजर डाल्यो,शकल बंदर सी बनाई
बाटा का जूता पैह्‌रया,मौजा म बांध्यो नाड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
घर्‌म नी अन्न को दाना,फिर भी जीप कराई
उधारी म गैह्ना ले गया,वीडियो शूटिंग कराई
बड़ा–बड़ा हैरत म् पड़ गया,रह्य ख् थाड़ा–थाड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
गॉव–गॉव ढूँढी लाड़ी,टीका म् लाई एक साड़ी
पंगत भी निपटा दी तुम्न, दे ख् बेसन कढ़ी
शादी का दूसरा दिन सी, लटकाहे तुम चीथड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
बाल बढ्या हय हिप्पी साई,दाढ़ी बकरा सी बढ़ाई
पोर्‌या–पारी सा तमाशा देखय,तुम्ख शरम नी आई
मुंढा प् पानी नी जर्सो,डोरा म हय चीपड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
ससरा जू कोट सिलाहे,जिनगी भर ओ ख् चलाहे
सिला सक्हे नी एक कोट तुम कर्‌ख एत्ती कमाई
चड्डी म् अटकाहे करदोड़ा,डाल सक्हे नी नाड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।
नांगर का हकल्हे तुम, तुमसी संभलत नी आय चाड़ा
दूसरा को तमाशा देखय, रह्य ख् तुम्ते थाड़ा
लाड़ी आ जाहे घर्‌म,तुम्ख कुई नी सुदाड़ा।
बनन चल्या तुम लाड़ा,भइया बनन चल्या तुम लाड़ा।

बाकी सब ठीक–ठाक हय

छपरी की दीवार धंस गई,बाकी सब ठीक–ठाक हय
खेत म् की झोपड़ी बठ गई,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
बांडा बइल मर गयो, डूंडा ख् बेच दियो, आब,
खेत म् फजीता हो गयो,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
डुंगी म सेंगा बुई हय,डोभरी म अवंदा मक्या हय,
इत पानी नी आवत आय,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
बड़ो भाई गॉव म् घूमय,छोटो खेत म् नी जात
पोर्‍या–पोरी कह्यना नी सुनत,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
बेटा–बहू रोटी नी देत,भूरी काकी कव्हत रह्ये,
मरा जघ् अक्खन रूवय, बाकी सब ठीक–ठाक हय।
अच्छो कुई पोर्‍या होये ते, तुरजी साठी देक्खजो,
सारजी कुई संग भाग गई,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
बुवाड्या भाऊ चुनाव हार गयो,घर–खेत बिक गया,
आब ठेका–बटाई करय हय,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
पोहर सी पाव्हना आया था,तोरा ब्याहाव साठी,
पोरी लिखी–पढ़ी हय, बाकी सब ठीक–ठाक हय।
बटनी को ससरा आयो थो,दायजा म फटफटी मॉगय,
ओकी सासू भी अड़ गई,बाकी सब ठीक–ठाक हय।
तोरो भाऊ रात भर खासय,कभी–कभी उलटी सांस चलय,
मरी कम्मर अक्खन सिलकय, बाकी सब ठीक–ठाक हय।
तोरो काकू रोज धूरा सरकावय,बाट सी आवन–जान नी देत,
एक दिन अक्खन लड़ाई भई, बाकी सब ठीक–ठाक हय।
पोर्‍या हन सब स्कूल जाय हय,मास्टर न कल भगा दिया,
मास्टर कव्हत रहे फीस नी दी, बाकी सब ठीक–ठाक हय।
पोरा का दिन लाठी चल गई,नान्हा को माथा फूट गयो,
किसना जेल म् बंद हय, बाकी सब ठीक–ठाक हय।
कारी की छोड़–चिट्ठी हो गई,साल भर नी भया बिहा ख,
रांड अक्खन रूवय दिन भर, बाकी सब ठीक–ठाक हय।

शादी कर दी गॉव म्

एत्ती पढ़ा–लिखा ख् माय तो न शादी कर दी गॉव म्
रोज सबेरे उठनॅू पड़य,दरना दरनूं पड़य गॉव म्।
जेठ–जिठानी ताना मारय,खूब रबावय काम म्
शाम ख भी सुस्तान नी देत,चूल्हा फुकॅू मू गॉव म्
सासू–ससरा अनदेखी कर देय,रबता देख म ख् काम म्
जेठ–जिठानी का आघ् वी मुंढा नी खोलत गॉव म्
दुबली–पतली काया मरी,पेन पकडया म न् हाथ म्
दातरा,गैती ,फावड़ा बिना आब, काम नी चलत गॉव म्
गोबर–पानी,सराय पोताय,सब मरा जुम्मा म्
कलेवा म जरा देर हो जाय ते, सब भोभाय गॉव म्
कपड़ लत्ता धोनो धानो,लकड़ी फाटा गॉव म्
सांझ–सबेरे चौका बर्तन म् फॅसी जिनगी गॉव म्
इ ते एत्ता भोरा हय कि दिखात नी इनका डोरा म्
जेठ–जिठानी लोंदा तोड़य मू एख्ली रबॅू गॉव म्
मरी जिनगी खराब कर दी, दे ख माय तो न् गॉव म्
पढनो–लिखनो अकारथ गयो,आ ख एना गॉव म्
आब नान्ही को बिहा कर्‍हे ते, झॉक ख नी देखनूं गॉव म्
शहर को गरीब ख देनॅू,पर अमीर ख नी देनॅू गॉव म्।

"सीखो सबक पवारों"
के प्रकाशन अवसर पर
पवार समाज संगठन, बैतूल
की हार्दिक शुभकामनाएं
संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, बैतूल
मो. 9406932254

"सीखो सबक पवारों"
के प्रकाशन अवसर पर
पवार समाज संगठन मुलताई
की हार्दिक शुभकामनाएं
संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,
मुलताई जिला बैतूल

"सीखो सबक पवारों"
के प्रकाशन अवसर पर
मॉ कामाख्या देवी मंदिर, डहुआ
की हार्दिक शुभकामनाएं
संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,डहुआ
मो. 9425440485

"सीखो सबक पवारों"
के प्रकाशन अवसर पर
पवार समाज संगठन महू,इंदौर
की हार्दिक शुभकामनाएं
संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, महू,इंदौर
मो. 9993570907

"सीखो सबक पवारों"
के प्रकाशन अवसर पर
पवार समाज संगठन बोरगॉव
की हार्दिक शुभकामनाएं
संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,बोरगॉव,सौसर
मो .8357031055

"सीखो सबक पवारों"
के प्रकाशन अवसर पर
पवार समाज संगठन पाथाखेड़ा
की हार्दिक शुभकामनाएं
संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,पाथाखेड़ा,सारनी
मो. 9826717459

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन पाथाखेड़ा

की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,पाथाखेड़ा,सारनी

मो. 9826717459

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन जबलपुर

की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,जबलपुर

मो. 9424309379

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन भिलाई,दुर्ग

की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, भिलाई,दुर्ग

मो. 9993696844

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

रीमून हाटेल सदर,बैतूल

की हार्दिक शुभकामनाएं

डॉ राजू पवार

मो. 9425610043

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

देशमुख लॉज, मुलताई

की हार्दिक शुभकामनाएं

प्रोपा.श्री रामचरण देशमुख श्री रामदास देशमुख

मोबा. 9425440554

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

जिला पंचायत ,बैतूल

की हार्दिक शुभकामनाएं

उपाध्यक्ष– राजा पवार, मोबा. 9425636965

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

अखिल भारतीय भोयर पवार समाज संगठन नागपुर की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, नागपुर

मो. 09766590877

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन छिंदवाड़ा की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, छिंदवाड़ा

मोबा.9827436055

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन सारनी की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, सारनी

मोबा. 9407282072

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

भोज विक्रम समिति, भोपाल की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक एवं समस्त सदस्य गण,भोपाल

मो .9425656588

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन होशंगाबाद की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण,होशंगाबाद

मो.9165868465

"सीखो सबक पवारों"

के प्रकाशन अवसर पर

पवार समाज संगठन आमला की हार्दिक शुभकामनाएं

संरक्षक, अध्यक्ष एवं समस्त सदस्य गण, आमला

पवार समाज संगठन, पांढुरना

पदाधिकारीगण

द्वारा प्रकाशन पर शुभकामनाएँ

श्री-बालचंदजी-देशमुख
अध्यक्ष
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-हिरालालजी-पराडकर
उपाध्यक्ष
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-शंकरलालजी-चोपडे
उपाध्यक्ष
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-चैनलालजी-डिगरसे
सचिव
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-सम्भाजी-कडवे
सहसचिव
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-संतोषराव-कौशिक
कोषाध्यक्ष
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-सुधाकरजी-लाडके
सदस्य
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-जनकलाल-बुवाडे
सदस्य
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-प्रेमलालजी-चौधरी
सदस्य
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-यशवंतराव-बारंगे
सदस्य
पवार स. सं. पांढुरना

श्री-देवीलालजी-पराडकर
सदस्य
पवार स. सं. पांढुरना

शिक्षक-शक्ति पवार स्व-सहायता समूह, पांढुरणा

द्वारा प्रकाशन पर हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री शंकरलाल धारपुरे
अध्यक्ष
रानी दुर्गावती वार्ड, पांढुरना

श्री रमेश किनकर
सचिव
शंकर नगर, पांढुरना

श्री नारायण कालभुत
कोषाध्यक्ष
शंकर नगर, पांढुरना

श्री शामराव देशमुख
सदस्य
रानी दुर्गावती वार्ड, पांढुरना

श्री साहेबराव खवड़े
सदस्य
शंकर नगर, पांढुरना

श्री रमेश धारपुरे
सदस्य
जलाराम वार्ड, पांढुरना

श्री रामदास बारंगे
सदस्य
शंकर नगर, पांढुरना

श्री सुभाष डोबले
सदस्य
संतोषी माता वार्ड, पांढुरना

श्री देवराव कालभुत
सदस्य
जलाराम वार्ड, पांढुरना

श्री रमेश पराडकर
सदस्य
रानी दुर्गावती वार्ड, पांढुरना

श्री रमेश चौधरी
सदस्य
पारडी, तह. पांढुरना

श्री रामकृष्णा डिगरसे
सदस्य
शंकर नगर, पांढुरना

श्री रतनलाल खवसे
सदस्य
संतोषी माता वार्ड, पांढुरना

श्री सुभाष गोहटे
सदस्य
शंकर नगर, पांढुरना

श्री गणेश धारपुरे
सदस्य
संतोषी माता वार्ड, पांढुरना

श्री तुकाराम किनकर
सदस्य
संतोषी माता वार्ड, पांढुरना

श्री रामदास पाठे
सदस्य
रानी दुर्गावती वार्ड, पांढुरना

श्री हरिराम घागरे
सदस्य
संतोषी माता वार्ड, पांढुरना

श्री अशोक पराडकर
सदस्य
रानी दुर्गावती वार्ड, पांढुरना

श्री दशरथ चौधरी
सदस्य
पांढुरना